16667

श्री प्रेमलतायै नमः

* श्री *

* सतगुरु कृपाप्रकाश ग्रन्थान्तर

# सार सिद्धान्त प्रकाश ।

## * कुण्डलिया *

जिसको
जयसियराम जयजय सियराम नाम प्रचारक
श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८
श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम
'श्री प्रेमलता जु' ने निर्माण किया ।

इसीको
**सियारघुनाथ शरण ने लिखकर**

महेश प्रसाद द्वारा—
सत्यनाम प्रेस; मैदागिन, बनारस सिटी में
छपवाकर प्रकाशित किया ।

सम्वत १९८५

181/2 8

श्री प्रेमलतायै नमः

गोरखपुर

श्री

* सतगुरु कृपाप्रकाश ग्रन्थान्तर *

# सार सिद्धान्त प्रकाश ।

## कुण्डलिया

जिसको
जयसियराम जयजय सियराम नाम प्रचारक
श्री बैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८
श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम
'श्री प्रेमलता जू' ने निर्माण किया ।

उसीको
**सियारघुनाथ शरण ने लिखकर**

महेश प्रसाद द्वारा—
सत्यनाम प्रेस; मैदागिन, बनारस सिटी में
छपवाकर प्रकाशित किया ।

सम्बत् १९८५

# भूमिका।

विदित हो कि यह सारसिद्धान्तप्रकाश, नामक ग्रंथ श्री सर्वेश्वर प्रभु श्री साकेताधीश श्री सीताराम जीकी असीम दया से जीवन के हितार्थ ग्रंथकार द्वारा प्रगट भया है, मुझे पूरा विश्वास है, कि मेरे तथा सर्व जीवनि के हितार्थी सन्त सज्जन इस ग्रन्थ को आदि अन्त सब प्रकार समझि बूझि, जो अनुचित लेख हो, उसे सुधार लेवेंगे, सुनने में आता है कि राजा भोज ऐसे बिद्वान कवि ऐश्वर्य मान होने पर भीं कैसी कैसी एढ़ीं टेढ़ीं कविताइयोंको कैसा आदर देते रहे, तिस्का फलभी उन्हें वैसाही मिलता रहा, बात विदित है, आज कल के लोगों की विलकुल, प्रभु प्रेरित वानी में भी, सिवाय दोष देखने के, गुणों पर दृष्टि ही नहीं जाती? बड़े शोक की बात है? इन ग्रन्थकार जूके प्रणीत ग्रन्थ-यथा-बृहत् उपासना रहस्य, उपासना पंचरत्न' प्रेमलता पदावली' श्री जानकी जन्मस्तुति, प्रेमलता बाराखरी, श्री जानकी बधाई, श्री नामरहस्य त्रय प्रसंग, श्री गुरुमहिमा, श्री सीताराम शनेह षोडसी, श्री नामजापक महत्व, यह सार सिद्धान्त प्रकाशादि, ग्रन्थकार के प्रिय शिष्य बर्गों ने निज २ द्रव्य व्यय कर प्रभु भक्तों के हितार्थ छपाकर ग्रन्थकार जीकी आज्ञानुकूल विना मूल्य देश विदेशी प्रभु के कृपा पात्रों को समर्पण किये हैं, जो कि काशी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, पटना, कलकत्ता, वृन्दावन, नैमिसार, इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ आदि बड़े बड़े सैकरों सहरों तथा ग्रामों में प्रचार है, बड़े बड़े विद्वान उपासक वैष्णव, सैव, शाक्त, आर्यसमाजी, राधास्वामि आदि—कई एक मजहवी लोग हार्दिक प्रसंशा के साथ ग्रन्थों का आदर करि रहे हैं' बराबर दूर दूर देशों से माग आ रही है, कितने कुतर्की भाई उन भगवत सम्बन्धी ग्रन्थों का सुद्ध सार छोड़ कर खोट रूपी छिलका खोजा करते हैं, जिनकी कृपा रूप समालोचना से जो कुछ त्रूटी रहि जाती हैं, सो सब सुधरती जाती हैं, उन भाइयों से प्रार्थना है कि वे अपना काम करते जाँय—

### कुण्डलिया

वानी सुखसानी महा पढ़ि जन होत निहाल। जो अभिमानी दंभरत

तिन्है लगति जनु व्याल ॥ तिन्है लगति जनु व्याल भाल नहिं भक्ति समानी। करिहैं वही कुतर्क प्रिय न जिन्हिं सारँग पानी ॥ सार तत्व उपदेश विमल नामामृत खानी ॥ मधुरलता अमि कोटि सरिस सुखदायक बानी ॥ १ ॥ रटिहैं नामै जौन नित छटिहैं जगत विकार। खान मान सब दूरि करि सो चटिहै रस प्यार ॥ सो चटिहै रस प्यार खार जो सबही केरा। द्वेष कपट इरषादि त्यागु अब भयो सबेरा। पढ़त ग्रन्थ यह सरस भाव भक्ती हिय सटिहै। मधुरलता दिनराति नेमते नाम सु रटिहै ॥ २ ॥ कटही लगति विचार बिनु बानी सब सुख खालि। अनुभव ज्ञान विवेक बिनु सकत न कोउ पहिचानि ॥ सकत न कोउ पहिचानि खानि रस में बिष देते। केवल हठ वश होइ विमुखता प्रभुकी लेते ॥ समुझैं कोउ सुचि सन्त दिवस निशि, नाम जो रटही। मधुरलता न विराम विरति तिन हित यह कटही ॥ ३ ॥ बालकहूँ बुधिहीन मैं उर न विवेक विचार। अनुचित शब्द न ध्यान विच लैहैं सन्त उदार ॥ लैहैं सन्त उदार सारमोहिं सर्व वतैहैं। भक्ती पथ निर विघन मोद युत मोहिं चलैहैं ॥ सब विधि लखि नादान होउ मम अघ कुल घालक। मधुरलतै प्रभु भक्ति देउ लखि के निज बालक ॥ ४ ॥

## मंजु छंद

शिद्ध भये हैं सिक्षा राम जपि सत सह ग्रन्थ बनाइ धरे।
या जग में रघुनन्दन जू को तत्व निगूढ़ प्रचार करे ॥
लाख लाख निज नाथ म प्रेमें लता पता से पेट भरे।
लखहु खोलि हिय नयन शरण मम सतगुरु रामानन्द भरे ॥१॥

* इति *

सब सन्त सज्जनों का कृपाकांक्षी—
**सतगुरु रामशरण 'मधुरलता'**
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम

जय सियराम नाम प्रचारक रसिक वर, वीतराग स्वच्छन्द जय सियराम

जय सियराम विचरहिं महि रटिनाम सुख, निशिदिन परमानन्द जय सियराम

ग्रन्थकर्त्ता—

**परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरण जी**

**महाराज उपनाम 'श्री प्रेमलता जी'**

जय सियराम जय जय सियराम

# सार सिद्धान्त प्रकाश

❀ श्री सत गुरवे नमः । श्री सियाराम नामाभ्यां नमः । श्री हनुमते नमः ❀

## अथ कुन्डलिया

सी के सुमिरण करत ही, ही के खुलत किवाँर ।
जी के जीवन राम जो, दरशैं परम उदार ॥
दरशैं परम उदार, मोह माया मद कर्षैं ।
सरसैं ज्ञान विराग, पाय प्रभुबल अति हर्षैं ॥
पुरहिं सु अभिमत काज, जीव सह बुद्धि सु ती के ।
प्रेमलता दुख दोष नशैं सब सुमिरत सी के ॥१॥
ता के सुमिरत सकल जग, मंगल मय सरसाय ।
नित नूतन सुख सुकृत उर परमानन्द दिखाय ॥
परमानन्द दिखाय जाय संशृति दुख दूरी ।
पावै जीव सु पीव बड़ाई तिहुँ पुर भूरी ॥
छावैं शुभ गुण विपुल तासु उर श्रम बिनु आके ।

प्रेमलता बड़ भाग होत नर सुमिरत ताके ॥ २ ॥
रा के सुमिरत झरत अघ, ज्यों तरुवर के पात ।
काल कुकर्म अधर्म कलि, विनु श्रम सकल सिरात ॥
विनु श्रम सकल सिरात जात जन प्रभु पर धामहिं ।
बिहरत जहँ सियराम सखिन सह सुख बशुयामहिं ॥
जन्म मरण भव ब्याधि नशै जिमि पियत सुधा के ।
प्रेमलता सुख अकथ होत उर सुमिरत रा के ॥ ३ ॥
मा के सुमिरत मोदउर, बढ़ै अनूप अपार ।
मायिक भोग विलाश सुख, सूझि परै बिनु सार ॥
सूझि परै विनु सार भार सम लागै देही ।
भावै मन वच कर्म सदा इक राम शनेही ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध चहत मुनि दरशन जाके ।
प्रेमलता बश होत प्रभू सोइ सुमिरत मा के ॥ ४ ॥
सीता बरु श्री सिय सिया, कहि जो उचरत राम ।
तेहि जनके वश होत प्रभु, सियवर सुन्दर श्याम ॥
सियवर सुन्दर श्याम धाम साकेत बिहारी ।
सुर नर मुनि जगदीश ब्रह्म परतम अवतारी ॥

जनक नन्दिनी हाथ बिके सोइ बिनु बित मीता ।
प्रेमलता निशि दिवस रटत आपहुँ सिय सीता ॥५॥
सीया बिनु नहिं द्रवत प्रभु, कबहूँ जन पर राम ।
रटै करोरनि जन्म बरु, सिय तजि राम सुनाम ॥
सिय तजि राम सु नाम कतहुँ विश्राम न पावै ।
आवै उर न सुबोध बयस बिनु ऐस नशावै ॥
भव निधि गोता खाय जरै निशि बासर जीया ।
प्रेमलता अस जानि भजहिं बुध प्रभुहिं ससीया ॥६॥
सीया बिनु जीया जरै, कीया जाय सु ब्यर्थ ।
भजन भावना योग जप, सिय बिनु सकल अनर्थ ॥
सिय बिनु सकल अनर्थ दुसह संश्रिति दुखदायक ॥
द्रवत न सिय बिनु कबहुँ परमपद प्रद रघुनायक ॥
सिय बिनु रटतौ नाम होत नहिं बिमल सु हीया ।
प्रेमलता अस जानि भजिय नित प्रभुहिं स सीया ॥७॥
सीया सिया सु सिय सिया, राम जपहिं ये नाम ।
इन्ह नामनि ते विमुख नर, सहहिं घोर भव घाम ॥
सहहिं घोर भव घाम याम बशु चैन न पावैं ।

सिय बिनु रटि रटि राम नाम जनु प्रभुहिं खिजावैं ॥
मन मुख तिन्ह कर भजन भाव नहिं गुरु सन लीया ।
प्रेमलता मति मन्द कहा जानै को सीया ॥ ८ ॥
सीया नाम सुरूप सिय, छवि शरीर सुख धाम ।
गुणमय मूरति सीय की, राम सु इष्ट ललाम ॥
राम सु इष्ट ललाम यामबशु सियहिं रिझावत ।
सिय सिय प्यारी सिया जानकी नाम सु गावत ॥
तजि न सकहिं पल एक सीय बिनु फाटत हीया ।
प्रेमलता मतिमन्द भजहिं तेहि बिनु श्री सीया ॥९॥
सीता मूरति रामकी, जीवन प्राण अधार ।
तजत न कहुँ जल मीन इव, सिय पर प्रेम अपार ॥
सिय पर प्रेम अपार करत सोइ जोइ रुख पावत ।
सेवत सियपद कञ्ज मधुप जिमि चित न डुलावत ॥
सिय छबि पावन सुधा अहर निशि मन पिक पीता ।
प्रेमलता मुख रटत नाम सिय सिय जू सीता ॥ १० ॥
सीता सिया बिहाय जो, भजत प्रभुहिं मतिमन्द ।
आदि मध्य परिणाम सो, सहत दुसह दुख द्वन्द ॥

सहत दुसह दुख द्वन्द फन्द परि माया केरे।
जाने बिनु यह भेद करत नर कष्ट घनेरे॥
मिटत न मन कर खेद रसिक गुरु बिनु यह नीता।
प्रेमलता अति अगम अघिनि कहँ पद श्री सीता॥११॥
रामहिं चाहै मिलन जो, तौ सिय पद हिय ध्याव।
लोक लाज तजि रसिक गुरु, करि जीवन फल पाव॥
करि जीवन फल पाव गाव गुण रसिकनि केरे।
जिन्हिं के वश श्रीराम रहत लखि सिय कर चेरे॥
रसिकनि बिनु सिय नाम रूप अति दुर्लभ बामहिं॥
प्रेमलता सिय बिनु न कबहुँ नर पावत रामहिं॥१२॥
गावत रामहिं सन्त जे, सिय युत आठो याम।
तिनके उर पुर बसत नित, सिय वल्लभ सुखधाम॥
सिय बल्लभ सुखधाम अखिल लोकनि के नायक।
रसिकनि के वश होइ सुनत सियगुण सुखदायक॥
सिन बिनु परत न चैन कतहुँ पल कल नहिं पावत।
प्रेमलता अस जानि प्रभुहिं सिय सह जन गावत॥१३॥
गावत सियगुण नाम जो, मुदित सन्त रसवन्त।

ताके पीछे फिरहिं प्रभु, निशि बासर सियकन्त ।।
निशि बासर सियकन्त अन्त कोउ जासु न जानहिं ।
रसिकनि के बशभये सुनत नित सिय गुन गानहिं ।।
योगीजन करि कष्ट भजत जेहिं पै नहिं पावत ।
प्रेमलता सोइ राम मिलत बिनु श्रम सिय गावत ।।१४।।
आधे रघुबर सीय विनु, सिय जू तस विनु राम ।
दोउ मिलि पूरण होत इक, गोर श्याम सुख धाम ।।
गोर श्याम सुख धाम नाम तिमि तिन्हि कर जानों ।
विलग किये अति दुखित रहत यह मत उर आनों ।।
युगल नाम युग ध्यान भाव युग सुखद अराधे ।
प्रेमलता नतु दुखद भजत इक इक बिनु आधे ।।१५।।
रामहिं सुमिरत प्रथम जो, पाछे नाम सु सीय ।
अज्ञानी मति मन्द ते, शालत प्रभु के हीय ।।
शालत प्रभु के हीय जीव बिनु जनु तनु ध्यावहिं ।
तेहि लगि अति दुख सहत अनन्त विश्राम न पावहिं ।।
धामी सों करि बैर मन्मुखी सेवत धामहिं ।
प्रेमलता बिनु सीय प्रथम जो सुमिरत रामहिं ।। १६ ।।

पाछे रामहिं भजत जो, पहिले सीतहिं ध्याय ।
ताके उर विनु यतन प्रभु, निवसत आपहिं आय ॥
निवसत आपहिं आय जाहि मुनि ध्यान न पावहिं ।
सियनाते बशहोत अगम जेहि गुण श्रुति गावहिं ॥
सिय सम्बन्धिनि हाथ बिकत बिनु गथ विधि आछे ।
प्रेमलता जो सियहिं सुमिरि प्रभु सुमिरत पाछे ॥१७॥
जाके तन सु तड़ाग में, हृदय रूप कल कञ्ज ।
सिय सुगन्ध तेहि माहिं शुचि, सब प्रकार हर रञ्ज ॥
सब प्रकार हर रञ्ज पुञ्ज सुख प्रद अलि रामहिं ।
तजत न तेहि प्रभु पलक बसति सिय जेहि उर धामहिं ॥
उड़ि उड़ि सिय अँग दलनि बैठि चाखत रस छाके ।
प्रेमलता धनि भाग बिराजहिं सियतन जाके ॥ १८ ॥
पूरणभाग सुजीव तब, जानिय सकल प्रकार ।
श्री सिय स्वामिनि हृदय जब, निवसैं परम उदार ॥
निवसैं परम उदार सार मुद मङ्गल केरी ।
ऋधि सिधि निधि विधि अमित जासु चरणनि की चेरी ॥
राम सजीवन मूरि जात सो तजि तेहि दूरन ।

प्रेमलता जेहि ध्याय होत मुनि भाग सु पूरन ॥१९॥
करिये अमित सुयतन नित, प्रभुहिं मिलन के हेत।
सियबिनु काहुइ राम सो, कबहुँ न दरशन देत॥
कबहुँ न दरशन देत चेत करि हठ तजि दीजै।
भजिये सिय पद कञ्ज वेगि गुरु रसिक सुकीजै॥
परम सुगम यह सीख जानि निज हित हिय धरिये।
प्रेमलता सिय विमुख सुख न श्रम अमित सु करिये॥२०॥
चाहत गति मति भगति रति, प्रभु सन ते नर अज्ञ।
परिहरि सिय स्वामिनि चरण, पावन सुखद कृतज्ञ॥
पावन सुखद कृतज्ञ तज्ञ तर तम के पारा।
भजत जिन्हें सुर सन्त सिद्ध मुनि मनुज उदारा॥
पावहिं ते सुख सकल दुसह दुख कबहु न दाहत।
प्रेमलता तजि तिन्हें मूढ़ नर गति मति चाहत॥२१॥
नामहिं जपि हरि हरहिं अघ, विधि सिधि भे जपिनाम।
नामहिं जपि शिव देत गति, काशी में अभिराम॥
काशी में अभिराम गजानन प्रथम पुजावहिं।
नामहिं रटि सुक ब्यास आदि कबि ब्रह्म कहावहिं॥

नामहिं रटि हनुमान किये निज वश सिय रामहिं ।
प्रेमलता बशुयाम रटिय अस जानि सुनामहिं ॥२२॥
नामहिं रटत प्रयास विनु, हृदय कमल बिकसाय ।
दायक परमानन्द तहँ, नामी रूप लखाय ॥
नामी रूप लखाय होय उर पर्म प्रकाशा ।
अघ उलूक छल कपट दुरैं जहँ तहँ अति त्रासा ॥
लोक लाज कुल कानि तजी लहि प्रभु सुख धामहिं ।
प्रेमलता लय लाय रटहिं सोइ निशि दिन नामहिं ॥२३॥
देही को करि याद मन, देह सोच परि त्यागि ।
पालहिं जिन्हकी देह यह, तू निज काजहिं लागि ॥
तू निज काजहिं लागि छाँड़ि छल कपट सयानी ।
रटु रसना वशुयाम नाम मुद मङ्गल दानी ॥
धरि अनन्य मत सुदृढ़ सुमिरु सियराम सनेही ।
प्रेमलता प्रभु द्रवहिं अवसि जिन्हि दीनी देही ॥२४॥
देही श्री सियराम तजि, जे जन पालत देह ।
ते जइहैं सन्देह विनु, बाँधे यम के गेह ॥
बाँधे यम के गेह दुसह दुख सहिहैं प्रानी ।

लख चौराशी योनि जन्मि पुनि पुनि अज्ञानी ॥
श्री सतगुरु उपदेश क्लेश हर बिनु विधि केही ।
प्रेमलता सुख लहहिं जीव जग तजि प्रभु देही ॥२५॥
देही नेह विहीन यह, देह सुन्दरी जौन ।
अति फीकी अप्रिय लगै, जिमि भोजन विनु लौन ।
जिमि भोजन बिनु लौन चटक देखत की भाई ।
भीतर भरयो भँगार विविधि जो वरनिन जाई ॥
रहत न पुनि रस एक मन्दमति सेवत जेही ।
प्रेमलता परिणाम सहहिं दुख तजि शठ देही ॥ २६ ॥
देही तजि देहहिं भजै, मूल त्यागि सो पात ।
सींचत जनु फल सुभग हित, मूरख धोखाखात ॥
मूरख धोखा खात बहुरि शिर धुनि पछितावहिं ।
विनु सुमिरे सियराम नाम गति पतित न पावहिं ॥
सन्तसङ्ग गुरु विमुख अधिक परनारि शनेही ।
प्रेमलता अज्ञान देह सुख रत तजि देही ॥ २७ ॥
नाना मुनि मत प्रगट जग, नाना साधन धाम ।
नाना ज्ञान उपासना, जीव न लह विश्राम ॥

जीव न लह विश्राम भजे बिनु श्री सियरामहिं ।
सुन्दर सरल सुजान पतित पावन सुख धामहिं ॥
रटत न नाम उदार बाँधि वैशनव कर बाना ।
प्रेमलता मतिमन्द दुखद साधहिं मतनाना ॥ २८ ॥
नाना मत साधत मरे, जीव जगत अज्ञान ।
चाटत पातरि तृप्ति हित, छुधा विवश ज्यों स्वान ॥
छुधा विवश ज्यों स्वान उदर भरि कबहुँ न पावा ।
विनु सतगुरु उपदेश मूढ़ त्यों जन्म नशावा ॥
रटत न श्री सियराम मोह बश रूप भुलाना ।
प्रेमलता दुख सहहिं यदपि साधहिं मत नाना ॥२९॥
प्यारे जीवन जक्त में, अल्पहि बिना ठिकान ।
शुभ कृत करिये विलम बिनु, बरणत वेद पुरान ॥
बरणत वेदु पुरान साहिवी अस्थिर नाँहीं ।
मन चित बुद्धि न स्ववश दुखद रत भोगनि माँहीं ॥
इन्द्रीगन अति प्रबल चहत सब भाँति विगारे ।
प्रेमलता अवलम्ब एक गुरु कृपा सु प्यारे ॥ ३० ॥
चेला गुरु अनुकूल जो, बनी बनाई जानि ।

लोक सुयश परलोक गति, शुभ कृत होत न हानि ॥
शुभ कृत होत न हानि प्रीति उर बढ़ै सवाई ।
मायिक हर्ष विषाद नशैं बिनु श्रम दुखदाई ॥
मोह जाल नहिं फसै रटै सियराम अकेला ।
प्रेमलता जग जियत धन्य सो गुरुमुख चेला ॥३१॥
चेला गुरुसन प्रीति करि, तन मन धन सब देइ ।
सफल जन्म निज जानि जिय, गुरु पद पंकज सेइ ॥
गुरुपद पङ्कज सेइ लेइ सुख शोक विहाई ।
भक्ति भाव मुद मोद हिये नित नव सरसाई ॥
सियबर नाम शनेह बढ़ै नहिं परै झमेला ।
प्रेमलता निर्लेप रहै सोइ जग में चेला ॥ ३२ ॥
नामहिं रटत न छाँड़ि छल, पाइ सु अनुपम देह ।
ताके मुख में दीजिये, भरि भरि मूठी खेह ॥
भरि भरि मूठी खेह शङ्क उर रञ्च न कीजै ।
जन्म धरे कर लाभ यहै नामामृत पीजै ॥
गुरुमुख ह्वै धरि टेक हृदय तजि जग सुख बामहिं ।
प्रेमलता निर्द्वन्द अहर निशि रटु मुखनामहिं ॥३३॥

आलश कबहुँ न कीजिये नाम रटत बशुयाम।
पछितैहौ नतु उदर भरि शिर धुनि धुनि परिणाम॥
शिर धुनि धुनि परिणाम अपर साधन कलि नाँहीं।
भुक्ति मुक्ति सिधि भक्ति सकल सुख नामहिं माँहीं॥
रटत रटत सरसात होइ उर विमल निखालश।
प्रेमलता करि नेम नाम नित रटहु निरालश ३४॥
साधू सेवा नाम रट, उनहीं को सत सङ्ग।
मो मन में निवसै सदा, अपर न दूसर रंग॥
अपर न दूसर रंग सुलभ अस सुगम न कोई।
जेहि सेवत अनयास हृदय अनुभव सुख होई॥
आश त्रास जग जाल काल कलि मल प्रद ब्याधू॥
प्रेमलता हरि देइँ विमल यश नाम सु साधू॥३५॥
कादर सुगति न पावहीं बाँधे यम पुर जाँयँ।
तनु पोषन में प्रीति अति, नाम रटत अलसाँयँ॥
नाम रटत अलसाँयँ कहैं अन्तर लय लागी।
करनी महामलीन करैं मति भोगनि पागी॥
बातनि ते बनि ब्रह्म पुजावहिं जगमें सादर।

प्रेमलता परिणाम सहहिं दुख दारुण कादर ॥३६॥
कादर वेष बनाइ बर, बञ्चहिं जग मतिमन्द।
घर घर डोलत उदर हित, तजि सियबर सुखकन्द॥
तजि सियवर सुखकन्द कुशल चाहहिं अग्यानी।
मन के मोदक खाइ तृप्ति कोउ भया न प्रानी॥
विनु करनी को ज्ञान कथहिं नाना विधि नादर।
प्रेमलता चित चेति तिन्हे तजिये लखि कादर ॥३७॥
नामहिं सों करु नेह मन, देह गेह सुख त्यागि।
रटु रसना लय लाय नित, महामोह निशि जागि॥
महा मोह निशि जागि मानि सिख मम सुखदाई।
कलियुग नाम विहाय परमगति कहु केहि पाई॥
कहत सन्त श्रुति टेरि हेरि जिय गाउ सु रामहिं।
प्रेमलता नतु बहुरि सहहुगे दुख बिनु नामहिं॥ ३८॥
नामहिं रटि अनुभव खुलै, नामहिं रटि गति होय।
नामहिं रटि भक्ती बढ़ै, दूरि करै अघ धोय॥
दूरि करै अघ धोय दुरैं कलि कृत दुख भारे।
नाम रटत सियराम द्रवहिं श्रुति सन्त पुकारे॥

नामहिं रटि रस रास लखै अनुपम पर धामहिं।
प्रेमलता सिय सहित रटिय भरि देह सु नामहिं॥३९॥
पूजा द्वापर धर्म है त्रेता मख कृत ध्यान।
कलियुग सो एकौ नहीं, राम नाम करुगान॥
रामनाम करु गान अहर निशि सहित सु सीया।
मुनि दुर्लभ गति लहै प्रकाशित होय सु हीया॥
भासै ब्रह्म स्वरूप जक्त लखि परै न दूजा।
प्रेमलता निर्बिघ्न नाम कलि यज्ञ न पूजा॥ ४०॥
नामहिं तजि जो करहिं कलि, पूजा मख तप ध्यान।
सो नर मूढ़ विमोह वश, मन्द बुद्धि अज्ञान॥
मन्द बुद्धि अग्यान पङ्ख बिनु चहहिं उड़ाना।
लखहिं न युग कृत धर्म कर्म ठानहिं विधि नाना॥
भवनिधि बूड़न चहहिं जीव मनमुख बिनु कामहिं।
प्रेमलता गति प्रद न सुकृत कोउ कलि तजि नामहिं॥४१॥
नामहिं मधि जो मन लगै, तौ न करै वहु कर्म।
रटै सदा सिय सहित मुख, तजि सब संशय भर्म॥
तजि सब संशय भर्म चारि संयम दृढ़ धारी।

अशन-सयन-मितबैन-बास एकान्त-सुखारी ॥
यहि विधि रटि सियराम जीति इंद्रिनि छल कामहिं ।
प्रेमलता सुख सुलभ होत सब सुमिरत नामहिं ॥४२॥
मनमें चाहे भोग सुख, तनमें राखे प्रेम ।
धनके हित भटकत फिरै, रटै नाम विनु नेम ॥
रटै नाम विनु नेम छेम कहु केहि विधि पावै ।
विगत सङ्ग बहु भजन करै नहिं तत्व लखावै ॥
करनी करै मलीन प्रीति अति युवती जनमें ।
प्रेमलता गुरु विमुख सिद्धि सुख चाहत मनमें ॥४३॥
सोवै सुख भरि उदर निशि, जागि करै उपदेश ।
भजन बिना नहिं होइ गति, मिटत न कठिन कलेश ॥
मिटत न कठिन कलेश आपु नहिं करत सम्हारा ।
विषय भोगवश भयो मूढ़ आतम नहिं तारा ॥
रटत न श्रम करि नाम बयस इंद्रिनि हित खोवै ।
प्रेमलता सुख सुगति चहै जो सो क्यों सोवै ॥ ४४ ॥
बाना बाँधे हंसको, करनी बगुला काग ।
सारा सार विबेक विनु, विषयनि सँग अनुराग ॥

विषयनि सँग अनुराग अधिक भोगनि पर प्रीती ।
रटत न नाम उदार छाँड़ि छल कपट अनीती ॥
बञ्चि बञ्चि जग धरहिं सञ्चि धन जुगइ अयाना ।
प्रेमलता प्रभुदास कहावत बाँधि सु बाना ॥ ४५ ॥
भूलो मन समुझै नहीं, छण छण होत अकाज ।
विषयनि में परक्यो रहै, सजे सन्त की साज ॥
सजे सन्तकी साज लाज नहिं लागत पाजी ।
सुन्दर नर तनु पाय किये हरि गुरु नहिं राजी ॥
इन्द्रिनि के सुख लागि होत सठ प्रभु प्रतिकूलो ।
प्रेमलता नहिं करत चेत अजहूँ मन भूलो ॥ ४६ ॥
सुखमें जो रुचि होय तो, इकला होइ रटु नाम ॥
सर्व आश तजि नेम करि, रक्षक श्री सियराम ॥
रक्षक श्री सियराम काम सब सफलित करिहैं ।
हरिहैं विपुल बिकार मोद मङ्गल उर भरिहैं ॥
दूसर हितु न तिलोक समुझि अस परु जनि दुख में ।
प्रेमलता मन मुदित नाम रटु इकला सुख में ॥४७॥
पक्का निश्चय कीन हम, खेलि खेलि सब खेल ।

नाम उपासक सत्य कर, काहुइ ते नहिं मेल ॥
काहुइ ते नहिं मेल मिलत प्रेमी बहुतेरे ।
पै सब बाधक जानि नाम रटना लय केरे ॥
इकले लो सुख होत कहत सो मम मन थक्का ।
प्रेमलता रटु नाम बिलग लखि निश्चय पक्का ॥४८॥
सीताराम सु नाम सन, करिये केवल प्रेम ।
रटिये खूब इकाग्र ह्वै, सदा धारि दृढ़ नेम ॥
सदा धारि दृढ़ नेम छेम मन मानी पैहौ ।
भइहौ श्रीसियराम धाम साकेत सिधइहौ ॥
नाम हींन बहु जीव फिरहिं जग मृतक प्रतीता ।
प्रेमलता अस जानि जीह जपु रघुबर सीता ॥ ४९ ॥
पापड़ बेले बहुत मैं, प्रथम रटे बिनु नाम ।
उदर हेतु निशि दिवस दुख, भोगेउ विपुल निकाम ॥
भोगेउ विपुल निकाम गेह बसि करि करि धंधा ।
प्राणनाथ तजि नाम मोह भारा धरि कंधा ॥
लात घमूका बचन सहे दुष्टन के थापड़ ।
प्रेमलता किमि कहौं प्रथम जो बेले पापड़ ॥ ५० ॥

आपहि करुणा कीन प्रभु, हरे सकल सन्ताप।
घरही ते निज नाम कर, लगे करावन जाप॥
लगे करावन जाप बहुरि गुरुदेव मिलायेउ।
संसकार श्रुति विहित पञ्च करि कृपा दियायेउ॥
भली भाँति अपनाय लीन्ह करि नाश कुपापहिं।
प्रेमलता भये मीत सकल जन सन्त सु आपहिं॥५१॥
पूजा सेवा योग जप, ज्ञान ध्यान विज्ञान।
नाम रटन सम सुखद नहिं, कोटि तीर्थ अस्नान॥
कोटि तीर्थ अस्नान दान तप यज्ञ विरागा।
सम दम साधन विपुल भक्ति गति रति मति भागा॥
विद्या विनय विचार नाम सम ब्रह्म न दूजा।
प्रेमलता रटु नाम जानि अस अपर न पूजा॥५२॥
सङ्ग न रङ्ग न गङ्ग अस, सुखद सबहिं जस नाम।
परमारथ स्वारथ अरथ, चहुँ फल कोटिनि धाम॥
चहुँफल कोटिनि धाम नाम रट सम नहिं कोऊ।
चारिउ युग परमान पुज्य पर आखर दोऊ॥
अभिमत प्रद अनुकूल दुसह दुख दोष विभंगन।

प्रेमलता सम नाम देव दाता कोउ सङ्ग न ॥ ५३ ॥
सिद्धि न ऋद्धि न निद्धि बिधि, भजन भाव भगवान।
नाम सरिस कोउ सुखद नहिं जनहित वेद बखान ॥
जनहित वेद बखान ध्यान धरि सुनि गुनि देखौ।
तीनि काल तिहुँलोक नाम सम सुहृद न लेखौ ॥
बिनु सुमिरे सियराम पाव सुख सपनेउ बृद्धिन।
प्रेमलता ते कूर नाम तजि सेवहिं सिद्धिन ॥५४॥
सार न काहुइ में कछू जानि रटिय सियराम।
जे न के न विधि उदर भरि, प्रमुदित रहि बशुयाम ॥
प्रमुदित रहि बशुयाम नाम नेहिन सँग रहिये।
कहनि रहनि शुचि चहनि सरल सन्तन की गहिये ॥
तजि माया मद मान करिय नित नाम उचारन।
प्रेमलता बसि बिलग समुझि जिय कहुँ कछु सारन ॥५५॥
देहहिं जानि असार अति, छण भङ्गू सबिकार।
सेवहिं ताहि न बहुत ते, जिन्हिकर विमल विचार ॥
जिन्हिकर विमल विचार छार सम जग सुख जानहिं।
रटहिं नाम सियराम त्यागि ममता मद मानहिं ॥

गुरु पद पङ्कज प्रीति सुनहिं प्रभु चरित शनेहहिं।
प्रेमलता जो अङ्ग निहारत रहहिं स्वदेहहिं ।। ५६ ।।
नामहिं रटत न होत सुख, तेहिकर कवन विचार ।
कपट करहिं गुरुदेव सन, नाम रटहिं सविकार ।।
नाम रटहिं सविकार सार सिख सुनहिं न काना ।
मनमुख बहु इतिहास कहहिं उर अति अभिमाना ।।
चाखहिं नाना स्वाद अधिक सेवत तनु चामहिं ।
प्रेमलता केहि भाँति लहैं सुख रटत सु नामहिं ।।५७।।
चातक सम दृढ़ धारि उर, टेक विवेक विचार ।
रटै पुकारि पुकारि नित, नामसु बारहिं बार ।।
नाम सु बारहिं बार पीव जब लगि नहिं पावै ।
तबलगि धरै न धीर पीर नित नव प्रगटावै ।।
स्वाति सिन्धु सियराम मिलैं नाशैं सब पातक ।
प्रेमलता सुख लहै पाइ जिमि स्वाति सु चातक ।।५८।।
रोगनि ग्रसित सरीर लहि, लोगनि बड़ अभिमान ।
संयोगनि निरहेतु करि, कृपा दीन्ह भगवान ।।
कृपा दीन्ह भगवान ग्यान सो सकल गमायो ।

करि आये जो कौल गर्भ में सो नहिं गायो ॥
हित करि पालत देह अङ्ग अरुझे भव भोगनि ।
प्रेमलता सियराम रटत नहिं हरत जो रोगनि ॥५९॥
गट्ठा माया मोहका, धरयो शीश अज्ञान ।
निशि बासर ढोयें फिरत, जरत लोभ मद मान ॥
जरत लोभ मद मान लखैं निज लाभ न हानी ।
रटत न श्री सियराम जानि अति लघु जिंदगानी ॥
विसरयो गर्भकरार लग्यो धन करन इकट्ठा ।
प्रेमलता बश मोह धरयो शिर माया गट्ठा ॥६०॥
शिक्षा आनहुँ देत यह, गेह तजो जनि कोय ।
खाव पियो पहिरो बसन, भजन किये का होय ॥
भजन किये का होय भोग हित नर तनु पायो ।
मरे बहुत करि कष्ट व्यर्थ को स्वर्ग सिधायो ॥
डोलत मूड़ मुड़ाय साधु बहु मागत भिक्षा ।
प्रेमलता हरि भजहु निवसि घर मानि सु शिक्षा ॥६१॥
रटिहौं नामसु एक रस, हटिहौं अब न कदापि ।
डटिहौं मन रिपु मारि रण, गुरु मूरति उर थापि ॥

गुरु मूरति उर थापि छापि पञ्चायुध तन में ।
अटिहौं मिथिला धाम मुदित श्री कञ्चन बन में ॥
सिय पिय दरशन लागि जागि नित देहहिं लटिहौं ।
प्रेमलता तर बैठि छाँड़ि सब नामहिं रटिहौं ॥ ६२ ॥
मनिहौं काहुइ की नहीं, अनिहौं उर न कुतर्क ।
रटिहौं श्री सियराम मुख, प्रमुदित बैठि सु फर्क ॥
प्रमुदित बैठि सु फर्क बृथा बहु कूप न खनिहौं ।
एकै साधन साधि लोक दुइ हुइहौं धनि हौं ॥
गुरु पद कमलनि केर छाँड़ि छल मधुकर बनिहौं ।
प्रेमलता प्रभु स्वामि इष्ट सब नामहिं मनिहौं ॥ ६३ ॥
गहिहौं श्री सियराम यह, नाम सदा करि टेक ।
सहिहौं दुख सुख अङ्ग पर बाधा बिघन अनेक ॥
बाधा बिघन अनेक एक श्री नाम न तजि हौं ।
विलग बैठि बशुयाम रटन नित नूतन सजिहौं ॥
परि हरि अपर सनेह देह भरि नेम निवहिहौं ।
प्रेमलता गुरु कृपा चालि दूसर नहिं गहिहौं ॥ ६४ ॥
बाँही पकरी नाम की, मन वच कर्म दृढाइ ।

अब न छाड़िहौं देह भरि, श्री गुरु कृपा सु पाइ ॥
श्री गुरु कृपा सु पाइ सकल दुख दुशह बिनाशे ।
विनुश्रम नाना रहस आइ उर अनुपम भासे ॥
बैठि स्वसुख वशुयाम विलग सीतल तरु छाँहीं ।
प्रेमलता जग ख्याल लखै गहि नाम सु बाँहीं ॥६५॥
दुनियाँ खाई भूत ह्वै, शिश्नोदर बलवन्त ।
श्री सियराम सु नाम रटि, बाचे कोउ कोउ सन्त ॥
बाचे कोउ कोउ सन्त कृपा सतगुरु की पाई ।
रटैं सदा लयलाय मुदित तजि लोक सगाई ॥
जेहि तेहि विधि भरि उदर फिरहिं जग ज्यों गज खुनियाँ ।
प्रेमलता निर्द्वन्द भूत ह्वै खाई दुनियाँ ॥ ६६ ॥
काया काँची खाल की, तामें भरयो विकार ।
ताको करै गुमान अति, सो नर बड़ो गमार ॥
सो नर बड़ो गमार बार विनशत नहिं लागै ।
देखत जग व्योहार तदपि मतिमन्द न जागै ॥
रटत न श्री सियराम नाम तजि झूठी माया ।
प्रेमलता करि यतन पालियत काँची काया ॥ ६७ ॥

दाया करि सियराम रटु, तजि माया अभिमान।
ठंडी छाया बैठि सुख, गाया करु दै तान॥
गाया करु दै तान नाम गुण मन बच काया।
धाया दशदिशि फिरत उदर लगि प्रभु विसराया॥
भाया भया न काम कबहुँ भरि पेट न खाया।
प्रेमलता बय गई बादि सब करी न दाया॥ ६८॥
चूरा चाउर चाबि बसि, श्री मिथिलापुर धाम।
दुग्धवती आदिक तटनि बैठि रटिय सियराम॥
बैठि रटिय सियराम काम कामना विहाई।
पहिरि गूदरी टोप अटै महि लखि सुखदाई॥
भजन करै दिन राति मुदित गुरु पाइ सु पूरा।
प्रेमलता तजि भोग भजै हरि चाबि सु चूरा॥६९॥
भूला विषय विहार बन, मन मृग अपन स्वरूप।
फिरत चौकरी भरत नित, सहत कठिन हिम धूप॥
सहत कठिन हिम धूप कतहुँ विश्राम न पावै।
बाँधन हित बहु यतन करत जन हाथ न आवै॥
सतगुरु शब्द बँदूक मारि जब करिहैं लूला।

प्रेमलता वश होय सहज तब मन मृग भूला ॥७०॥
लूला श्री गुरुदेव ने, मन मृग करि ततकाल।
धरि बाँध्यो अनयास पटु, नाम रटन दृढ़ जाल॥
नाम रटन दृढ़ जाल भाल दै तिलक तमाँचा।
कण्ठ कन्ठिका माल डारि नाशेउ नट नाँचा॥
बेष सु पिञ्जर बेढ़ि कियो सब विधि अनुकूला।
प्रेमलता हरि भजन लग्यो तब मन मृग भूला ॥७१॥
गुरुता विनु जो शिष करै, सो गुरु चख श्रुति हीन।
ब्रह्म तत्व को बोध नहिं थूकि कान में दीन॥
थूकि कान में दीन शिष्य जो होय सुजाना।
ततु वेत्ता गुरु करै त्यागि तेहि कहत पुराना॥
बिनु सत गुरु उपदेश मलिन उर भजन न फुरता।
प्रेमलता सोइ गुरू जासु उर होय सु गुरुता॥ ७२॥
चेला मधुकर सुमन गुरु, भगवत तत्व सुगन्ध।
जो न होय तो अपर लखि, तेहि सन तजि सम्बन्ध॥
तेहि सन तजि सम्बन्ध सोच संकोच न करिये।
दुर्लभ नर तनु पाय भजन करि भवनिधि तरिये॥

रटै रटावै नाम रहै जो मुदित अकेला।
प्रेमलता सोइ गुरु हूजिये ताकर चेला ॥ ७३ ॥
लालो भोजन को करत, करत न प्रभु विश्वास।
समुझावत भे बहुत दिन, तजत न मन जग आश ॥
तजत न मन जग आश कहावत सियबर केरो।
बिसरयो सहज स्वरूप भयो इन्द्रिनि को चेरो ॥
देत अजहुँ सोइ मूढ़ गर्भ में जो तोइ पालो।
प्रेमलता भजु ताहि त्यागि भोजन को लालो ॥७४॥
लाजा तजी न लोक की, साजा वैष्णव वेष।
सिय रघुराजा भजत नहिं, गुरु सन राखत द्वेष ॥
गुरुसन राखत द्वेष जाति कुल तजि का कीनो।
दोउ दिशि ते गा मन्द बादि नाशे पन तीनो ॥
सोवत भरि भरि उदर विगारो सब विधि काजा।
प्रेमलता पै मूढ़ लोक की तजी न लाजा ॥७५॥
लाजा पापिनि लोक की, भजन करन नहिं देत।
प्रभु गुरु सनमुख होत जब, तब हठि करै अचेत ॥
तब हठि करै अचेत लेत शुभकृत दै अपयश।

छण में देत कराइ इष्ट गुरु विमुख विमुख अस ।।
जारति उर बहु भाँति पाय अवसर दगबाजा ।
प्रेमलता अस प्रबल लोक की पापिनि लाजा ।।७६।।
राजा ज्यों बिनु नीति तिमि, विनु राना को राज ।
नवल बधू बिनु पुरुष अरु, कुलवन्ती बिनु लाज ।।
कुलवन्ती बिनु लाज बोध बिनु ज्यों बैरागी ।
विनाभाव की भक्ति ज्ञान बिनु सर्वस त्यागी ।।
शिष्य शीलता हीन तीर्थ बिनु सन्त समाजा ।
प्रेमलता लखि नष्ट त्यागि भजु सिय रघुराजा ।।७७।।
पालो जो तोहि गर्भ में, नव महिना मति मन्द ।
विसरो तेहि केहि लागि सठ, सहत घोर दुख द्वन्द ।।
सहत घोर दुख द्वन्द फन्द परि इन्द्रिनि केरे ।
हेतु रहित हित सदा सहायक सियबर तेरे ।।
सोइ तब करहिं सँभार त्याग तू तन को लालो ।
प्रेमलता भजु ताहि उदर में जो तोइ पालो ।। ७८ ।।
पातक सब झरि जात हैं, रटत नाम लय लाय ।
ज्यों बसन्त महँ तरुन के, गिरहिं पत्र मुरझाय ।।

गिरहिं पत्र मुरझाय पवन सँग जायँ उड़ाई।
बहुरि न भेटैं तरुइ करै जो कोटि उपाई॥
जापक अघ तिमि उड़हिं विपुल लखिनाम सुघातक।
प्रेमलता अस्पर्श फेरि करि सकहिं न पातक॥७९॥
सावन भादों मास दोउ, राम नाम के अङ्क।
बरषा ऋतु रघुपति भगति, शालि सु दास निशङ्क॥
शालि सु दास निशङ्क नाम रट जल सम भाई।
गुरुमुख जितना रटै होय तितनहिं सुखदाई॥
बढ़ै भक्ति शश बिपुल नशैं अघ अर्क अपावन॥
प्रेमलता झरलाय गर्जि बर्षैं जब सावन॥ ८०॥
बोवहु लै गुरुदेव सन, उर महि बीज सु नाम।
जुगवत रहहु सु रटन करि, सावधान बशुयाम॥
सावधान बशुयाम अनेकनि विघन बराई।
सुखदैहै परिणाम फूलि फलि बृद्धि सुपाई॥
तब लगि करि बहु यतन सूमके धन ज्यों जोवहु।
प्रेमलता तजि सकल नाम सुरतरु उर बोवहु॥८१॥
छाँहीं सीतल सुखद सुचि, नाम सुतरु की सूति।

जारत उर कामादि जो, सो न सकहिं तहँ धूति ॥
सो न सकहिं तहँ धूति स्ववशजिन्हिकीन्हसकल जन।
नाचहिं मर्कट सरिस दिवस निशि बिकल मलिन मन ॥
तपत प्रबल कलिकाल दशोदिशि सुख कहुँ नाँहीं।
प्रेमलता तजि नाम कामप्रद सुरतरु छाँहीं ॥८२॥
खटका सब मिटि जात है, रटत रटत सियराम।
उपजय पर्म सु मोद उर, मन अति होत निकाम ॥
मन अति होत निकाम काल बीते कछु भाई।
करि न सकैं खल बिघन विपुल पुनि निज प्रभुताई॥
सूझि परै अनयास सकल कर्तब कलि नटका।
प्रेमलता अस जानि नाम रटु तजि जग खटका॥८३॥
योगी आठउ अंग कोउ, करै योग हित छेम।
सप्त भूमिका ज्ञान कोउ, पढ़ै सुनै करि नेम ॥
पढ़ सुनै करि नेम भगति कोउ नबधा साधैं।
कर्म धर्म कोउ करैं तीर्थ कोउ सुर आराधैं॥
कोउ बिरक्त संग्रही संयमी कोउ कोउ भोगी।
प्रेमलता बिनु रटे नाम सब भये कुयोगी ॥ ८४॥

जितना रटिहौ नाम मुख, उतना पैहौ चैन ।
नशिहैं ब्याधि उपाधि सब, लोभ मोह मद मैन ॥
लोभ मोह मद मैन नयो नित होय विमल उर ।
आदर करैं सु सन्त सुयश बर बाढ़ै तिहुँ पुर ॥
मिलैं अवसि सियराम जगत कोउ तिन्ह विनु हितना ।
प्रेमलता पै खूब नाम जपु सुख चह जितना ॥८५॥
पैसा जैसा प्रिय लगै, तैसा लगै न नाम ।
दाम हेतु निज परमहित, मूढ़ बिसारेउ राम ॥
मूढ़ बिसारेउ राम काम प्रद सब सुखदानी ।
चेरी जाकी रमा स्वामिनी सिय पटरानी ॥
तेहि प्रभु को विनु भजे कहो सपनेहु सुख कैसा ।
प्रेमलता सुचि सीख सुनत नहिं जोरत पैसा ॥८६॥
माते डोलैं जगत में, राते नाम शनेह ।
भाते ते सियराम मन, कानन बसहिं कि गेह ॥
कानन बसहिं कि गेह खेह सम तन धन जानै ।
जेहि तेहि बिधि भरि उदर नाम यश सुनै बखानै ॥
सन्त सुगुरु पद प्रीति तजे सब जगके नाते ।

प्रेमलता बशुयाम रहैं नामामृत माते ॥ ८७ ॥
रटिहै जो तू नाम मुख, बाम धाम तजि काम।
अटिहै प्रमुदित अवनि में, युत विचार बशुयाम ॥
युत विचार बशुयाम पाइहै तौ सियरामहिं।
हारहि जन्म न बादि सेइ साधन तनु चामहिं ॥
सद्गुरु कृपा सु पाइ कपट पट विनु श्रम फटिहै।
प्रेमलता सब भाँति भलो जो नामहिं रटिहै ॥८८॥
सुनिये गुनिये बरणिये, नाम कथा बशुयाम।
रटिये अटिये मुदित महि, चटिये न तिय मुख चाम ॥
चटिये न तिय मुख चाम धाम धन तजि तनु लटिये।
हटिये न सुमिरत नाम देह भरि सुचि सँग सटिये ॥
मनिये श्रुति गुरु साधु मंत्र नहिं अपनी धुनिये।
प्रेमलता उर धारि नाम यश, गुनिये सुनिये ॥ ८९ ॥
बाबा बनि तुम क्या कियो, घर छाँड़्यो केहि लागि।
रटेउ न श्री सियराम जो, रह्यो प्रपञ्चहि पागि ॥
रह्यो प्रपञ्चहि पागि जागु अबहूँ क्यों सोयो।
सुमिरि जीह नित नाम जन्म खोयो सो खोयो ॥

रटुमुख आठो याम पाइहै फल मन भावा।
प्रेमलतहि हिय हेरि फेरि भव गिरहु न बाबा ।।६०।।
बाबा बनि बनितनि भजै, बन तजि फिरै बजार ।
बाबुनि सेवत बदन लखि, स्वारथ लगि अबिचार ।।
स्वारथ लगि अबिचार थूकि जनु पुनि चह चाट्यो ।
बोवत पेड़ बबूर कल्पतरु बाग सु काट्यो ।।
तेहि लगि बहु दुख सहत मिटत नहिं आवा जावा ।
प्रेमलता रटुनाम सुगति जो चाहै बाबा।। ६१ ।।
बाबनि कै बाबा प्रभू, तेहि ते बाबा नाम ।
नाम रटहिं ते सर्व पर, पूजनीयँ सुखधाम ।।
पूजनीयँ सुखधाम आम यह बात न गोई ।
तारण तरण कहाँयँ जगत में जीवत सोई ।।
भुक्ति मुक्ति वर भक्ति लहहिं नित नव मन भावनि ।
प्रेमलता अस जानि जपै बावनि के बाबनि ।। ६२ ।।
साधक साधुनि साधननि, ऋधि सिधि दायक नाम ।
नाम हींन लखि असत सब, जिमि रवि शसि चित्राम ।।
जिमि रवि शसि चित्राम काम कहु केहि कर आवै ।

चहुँ युग नाम प्रभाव गतिद जीवनि श्रुति गावै ॥
कलि केवल एक नाम रटन आधार अबाधक ।
प्रेमलता सोइ सुमिरि सुयश सुख जो चह साधक ॥६३॥
नामहिं रटु गुरु शरण हुइ, तजि चतुराई चैन ।
सेउ चरण करु सङ्ग सुचि, सन्तनि को सुख ऐन ॥
सन्तनि को सुख ऐन मैन माया ते बचिकै ।
पुनि करु दृढ़ अभ्यास नाम जापक सँग रचिकै ॥
सहित बिराग बिचार बिमल बसि मिथिला धामहिं ।
प्रेमलता हठ धारि मारि मन रटु नित नामहिं ॥६४॥
सीखे लोक बिवाद बहु, पढ़े लिखे इतिहास ।
रटत न सीताराम सठ, लय लगाय प्रति स्वास ॥
लय लगाय प्रति स्वास ज्ञान नाना बिधि भाखैं ।
निज पर रूप न बोध कपट सतगुरु तेउ राखैं ॥
भजन पन्थ अलसात विषय भोगिनि में तीखे ।
प्रेमलता धिक जन्म रटन सियराम न सीखे ॥ ६५ ॥
सुखिया सोइ दोउ लोकमें, जे जन रटहिं सु नाम ।
दृढ़ अनन्य व्रत धारि उर, सह श्रद्धा बसुयाम ॥

सह श्रद्धा बशुयाम कामना सकल विहाई ।
हितू न अपनो कोइ नाम बिनु यह मन भाई ॥
नाम रटत हुलसात होत विनु सुमिरे दुखिया ।
प्रेमलता धनि धन्य पुज्य सोइ परम सु सुखिया ॥ ६६॥
चाहत थोरो भजन करि, प्रभु दर्शन बहु लोग ।
दाम चाम के दास सठ, भोगत मायिक भोग ॥
भोगत मायिक भोग विषय कर्मनि में अटके ।
रटत न नाम अखण्ड खूब निशि दिन बेखटके ॥
सम दम श्रद्धाहींन स्वार्थ लगि पर उर दाहत ।
प्रेमलता रत काम कुटिल प्रभु दर्शन चाहत ॥ ६७ ॥
दर्शन चाहै जो किये, सियबर के कलि काल ।
गुरुमुख होइ प्रपञ्च तजि, जहँ लगि जग जञ्जाल ॥
जहँ लगि जग जञ्जाल व्याल सम जानै सोई ।
गुरु आज्ञा धरि शीस अपनपौ सब विधि खोई ॥
श्री सियराम सु नाम अहर निशि करु संघर्षन ।
प्रेमलता लय लाय अवसि पैहै प्रभु दर्शन ॥६८॥
बतियन ते फुरसत नहीं, जतियन अरुझे जीव ।

गतियाँ पावै कौन विधि, छतियाँ बसे न पीव।
छतियाँ बसे न पीव करैं सब आतम घतियाँ।
सतियाँ घर परित्यागि करत नर गणिकनि रतियाँ॥
मतियनि कल्पि कुपन्थ चलावहिं तेहि लगि लतियनि।
प्रेमलता खल कुटहिं अन्त जे भूले बतियनि ॥९९॥
बारक प्रभुहिं प्रणाम जो, करैं जोरि युग हाथ।
परम अभय पद देत तेहि, अति कृतज्ञ रघुनाथ॥
अतिकृतज्ञ रघुनाथ गाथ यह प्रगट न गोई।
शरणागतहिं न तजत भलेहि जग द्रोही होई॥
तिनहूँ ते श्री नाम अधिक अधमनि भव तारक।
प्रेमलता केहु भाँति मरत जेहि सुमिरत बारक ॥१००॥
नामी ते सब भाँति बड़, नाम सुलभ सुखदाय।
रटत रटत जेहि यतन बिनु, निवसत प्रभु उर आय॥
निवसत प्रभु उर आय अखिल लोकनि के नायक।
रक्षहिं धरि धनु बाण नाम जापकनि सुलायक॥
नाम प्रभाव अपार लखैं किमि नर मति बामी।
प्रेमलता बश रहत सदा नामैं के नामी ॥ १०१ ॥

कामी नर श्री नामकर, का जानैं बर भेद।
कपि ज्यों नाचत उदरहित, ते किमि होहिं अखेद ॥
ते किमि होहिं अखेद रटे विनु नाम निरन्तर।
लख चौराशी योनि फिरहिं भर्मत प्रभु तजिपर ॥
महामूढ़ मतिमन्द रटत नहिं नाम सु स्वामी।
प्रेमलता कलि कर्म विवश दुख भोगत कामी ॥१०२॥
खाते पीते सोवते, बक्ते तक्ते बाम।
अरुझे माया जाल में, नाशी बयस ललाम ॥
नाशी बयस ललाम कबहुँ वैराग न आयो।
घरहु तज्यो तो कहा नाम सों नेह न लायो ॥
विनु सुमिरे सियराम खूब नर बहु दुख पाते।
प्रेमलता परिणाम कठिन यम धक्कउ खाते ॥१०३॥
अबहूँ जोरि शनेह सठ, प्रभु सन रटु सियराम।
लघु जीवन संसार में, केहि लगि विसर्‍यो नाम ॥
केहि लगि बिसर्‍यो नाम धाम धन काम न अइहैं।
आदि मध्य परिणाम नाम सियराम हितइहैं ॥
पापिउ सुमिरत मरत देत तेहि सुभ गति तबहूँ।

कामी नर श्री नामकर, का जानैं बर भेद।
कपि ज्यों नाचत उदरहित, ते किमि होहिं अखेद ॥
ते किमि होहिं अखेद रटे विनु नाम निरन्तर।
लख चौराशी योनि फिरहिं भर्मत प्रभु तजिपर ॥
महामूढ़ मतिमन्द रटत नहिं नाम सु स्वामी।
प्रेमलता कलि कर्म विबश दुख भोगत कामी ॥१०२॥
खाते पीते सोवते, बक्ते तक्ते बाम।
अरुझे माया जाल में, नाशी बयस ललाम ॥
नाशी बयस ललाम कबहुँ वैराग न आयो।
घरहु तज्यो तो कहा नाम सों नेह न लायो ॥
विनु सुमिरे सियराम खूब नर बहु दुख पाते।
प्रेमलता परिणाम कठिन यम धक्कउ खाते ॥१०३॥
अबहूँ जोरि शनेह सठ, प्रभु सन रटु सियराम।
लघु जीवन संसार में, केहि लगि विसर्यो नाम ॥
केहि लगि बिसर्यो नाम धाम धन काम न अइहैं।
आदि मध्य परिणाम नाम सियराम हितइहैं ॥
पापिउ सुमिरत मरत देत तेहि सुभ गति तबहूँ।

प्रेमलता अस प्रभुहिं भजिय किन तजि जग अबहूँ ॥१०४॥
अबहूँ रटिये छाँड़ि छल, निशि बासर सियराम।
बिगरिउ तुरत बनाइ हैं जन मन पूरण काम॥
जन मन पूरण काम बाम विधि होय सु दाहिन।
तो सन बनीन कबहुँ प्रभूसन बिगरी नाहिन॥
जुगवत रुख नित रहैं तजत नहिं छोह सु कबहूँ।
प्रेमलता यह जानि मानि सिख भजु तेहि अबहूँ ॥१०५॥
पाछें पछितैहैं अवसि, जे न रटत सियराम।
भूले माया मोह मद, सेवत निशि दिन चाम॥
सेवत निशि दिन चाम बाम इन्द्रिनि के दासा।
रटत न लोलुप नाम काम मद तजि जग आशा॥
सुधासिन्धु परित्यागि मूढ़ नर पीवत छाछैं।
प्रेमलता ते जीव अभागी खीजहिं पाछें॥ १०६॥
पाती लै यमराज की, आवेंगे जब दूत।
छाती चढ़ि जिउ काढ़ि हैं, बाँधि पास मजबूत॥
बाँधि पास मजबूत पीटिहैं लातनि जूतनि।
यह बिचारि रटु नाम त्यागि घर यूवती पूतनि॥

आवत नहिं कोउ काम, अन्त लखि आतम घाती।
प्रेमलता करु यतन सिघ्र जेहि आव न पाती ॥१०७॥
पढ़िये पोथी नामकी, मढ़िये उर सन्तोष।
बढ़िये प्रभु हित भजन पथ, अढ़िये न अपर भरोस ॥
अढ़िये न अपर भरोस रोष करि जगते कढ़िये।
अवसर बीतो जात बहुत बातें जनि गढ़िये ॥
गिरिये न नरतनु पाय नामरटि पिय पुर चढ़िये।
प्रेमलता बहु ग्रन्थ बयस लघु कहँ लगि पढ़िये ॥१०८॥
करुनानिधि श्री नाम कलि, जीवन के कल्यान।
जे न के न विधि रटय कोउ, पाव पद निर्वान ॥
पावै पद निर्वान अगम मुनि जन कहँ जो पद।
स्वपच लहत सोइ सुगति, नाम जपि सन्त वेद बद ॥
धर्म कर्म जप योग यज्ञ व्रत करि करि मरुना।
प्रेमलता बिनु नाम करहिं कोउ अन्त न करुना ॥१०९॥
डरुना पाछिल पाप ते, अब जनि करै कुकर्म।
रटु रसना सियराम नित, परिहरि माया भर्म ॥
परिहरि माया भर्म धर्म यहि सम नहिं कोई।

दुखप्रद साधन सकल लखे हम सब विधि टोई ॥
करु नामामृत पान वृथा त्रय तापनि जरुना ।
प्रेमलता प्रभु छमहिं दोष दुख सब मन डरुना ॥११०॥
काशी बसि श्री नामबल, शंकर दीनदयाल ।
सुगति देत सम सर्ब हित, नाशि मोह मय जाल ॥
नाशि मोह मय जाल ख्यालही करत कृतारथ ।
तिन्हि सम नाम प्रभाव अपरको जान यथारथ ॥
क्रियो गरल जेहि पान नाम जपि त्रिभुवन त्राशी ।
प्रेमलता निशि दिवस रटहिं शिव नाम सु काशी ॥१११॥
काया काशी क्षेत्र है, शिव स्वरूप विश्वास ।
श्रद्धा गिरिजा तत्व गुण, प्रकृती दासी दास ॥
प्रकृती दासी दास भाव भैरव बलवाना ।
भक्ति देवसरि धार भजन गणपती सुजाना ॥
रामनाम ऐश्वर्य प्राण जीवन प्रण छाया ।
प्रेमलता आधार जानि शिव रटहिं निकाया ॥११२॥
काया कञ्चन की नहीं, देखहु हृदय विचारि ।
कवन वस्तु यामें भली, लीजे नयन निहारि ॥

लीजे नयन निहारि करौ तेहि पर अभिमाना।
निशिदिन जुगवत रहौ भजे विनु श्री भगवाना॥
छण भंगू दुख रूप मूढ़ यह तनु श्रुति गाया।
प्रेमलता जेहि लागि बटोरहु पाप निकाया॥११३॥
काया काशी मध्यबसि, सह श्रद्धा विश्वास।
रटै नाम सियराम मुख, छाँड़ि आनकी आश॥
छाँड़ि आनकी आश पुज्य पद पावै सोई।
नाम विमुख तनु नर्क फर्क इसमें नहिं कोई॥
जीवत मरे समान मूढ़ ते जग निर्दाया।
प्रेमलता नहिं रटत नाम जो धरि नरकाया॥११४॥
भालहिं तिलक सु छाप गर, कंठी मुख सियराम।
टोप शीस गर गूदरी, शुचि सुतंत्र निष्काम॥
शुचि सुतंत्र निष्काम बाम अँग दाम न परसहिं।
दृढ़ ब्रत भजन अधार विषय ते मन आकर्षहिं॥
नवहिं तिन्हैं ब्रह्मादि निरखि भय होत सुकालहिं।
प्रेमलता यह जानि करिय नित तिलक सुभालहिं॥११५॥
लागै लय सियराम ते, भागै भय ततकाल।

बागै दर दर फिरि न नर, जागै तजि जग ख्याल ॥
जागै तजि जग ख्याल लाल ललि चरित सु पागै ।
दागै भुज धनु बाण तिलक मुद्रनि अनुरागै ॥
खागै बहुरि न अन्त जरै नहिं तनु दुख आगै ।
प्रेमलता सोइ साधु जाहि प्रिय नाम सु लागै ॥११६॥
चाखै जीह सुनाम रस, भाखै अपर न बात ।
राखै कपट न दम्भ उर, ताखै धरि भ्रम ब्रात ॥
ताखै धरि भ्रम ब्रात खात पीवत तजि माखै ।
रटै नाम इकतार तर्कि अनरथ अभिलाखै ॥
आँखै खोलि निहारि उड़ैगी एक दिन खाखै ।
प्रेमलता तनु केर बिना नामामृत चाखै ॥ ११७ ॥
रटिये श्री सियराम नित, सवालाख करि नेम ।
सटिये सन्त समाज शुचि, प्रगटइ उर पर प्रेम ॥
प्रगटइ उर पर प्रेम छेम अति अनुपम पैहो ।
प्रथम भोगि कछु विपति बहुरि सुख सिन्धु समैहो ॥
सुर दुर्लभ तनु पाय बेगि जग भगते हटिये ।
प्रेमलता बय जात समुझि मन नाम सु रटिये ॥११८॥

रसना पीउ सु नाम रस, सब रस फीके जानि ।
दशदिन की जिँदगानि जग, कही कृपा करि मानि ॥
कही कृपा करि मानि बानि परिहरु बकवादी ।
पिटवावति है मूड़ बोलि कटु बे मरयादी ॥
रटु रंडी सियराम चहै जो मुख में बसना ।
प्रेमलता नतु काटि बहैहौं बाहिर रसना ॥ ११९ ॥
कसिये रसना लिङ्ग तनु, इन्द्री मन बरिबण्ड ।
क्षुधा प्यास निद्रादि ते, देत रहीजै दण्ड ॥
देत रहीजै दण्ड सङ्ग सन्तनि कर कीजै ।
सावधान चित सद्य युगल नामामृत पीजै ॥
नामरटन जहँ होय तहाँ प्रमुदित नित बसिये ।
प्रेमलता जो चहहु परम सुख रसनहिं कसिये ॥१२०॥
मर्तें समय न चलय सँग, तन धन घर सुत बाम ।
तिन्हि के हित प्रभु विमुख ह्वै, नाशत जन्म ललाम ॥
नाशत जन्म ललाम रटत नहिं नाम अभागी ।
दुख पैहै परिणाम अबहिं मति भोगनि पागी ॥
जागु जागु मन मूढ़ नेह करु सुचि सिय बर्तें ।

प्रेमलता अबिलम्ब देर नहिं लागे मतैं ॥ १२१ ॥
मतैं मतैं तजत नहिं, अपने बश धन धाम ।
वृद्ध भयेउ पर मन्दमति, भोगत बाम ललाम ॥
भोगत बाम ललाम काम बश अस अज्ञानी ।
सुन्दर नर तनु पाय भजत नहिं सारँग पानी ॥
नख शिख सने बिकार सदा त्रय तापनि जतैं ।
प्रेमलता सहि विपति अन्त कूकर ज्यों मतैं ॥ १२२ ॥
मौनी वनि बैठो कहा, बगुला ध्यान लगाय ।
रटत न सीताराम कस, मानुष देही पाय ॥
मानुष देही पाय हाय जनि व्यर्थ नशावै ।
करि आयो का कौल करत क्या तेहि बिसरावै ॥
करु सु उचारण नाम पाइहै नतु पशु योनी ।
प्रेमलता सिख मानि अजहुँ तजि हठ सठ मौनी ॥१२३॥
बनि बनि के विगरे सकल, बिगरे बनत न फेरि ।
चारि दिना की चाँदनी, फिरि वहि राति अँधेरि ॥
फिरि वहि राति अँधेरि तदपि नहिं समुझत प्रानी ।
देखत जगकी दशा सुनत बहु कथा कहानी ॥

कनक कशिपु हिरण्याक्ष कंश रावण भये धनि धनि ।
प्रेमलता दिन तीनि गये पुनि कितनेउ बनि बनि ॥१२४॥
बढ़ि बढ़ि के घटि घटि गये, बड़े बड़े भूपाल ।
तेरी तौ गिनती कहा, परयो काल के गाल ॥
परयो काल के गाल काल जिन्हि खाटी बाँधा ।
स्ववश किये त्रैलोक उठायो सब जग काँधा ॥
सुर सम सुर सिय सङ्ग रमेउ नभ याननि चढ़ि चढ़ि ।
प्रेमलता बेपता भयेउ तेउ भट महि बढ़ि बढ़ि ॥१२५॥
मेरी मेरी करि मरे, मायहि बहु अज्ञान ।
जोरि जोरि धरि धरि गये, भोगेउ दिये न दान ॥
भोगेउ दिये न दान मान मद बश अस भूले ।
हम हम करि भये बूढ़ मूढ़ प्रभु पद प्रति कूले ॥
कियो न सन्तनि सङ्ग द्रवेउ नहिं दुखियनि हेरी ।
प्रेमलता भरि जन्म मरे कहि मेरी मेरी ॥१२६॥
भाषत ज्ञान सु ध्यान बहु, मन भोगनि आशक्त ।
शुभ कृत करै सु भाव विनु, लोक दिखौआ फक्त ॥
लोक दिखौआ फक्त भक्त बनि जगतहि बञ्चै ।

जेहि तेहि विधि करि यतन मन्दमति माया सञ्चै ॥
खरचत छाती फटै कपट हरि गुरु तेउ राखत ।
प्रेमलता अति चतुर स्वार्थ बिनु बात न भाषत ॥१२७॥
तन की चिन्ता मति करै, धन जिन धरै बटोरि ।
श्री सियराम सु नाम रटु, जग भग ते मुख मोरि ॥
जग भग ते मुख मोरि जोरि नाते सिय बरते ।
पहिरि फकीरी वेष छाँड़ि घर बचि यम डरते ॥
सन्त सङ्ग रहि मुदित सेउ गुरु हठ तजि मनकी ।
प्रेमलता सब भाँति करहिं सो चिन्ता तनकी ॥१२८॥
चिन्ता तो तू करत बहु, पूरी परत न एक
चिन्तामणि श्री नाम बिनु, पावत कष्ट अनेक ॥
पावत कष्ट अनेक मोह बश बूझत नाँहीं ।
विमल ज्ञान बैराग रहित रत भोगनि माँहीं ॥
नाश्यो जन्म सु बादि भजत नहिं सिय पिय मिन्ता ।
प्रेमलता मन मूढ़ करत बहु बादि कुचिन्ता ॥१२९॥
कुटिया सन्त विरक्त कहँ, नष्ट भ्रष्ट करि देइ ।
जगको दास बनाइ के भजन भाव हरि लेइ ॥

भजन भाव हरि लेइ इष्ट सो विमुख करावै ।
लोभ मोह छल कपट बढ़ै उर झूठ कहावै ॥
नाशै शील शनेह देह भरि होय न छुटिया ।
प्रेमलता रटु नाम त्यागि जग उटिया कुटिया ॥१३०॥
कुटिया बैरिनि साधु की, देखौ हृदय विचारि ।
बहुविधि नाच नचावती, जार गरे में डारि ॥
जार गरे में डारि देह सम्बन्धी घेरैं ।
साधू आवैं द्वार तिन्हैं उत्तर दै फेरैं ॥
तस्कर अति दुख देत लेत धन हरि गहि चुटिया ।
प्रेमलता सब भाँति लखी हम बैरिनि कुटिया ॥१३१॥
कुटिया कबहुँ न बाँधिये, रहिये जहँ तहँ सोइ ।
रटिये श्री सियराम नित, जग सम्बन्धहिं खोइ ॥
जग सम्बन्धहिं खोइ सङ्ग सन्तनि कर करिये ।
प्रमुदित मन बशुयाम पेट जेहि तेहि विधि भरिये ॥
रखिये खप्पर टोप कमंडल गुदरी मुटिया ।
प्रेमलता महिमाँहिं अटिय नित सुख तजिकुटिया ॥१३२॥
कुटिया बाँधी ते मरे मरे करत तेहि आश ।

जीवत सोइ जो उभय तजि, रटत नाम प्रति स्वास ॥
रटत नाम प्रति स्वास बैठि सीतल तरु छाँहीं ।
जेहि तेहि विधि भरि उदर रहै प्रमुदित मन माँहीं ॥
निष्कामी निर्मोह पास नहिं कौड़ी फुटिया ।
प्रेमलता ते बचे कुटे जिन बाँधी कुटिया ॥ १३३ ॥
कुटिया बाँधी ईंट की खूब सफाई दार ।
चहुँदिशि बिरची बाटिका ठगन हेतु संसार ॥
ठगन हेतु संसार कछुक भक्ती फैलाई ।
लग्यो माँगने भीख साधु सेवा हित जाई ॥
जमा करै धन अन्त कहै चोरनि सब लुटिया ।
प्रेमलता बनि दीन दिखावत सन्तनि कुटिया ॥१३४॥
सम्पति सकल लुटाइदे, सन्तन ते करि प्रेम ।
चट पट लावै बार जनि, रटु सियराम सनेम ॥
रटु सियराम सनेम बेचि घर पत्थर ईंटा ।
चौखट कड़ी किवार बसन भूषण लखि बीटा ॥
तब जानैं तोइ मर्द फकीरी लै भजु दम्पति ।
प्रेमलता परिणाम समुझि सँग चलै न सम्पति ॥१३५॥

काया माया रचित ये, सूक्षम कारण थूल।
भोग भोगिता विषय सब, स्वप्न सरिस प्रद शूल॥
स्वप्न सरिस प्रद शूल भोग मिथ्या फल साँचा।
तेहि महँ अरुझ्यो जीव फिरत बहु योनिनि नाँचा॥
जानै जब लखि परै कपट सतगुरु की दाया।
प्रेमलता पर रूप पाय त्यागै तिहुँ काया॥ १३६॥
जैसे स्वप्ने बाम नर, भोगी कंठ लगाय।
बीर्य पात होइ जागि जब, मनहीं मन पछिताय॥
मनही मन पछिताय न्हाय उठि वस्त्रनि धोवै।
बहु बिधि मानि गलानि बहुरि निज सय्या सोवै॥
को भोगी कहँ बाम सह्यो को दुख लखि तैसे।
प्रेमलता जग जाल झूठ पर दुख प्रद जैसे॥१३७॥
बागै नाना योनि में, मोह निशा पगि जीव।
हम हम करि बहु सहत दुख बिसरि रूप निज पीव॥
बिसरि रूप निज पीव सुभाशुभ कर्म कमावै।
तेहि कारण परिणाम करै जस तस फल पावै॥
उगै उरसि गुरु ज्ञान भानु निद्रा निशि भागै।

प्रेमलता प्रभु कृपा जगै जिउ बहुरि न बागै ॥१३८॥
औगुननिधि मोहि जानि जिय, स्वामिनि करिय न दूरि।
अधम उधारन बिरद, तव, बदहिं वेद सुख मूरि॥
बदहिं वेद सुख मूरि करहु सो सुरति सयानी।
अपनाइय करि कृपा लाड़िली लखि श्रुति बानी॥
कहहिं सन्त सुचि सुखद सरल सिय पिय तेउ सौगुन।
प्रेमलता स्वपनेउ न निहारति जो जन औगुन ॥१३९॥
बिधि निषेध दोउ कर्म तजि, दुखप्रद विश्व विनोद।
प्रेमलता सुख नींद अब, सोवत सिय की गोद॥
सोवत सियकी गोद मोद मङ्गल नित नूतन।
बुधि चित अन्तः करन भयेउ अस्थिर चञ्चल मन॥
उग्यो हृदय रबिनाम दुरे कामादिक सिधि निधि।
गुरु प्रसाद सियलाल शरण लहि प्रमुदितयहि विधि।१४०।
श्रद्धा की माधूकरी, बिनु दावे की ठौर।
मोटी गुदरी टोप शिर, फर्क सदा सब तौर॥
फर्क सदा सब तौर और कछु चाहत नाँहीं।
कर करवा कोपीन नाम रटना मुख माँहीं॥

तिलक छाप संयुक्त फिरै ज्यों अङ्कित बरधा ।
प्रेमलता मन मुदित सकल विधि प्रभु पद शरधा ।।१४१।।
सोवहिं कहिं पावहिं कहूँ, कहुँ बैठहिं मन मस्त ।
ठहरत कतहुँ न अधिक महि, रहहिं लगावत गस्त ।।
रहहिं लगावत गस्त दाग नहिं लागत कोई ।
रटहिं नाम सियराम अहरनिशि भव भय खोई ।।
परहित मन बच कर्म अहित सपनेउँ नहिं जोवहिं ।
प्रेमलता सोइ सन्त सदा प्रभु बल सुख सोवहिं ।।१४२।।
बानो पहिरे साधुको, करै नीच को कर्म ।
ताहि सिखावन दीजिये, डरिय न जानि अधर्म ।।
डरिय न जानि अधर्म उचित अनुचित नहिं करिये ।
जो न सुनै उपदेश मोह बश तौ परिहरिये ।।
रहिये सदा सचेत समझि गुण औगुन सानौं ।
प्रेमलता विधि बिभव भूलिये जनि लखि बानौं ।।१४३।।
जग के रुष्टे का भयो, जो तुष्टे सियराम ।
चूमैंगे अंगुष्ट सब, आदि मध्म परिणाम ।।
आदि मध्य परिणाम नाम जापक जन केरो ।

लोक चतुर्दश पूज्य पर्म सो जेहि प्रभु हेरो ॥
तकहिं तमकि किमि ताहि जीव जे चेरे भगके ।
प्रेमलता बशुयाम सहायक स्वामि सु जगके ॥१४४॥
पक्का का चुनवावते, शिरपर तक्का काल ।
क्षणमें फक्का मारिहैं, भूले हौ किस ख्याल ॥
भूले हौ किस ख्याल मोरि मुख नाम रटीजै ।
करि आये जो कौल उदर में सो फुर कीजै ॥
जेहि न सहौ परिणाम कठिन यम गण के धक्का ।
प्रेमलता सोइ करहु बेगि यह सम्मत पक्का ॥१४५॥
सच्चा सन्त बिरक्त जो, रच्चा श्री सियराम ।
जग चच्चा तजि एक रस, बसै विलग बशुयाम ॥
बसै बिलग बशुयाम बिषय भोगनि ते बच्चा ।
अभय अलोभ अकाम रटै मुख नाम निखच्चा ॥
कच्चा करै न कर्म भर्म बश फिरै न नच्चा ।
प्रेमलता सोइ साधु गुरुमुखी आशक सच्चा ॥१४६॥
हितकी बात न मान जो, जानहु सो नर बाम ।
परिहरिये तेहि स्वान सम, रटिये नाम ललाम ॥

रटिये नाम ललाम सुद्ध सन्तन सँग करिये ।
अबिचारी उन्मत्त हिन्सकी इन्ह सन डरिये ॥
बिमुखनि कर यह चिन्ह बात करिहैं जित तितकी ।
प्रेमलता गत ज्ञान सीख नहिं सुनिहैं हितकी ॥१४७॥
खीझहिं सठ हित की कहत, अनहित सों अति हेत ।
तेहि लगि पावत कष्ट बहु, तदपि न चेत अचेत ॥
तदपि न चेत अचेत मिल्यो नहिं गुरू सुजाना ।
कियो न भगवत भजन मोह बश फिरै भुलाना ॥
उर न ज्ञान वैराग बिमल प्रभु केहि बिधि रीझहिं ।
प्रेमलता मनमुखी मूढ़ सुनि हित की खीझहिं ॥१४८॥
जानैं का सियराम रटि, प्रभु पद विमुख गवाँर ।
पाखंडी मद मोह रत, रहित सु ज्ञान विचार ॥
रहित सु ज्ञान विचार सार प्रिय लागत नाँहीं ।
चलनी ज्यों भुस राखि चून पटकै महि माँहीं ॥
त्यों दम्भिनि कर समझ गौण कहँ मुख्य बखानैं ।
प्रेमलता शुचि सन्त भेद यह कोउ कोउ जानैं ॥१४९॥
जितने साधन लोक में, लघु दीरघ समुदाय ।

रामनाम के सम नही, कहत सन्त श्रुति गाय ॥
कहत सन्त श्रुति गाय कहाँ राई कहँ परबत ।
कहँ अमिरत कर स्वाद कहाँ चीनी कर सर्वत ॥
हिमकर सम नहिं नखत कहै कोउ यद्यपि कितने ।
प्रेमलता त्यों नाम निकट लखि साधन जितने ॥१५०॥
रटते रटते नाम नर, राम रूप होइ जाय ।
नामी के गुण गण विमल, तेहि उर निबसहिं आय ॥
तेहि उर निबसहिं आय नेमकरि सम्बत द्वादश ।
रटै बिलग बशुयाम काम तजि विषय भोग रस ॥
आगम निगम लखाय जाय कढ़ि दुर्मति घटते ।
प्रेमलता प्रभु अंश होयँ बस नाम सु रटते ॥१५१॥
घटके पट जब लगि नहीं, खुलत कठिन दुख रूप ।
तब लगि अनरथ करत बहु, जीव परे तम कूप ॥
जीव परे तम कूप मोहबश सेवत बामहिं ।
नाना बिधि दुख सहत भजे बिनु श्री सियरामहिं ॥
रटत न नाम उदार बिषय भोगनि महँ अटके ।
प्रेमलता गुरु विमुख खुलैं केहि विधि पट घटके ॥१५२॥

तीनों पन हमने लखे, तिन्ह कर सुनहु हवाल।
पराधीन अति मृदुल अँग, रहित ज्ञान रत ख्याल॥
रहित ज्ञान रत ख्याल बाल पन यहि बिधि बीतो।
ज्वानी सबल सुतन्त भये पर मनमथ जीतो॥
भजेउ न श्री सियराम होइ युवतिनि रँग भीनों।
प्रेमलता अब जरा ग्रस्यो तनु प्रद दुख तीनो॥१५३॥
ज्वानी में कोउ कोउ करत, भजन ध्यान बड़ भाग।
अनरथ रत बहु होत जन, बिगत ज्ञान बैराग॥
विगत ज्ञान बैराग पाप भरि उदर कमावत।
बाल बृद्ध दोउ बयस भगति पथ काम न आवत॥
अस विचारि निज हानि लाभ जिय जानि सु ज्ञानी।
प्रेमलता प्रभु भजहिं अहर निशि पाइ सु ज्वानी॥१५४॥
जीनों है कितनेक दिन, तेहि पर अकड़े जाउ।
काल व्याल गों तकि रह्यो, दारुण का हरखाउ॥
दारुण का हरषाउ पाउ पल में जिउ लैहैं।
मन क्रम बचन विचारि कर्म जस तस फल दैहैं॥
अइहैं तहाँ न काम धाम धन युवती तीनों।

प्रेमलता सियराम नाम रटु लखि लघु जीनों ॥१५५॥
जब ते धारी देह यह, तबते करहु बिचार ।
कितने स्वासा चलि गये, बिना भजन सुख सार ॥
विना भजन सुखसार पार भव केहि बल जैहौ ।
सुर दुर्लभ तनु पाइ कहा तेहि ब्यर्थ नशैहौ ॥
अजहुँ रटो सियराम नेह नाते तजि सबते ।
प्रेमलता प्रभु छमहिं मोह बश विगरिउ जबते ॥१५६॥
रगड़ा लागोही रहै, टूटै नहिं बसु याम ।
केवल नामै नाम इक, अपर न कौनिउँ काम ॥
अपर न कौनिउँ काम धाम धन युवती वेटहि ।
परिहरि रटिये नाम मुदित जहँ तहँ भरि पेटहि ॥
रटत रटत अनयास छूटि जैहै जग झगड़ा ।
प्रेमलता युत नेम नामही रटु करि रगड़ा ॥१५७॥
लागा रहु सियराम ते, पागा रहु नित नाम ।
जागारहु संसार ते, भागा रहु बद काम ॥
भागारहु बद काम भजन पथ आगा जाना ।
दागारहु धनु बान पहिरि वैष्णव कर बाना ॥

नागा होइ न नेम नामकर टुटै न तागा।
प्रेमलता जिमि जरा रहै मकरी ते लागा॥ १५८॥
मंगल मोद उछाह नित, तिनहिं जे रत सियराम।
भुक्ति मुक्ति वर भक्ति गुण, संग रहहिं वशुयाम॥
संग रहहिं वशुयाम नाम जापक जन केरे।
पुरहिं सकल मनकाम सर्ब सुख ताके चेरे॥
कबहुँ न आवति हानि बसै घर अथवा जंगल।
प्रेमलता जहँ रहै तहाँ नित नूतन मंगल॥ १५९॥
आसन करिय बुहारि नित, अछत दिवस पट झारि।
जीव जन्तु महि मलिन शुचि, लीजै नयन निहारि॥
लीजै नयन निहारि पात्र जल ढाँकि धरीजै।
निशि भोजन परिहरिय नीर अनछनों न पीजै॥
जल थल जहाँ न विमल बहुत तहँ करिये बासन।
प्रेमलता रत नाम दिवस निशि दूसर आश न॥१६०॥
पूरण किरपा नामकी, रञ्चौ कमती नाँहिं।
कैसे ते कैसे कियो, समझि देखु मन माँहिं॥
समझि देखु मनमाहिं कागते हंस बनायो।

सब जग पूजत पायँ होत सब विधि चित चायो ॥
विचरत अवनि स्वतंत्र लोक लज्जा करि चूरण ।
प्रेमलता रहु मुदित जानि प्रभु किरपा पूरण ॥१६१॥
किरपा में त्रूटी कहा, रे मन मूढ़ बिचार ।
सादर अभिमत लहत सब, चहुँदिशि नयन निहार ॥
चहुँदिशि नयन निहार शोक दाता नहिं कोई ।
साधु साधु सब कहत समुझ का कारण सोई ॥
उभय लोक आनन्द परम पद पूजत निरपा ।
प्रेमलता रटु नाम जानि प्रभु पूरण किरपा ॥१६२॥
पापी मन सियराम तू, बिसरै जनि छण एक ।
रटु निशिबासर छाँड़ि छल, करि सु नेम दृढ़ टेक ॥
करि सु नेम दृढ़ टेक बेष वैश्नव कर सजिकै ।
करु सन्तनि सतसंग मोह मानादिक तजिकै ॥
सुर दुर्लभ तनु पाइ व्यर्थ जनि नाशि प्रलापी ।
प्रेमलता प्रभु विमुख बहुरि पछितैहै पापी ॥ १६३ ॥
जापी नाम कृपाल के, सुख पैहैं कलिकाल ।
अपर रोइहैं पीटि शिर, जे भूले बहु ख्याल ॥

जे भूले बहु ख्याल करम कोल्हू में पिरिहैं।
रटे विना सियराम नाम परपद तेउ गिरिहैं॥
श्रुति सन्तनि सिद्धान्त नाम बिनु तरहिं न पापी।
प्रेमलता अस जानि होउ सियराम सु जापी॥१६४॥
नामै इक आधार कलि, रटै सो उतरै पार।
कर्मी धर्मी पूजका, बूड़ेंगे मझधार॥
बूड़ेंगे मझधार यमनि के सहिहैं धक्का।
कबहुँ न पैहैं चैन नाम विनु यह मत पक्का॥
कोटिन करै उपाय रटै विनु नाम ललामै।
प्रेमलता सुख कहाँ सुमिरि यह जानि सु नामै॥१६५॥
तजिये योग समाधि तप, सजिये दृढ़ विश्वास।
भजिये श्री सियराम नित, करि सु नेम अभ्यास॥
करिसु नेम अभ्यास आश ईर्षादि विहाई।
लय लगाय वशुयाम बैठि येकान्त सु जाई॥
यहि विधि रटिये नाम खूब काहुइ नहिं लजिये।
प्रेमलता धन धाम बाम सुत हित जग तजिये॥१६६॥
ममता परिहरि लोक की, रटिये श्री सियराम।

बिलग बैठि विश्वास सजि, लय लगाय बशुयाम ।।
लय लगाय बशुयाम काम कछु और न कीजै ।
मन बच क्रम दृढ़ नेम सदा नामामृत पीजै ।।
तब पैहौ सुख स्वाद उपजिहै अनुपम ममता ।
प्रेमलता प्रभु मिलैं रीझि लखि जन निरममता ।।१६७।।
बामैं दामैं कामहीं, धामैं गामैं त्यागि ।
रामैं चाहैं मिलन जो, नामैं रटि नित जागि ।।
नामैं रटि नित जागि टेक चातक की धरि उर ।
मिलिहैं प्रभु लखि प्रेम कहत श्रुति सन्त वचन फुर ।।
पैहौ जन्म सु लाभ मुदित रहिहौ बशुयामैं ।
प्रेमलता पर अगम नाम सुख मनमुख बामैं ।।१६८।।
जापी श्री सियराम के, पावत जस आनन्द ।
अमरनिहूँ कहँ अगम अति, सो रहस्य सुख कन्द ।।
सो रहस्य सुख कन्द लखै सोइ रटै जो नामैं ।
सह श्रद्धा बिस्वास अहर निशि तजि धन बामैं ।।
मागि खात मन मुदित फक्त सियराम अलापी ।
प्रेमलता प्रभु रूप सन्त सोइ नाम सु जापी ।।१६९।।

कादरता ते रटत बहु, लोग दिखाऊ नाम।
वेष बनाये उदर हित, लोलुप सेवहिं चाम ॥
लोलुप सेवहिं चाम काम इन्द्रिनि के चेरे।
घर घर फिरत रिरात विषय भोगनि के प्रेरे ॥
सन्तनि सन वैराग मिलै धनि कनि ते सादर।
प्रेमलता केहि भाँति लहै सुख सो नर कादर ॥१७०॥
नामैं रटत प्रमाद युत, आलश दम्भ समेत।
चिन्तत नहिं निज रूप पर, नामसु अर्थ समेत ॥
नाम सु अर्थ समेत तजत नहिं दश अपराधनि।
रञ्च न ज्ञान विचार फिरहिं जग ठगत साधु बनि ॥
ते किमि लहहिं सु तत्व लखैं जे पर धन बामैं।
प्रेमलता हित उदर रटैं जेहि तेहि विधि नामैं ॥१७१॥
जानैं जो श्री नाम की, महिमा अकथ अपार।
तौ केहि कारण दीन बनि, डोलैं द्वारहि द्वार ॥
डोलै द्वारहि द्वार सहै नित विपति अनेरी।
बिरचहिं घर अस्थान बखानहिं मेरी मेरी ॥
नाम प्रभाव महान रटत काटै भव भानैं।

प्रेमलता प्रभु रूप होइ जो नामैं जानैं ॥ १७२ ॥
जानैं चाहै गूढ़ गति, परम रहस अस्पष्ट ।
श्री सियराम सु नाम रटु, सवालक्ष करि कष्ट ॥
सवालक्ष करि कष्ट वर्ष द्वादश लय लाई ।
लोक लाज धन धाम बाम तजि मान बड़ाई ॥
सावधान मन मारि बैठि एकान्त ठिकानैं ।
प्रेमलता सोइ सन्त अवसि परमातम जानैं ॥ १७३ ॥
मनमुखिया जे आलसी, कपटी कुटिल कठोर ।
भोजन के हुशियार अति, राम भजन के चोर ॥
राम भजन के चोर मोरवत बैन उचारैं ।
भक्तैं भक्ता स्वच्छ वेष वैष्णव कर धारैं ॥
सपनेउँ होयँ न सुखी रहैं दोउ लोकनि दुखिया ।
प्रेमलता प्रभु रूप लहैं ते किमि मन मुखिया ॥ १७४ ॥
टोपा गुदरी धारि अँग रटत न श्री सियराम ।
तनु पोष सोवै बकै, जानहु सो नर बाम ।
जानहु सो नर बाम धाम धन तजि का कीन्हा ।
दोउ दिशि ते गा मूढ़ मोह बश प्रभुहिं न चीन्हा ॥

रंच न ज्ञान बिचार भरयो उर कपटरु कोपा ।
प्रेमलता विनु भजन बृथा गुदरी अरु टोपा ॥१७५॥
खावै प्रभु प्रद रिजक नित, गावै नहिं सियराम ।
पहिरि गूदरी टोप शिर, सोवै निमकहराम ॥
सोवै निकम्म हराम नाम परम्हंश धरायो ।
भजन हींन गत लाज वृथा बर वेष बनायो ॥
निज पर रूप न बोध गाल बहु भाँति बजाव ।
प्रेमलता अज्ञान अधिक सोवै अरु खावै ॥ १७६ ॥
बानों बाँधि विरक्त को, जगतहिं ठगि ठगि खात ।
भोगनि में हुशियार अति, भजन करत अलसात ॥
भजन करत अलसात जात यम पुर मरि सोई ।
पावत कठिन कलेश साहि जहँ करै न कोई ॥
लख चौराशी योनि फिरै पुनि ऐंचो तानो ।
प्रेमलता गुरु विमुख लजावै जो प्रभु बानों ॥ १७७ ॥
गुरु की कानि न इष्ट डर, मानहिं मनमुख मूढ़ ।
जो मन माने करहिं सोइ, सेवहिं साधु न बूढ़ ॥
सेवहिं साधु न बूढ़ गूढ़ गति ते नहिं पावत ।

खर कूकर सम बयस वृथा बकि बाद नशावत ।।
मन मलीन शुचि अंग बात नहिं भाषे उरकी ।
प्रेमलता उन्मत्त सीख सुठि सुनत न गुरुकी ।।१७८।।
तनकी चिन्ता में नश्यो, उभय लोक आनन्द ।
भोगेउ बाम न भजेउ हरि, मन बच क्रम मतिमन्द ।।
मन बच क्रम मति मन्द, फन्द परि इन्द्रिनि केरे ।
घर तजि पोसेउ उदर कबहुँ सिय बर नहिं हेरे ।।
रटेउ न धरि दृढ़ टेक नाम ज्यों चातक घन की ।
प्रेमलता मनमुखी करै नित चिन्ता तनकी ।। १७९ ।।
सुनता नहिं गुरु सीख शुचि, गुनता नहिं उपदेश ।
चुनता नहिं नामादि गण, भुनता कठिन कलेश ।।
भुनता कठिन कलेश बुने इत सोइ उत लुनता ।
घुनता कर्म कुकाठ अन्त तेहि लगि शिर धुनता ।।
करत मनमुखी भजन भस्म महँ, जनु घृत हुनता ।
प्रेमलता शुचि सन्त सिखावन विमुख न सुनता ।।१८०।।
बगुला होय न हंश कहुँ, कोयल काग न होय ।
खल न होय शुचि साधु तिमि, कोटि करै जो कोय ।।

कोटि करै जो कोय खरी नहिं होत सु गाई ।
सन्त न होय असन्त मौत तिमि होइ न माई ॥
मनमुख होइ न मुक्त कबहुँ गिरि चढ़ै न पगुला ।
प्रेमलता तेहि भाँति हंश बर होय न बगुला ॥१८१॥
दीजै सतगुरु कर हियो लीजै नाम निदेश ।
कीजै विलम्ब न रटिय झट छीजै बयस रसेश ॥
छीजै बयस रसेश बेष वैष्णवी ठटीजै ।
पीजै नाम सु सुधा अहर निशि प्रमुदित जीजै ॥
मीजै केहि लगि देह खेह यह जानि पतीजै ।
प्रेमलता तजि कपट काढ़ि मन गुरु कर दीजै ॥१८२॥
चरखी ज्यों बारूद की, जरे लगावत आगि ।
त्यों सियराम सुनाम रटि, सकल दुराग्रह त्यागि ॥
सकल दुराग्रह त्यागि गगन जिमि चढ़ै हवाई ।
पीवहिं मिलि तिमि जीव वृथा क्यों देर लगाई ॥
हरषि हरषि रटु नाम विषय ते मन आकरषी ।
प्रेमलता बय जात चली जस चालै चरखी ॥ १८३ ॥
खूबइ रटु सियराम मुख, ऊबइ तजि धरि टेक

ललकि ललकि अनुरागयुत, परि हरि आश अनेक ॥
परि हरि आश अनेक एक नामैं गहि लीजै ।
तजिय न कौनिउँ काल ख्यालबहु चित्त न दीजै ॥
कीजै सफल सुजन्म सुमिरि प्रिय नाम अजूबइ ।
प्रेमलता परिणाम पाइहै सुख सिधि खूबइ ॥ १८४ ॥
खाली रहै न जीभ मुख, कबहूँ बिनु सियराम ।
बैठे ठाढ़े चलत बा करत कौनहूँ काम ॥
करत कौनहूँ काम नाम अभिराम न छूटै ।
गफलत खाउ न रञ्च काल आयू धन लूटै ॥
चलि आवति नित निकट मृत्यु अति भय प्रद काली ।
प्रेमलता रटु नाम निरन्तर तजि जग खाली ॥ १८५ ॥
काली खायो सकल जग, ऊँच नीच बड़ छोट ।
बचे सन्त कोउ लीन जो, नाम रटन की ओट ॥
नाम रटन की ओट खोट खतरा तजि सारे ।
रटै निरन्तर जीह मारि मन बैठि किनारे ॥
प्रमुदित आठो याम नाम विनु रहत न खाली ।
प्रेमलता जग अमर भये सोइ भखे न काली ॥ १८६ ॥

पोथी पढ़ि पढ़ि का कियो, जो पर तत्व न चीन ।
बानी बोलै मोर की, करनी महा मलीन ॥
करनी महा मलीन कहावत पंडित ज्ञानी ।
दाम चाम सन प्रीति निर्दयी गुण अभिमानी ॥
बिषई बिगत विचार करै सब बातें थोथी ।
प्रेमलता विनु स्वाद भारवत लादे पोथी ॥ १८७ ॥
खाना पीना सोवना, यही सन्त का काम ।
मन आवै तौ बैठि सुख, सुमिरहिं सीताराम ॥
सुमिरहिं सीताराम मुदित मन कै महि माँहीं ।
बिचरैं परम स्वतंत्र शोक भय सपनेउँ नाँहीं ॥
असन वसन सनमान भेट लै चरण पुजाना ।
प्रेमलता प्रभु रूप सन्त जग वेद बखाना ॥ १८८ ॥
तन धन छण भंगुर समुझि, मन तजि तिन्हि कर मोह ।
सन्त शरण व्है नाम रटु, परानन्द सन्दोह ॥
परानन्द सन्दोह कोह कामादिक परिहरि ।
श्री सियबर पद पद्म ध्याय गुरु सेवा अनुसरि ॥
सुर दुर्लभ पद पाउ तोरि नाते जग ठग सन ।

प्रेमलता बिनु भजन दुखद खेही सम तन धन ॥१८९॥
गावैं गणिका सरिस सुठि, कथैं भाट इव छन्द।
दरशावैं बहु भाँति करि, नकल भाँड़वत मन्द॥
नकल भाँड़वत मन्द लोभ ममता मद सानें।
मन वच कर्म मलीन दीनमति इष्ट न जानें॥
गृह कारज आशक्त दिवस निशि धन हित धावैं।
प्रेमलता प्रभु विमुख निन्दकी ज्ञान सु गावैं॥ १९० ॥
चित्तहिं जीतै मारि मन, बैठि सुखासन मारि।
सन्मुख धरि लघु बस्तु तेहि, लखै निमेष विसारि॥
लखै निमेष बिसारि स्वाँस सँग रटै सुनामहिं।
अशन शयन मित बास सुथल करि रोकै कामहिं॥
जाति कपट मद दम्भ, तजै हिन्सा जग वित्तहिं।
प्रेमलता यहि भाँति नाम रटु जीति सु चित्तहिं॥१९१॥
गावहिं नाम सु पुलकि जे, पावहिं ते सियराम।
बिहरहिं संग प्रमोद बा, कञ्चनबन सुखधाम॥
कञ्चनबन सुखधाम बिलोकहिं दम्पति केली।
अद्भुत अकथ अखंड अनूपम नित्य निवेली॥

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनिन के मनहुँ न आवहिं ।
प्रेमलता तेहि लखहिं सन्त जे नाम सु गावहिं ॥१६२॥
नामहिं गावत होत सब, सुलभ सु गूढ़हु भेद ।
मायिक दिव्य परातपर, जो नहिं जानत वेद ॥
जो नहिं जानत वेद खेद विनु सन्त सु पावत ।
रटत रटत सियराम श्रृष्टि श्रष्टा उर आवत ॥
उघरत विमल सुनयन लखहिं जे प्रभु सुखधामहिं ।
प्रेमलता अघ ओघ नशहिं सब गावत नामहिं ॥१६३॥
पीवहिं सन्त सुजान कोइ, नामामृत वशुयाम ।
सुर सम भासहिं जगत ते पावहिं सब मनकाम ॥
पावहिं सब मनकाम दशोदिशि मंगल रासी ।
होत सु रिधि शिधि आय सकल चरणनकी दासी ॥
प्राकृत दिव्य विभूति भूलि सपनेउँ नहिं छीवहिं ।
प्रेमलता रस एक सदा नामामृत पीवहिं ॥ १६४ ॥
चाखहिं जे श्री नाम रस, गुरु सन लहि रट लाय ।
भाखहिं ते फिरि कवन विधि, ततसुख जो दरसाय ॥
ततसुख जो दरसाय सार मन गुण ते पारा ।

अमरनि हूँ कहँ अगम वेद जेहि नेति उचारा ॥
रसिक सन्त सोइ रहस मेलि सब साधन ताखहिं ।
प्रेमलता अनुभवहिं नाम रस जे जन चाखहिं ॥१६५॥
पुरुष विवेकी कोउ बचे, सत गुरु चरण प्रसाद ।
रटहिं नाम महि विचरहीं, मुदित भरे अहलाद ॥
मुदित भरे अहलाद बाद बकि जन्म न हारहिं ।
अनुछन आठोयाम वेद परतत्व विचारहिं ॥
प्रेमलता रस एक टेक चातक ज्यों टेकी ।
रँगे रंग सियराम पुरुष जे परम बिबेकी ॥ १६६ ॥
पुरुष बिवेकी एक रस, रँगे सुगुरु उपदेश ।
मायिक भोग कुरोग लखि, सुमिरहिं नाम परेश ॥
सुमिरहिं नाम परेश शेष जो रटहिं निरन्तर ।
वेद विरञ्चि गणेश गिरा गिरिजा शिवसंकर ॥
प्रेमलता सियराम नाम रटि एका एकी ।
गहहिं शील संतोष दोष तजि पुरुष विवेकी ॥१६७॥
पुरुष बिवेकी एक रस, काम कोह मद जीति ।
सतगुरु पद रज सेवत, सुमिरहिं नाम सप्रीति ॥

सुमिरहिं नाम सप्रीति नीति पथ डिगहिं न सपने ।
तन धन धरनी धाम बाम सुत गिनहिं न अपने ॥
प्रेमलता सियराम नाम रटि विधि गति छेकी ।
भरे भावना फिरहिं भूमि पर पुरुष विवेकी ॥ १९८ ॥
पुरुष विवेकी भूमि पर, विचरहिं पर सुख लागि ।
सुमिरहिं सीताराम नित, काम कोह मद त्यागि ॥
काम कोह मद त्यागि जागि जिय पर पद राचे ।
लखि तिन्हिकर आचरण जीव कलि कलुषनि बाचे ॥
आपु अमान अदोष भये शिर गुरुपद टेकी ।
प्रेमलता सुखरूप भूमि पर पुरुष विवेकी ॥ १९९ ॥
पुरुष विवेकी पाय कर, दीजे तन धन प्रान ।
कपट छाँड़ि सेवै सदा, तजि ममता मद मान ॥
तजि ममता मद मान ज्ञान नित नवल प्रकाशै ।
भासै युगल बिहार हाय उर सकल विनाशै ॥
प्रेमलता घनश्याम रूप लखि होउ सु केकी ।
सतगुरु साहिब रूप भूमि पर पुरुषविवेकी ॥ २०० ॥
नामी पैहैं नाम रटि, निर्विकार जन जोइ ।

16667

अनिर्बाच्य सुख ऊपजै, हास हिरासहि खोइ ॥
हास हिरासहि खोइ जपै निशि बासर नामहिं ।
तजै बासना भूरि लोभ छल कोहहिं कामहिं ॥
प्रेमलता समरत्थ शीस पर सतगुरु स्वामी ।
उर न शोच लवलेश नाम रटि पै हैं नामी ॥२०१॥
घर मन्दिर दोउ पींजरा, तिन्हि में इतना फेर ।
घर लोहा कर जानिये मन्दिर सोना केर ॥
मन्दिर सोना केर कीर इव जीव विचारे ।
फसे सहहिं दुख दुसह काल कर्मनि के मारे ॥
पराधीन अति दीन रहहिं दोउ साधु अधिकतर ।
प्रेमलता सोइ सुखी तजै जो दोउ मंदिर घर ॥२०२॥
मलहा ते मैथिल अधिक, खात पियत मद मास ।
दया रहित हिन्सा निरत, लिखे पढ़े इतिहास ॥
लिखे पढ़े इतिहास बड़े जाती अभिमानी ।
ज्ञान विचार न रंच कीन्ह मछरी कुल हानी ॥
करहिं न कबहुँ सुसंग सुनत नहिं उत्तम सलहा ।
प्रेमलता कह साँच भलो मैथिल ते मलहा ॥ २०३ ॥

साधू भयेउ न होत है, मैथिल उर सुचि ज्ञान ।
तजत मास मद यदपि मन, निवसत बानि पुरान ।।
निवसत बानि पुरान छानि जल कबहुँ न पावत ।
करत न काज बिचारि मारि बहु जीव नशावत ।।
बुध ज्यों कहै बनाय बात परपंच अगाधू ।
प्रेमलता रत पेट दिवस निशि मैथिल साधू ।। २०४।।
देखा देखी करहिं कछु, सुभाचर्ण भयमानि ।
होत न पै उर विमल वर, तजत न पिछली बानि ।।
तजत न पिछली बानि छानि कर पियत न पानी ।
जाति कर्म अरुझान कथैं बहु ज्ञान कहानी ।।
भजन भावना हींन निरत व्योहार विशेषी ।
प्रेमलता सियराम कहहिं कहुँ देखा देखी ।। २०५ ।।
मनहीं में निवसत सकल, पाप पुण्य सुख शोक ।
विधि निषेध मय कर्म जग, अगम निगम सबलोक ।।
अगम निगम सबलोक जीव जलनिधि महँ जैसें ।
अनायास प्रगटाहिं दुरहिं तन आमय तैसें ।।
जानत सन्त सुजान अन्य भूले अनधनहीं ।

प्रेमलता गति गूढ़ लखैं जो जीते मनहीं ॥ २०६ ॥
बरषत नीर छमाछम, बहत पवन उन्चास ।
कारी निशिनहिं निकट कोउ, परिगये सात उपास ॥
परिगये सात उपास जीव अदभुत महि डोलहिं ।
गरजहिं जलधर घोर भयानक निशिचर बोलहिं ॥
बड़े बड़े विषरूप सर्प बिच्छू अँग परसत ।
प्रेमलता तउ रटै नाम ज्यों वादर बरषत ॥ २०७ ॥
रेखा विधि करकी लिखी, कठिन कर्म के बीच ।
भोगे बिनु छूटै नहीं, ज्यों विनु धोये कीच ॥
ज्यों विनु धोये कीच करै जो कोटि उपाई ।
साफ न होय शरीर नीर विनु केहु विधि भाई ॥
नाम रटन वर बारि पाय त्यों कर्म कुलेखा ।
प्रेमलता धुइ जात अमिट ध्रुव विधिकर रेखा ॥२०८॥
रामायण आनन्द अरु, तुलसीकृत विख्यात ।
सुनत सुमङ्गल मोद प्रद, समुझत सुख सरसात ॥
समुझत सुख सरसात उभय सुभ गुण गण रासी ।
जानहिं सन्त सुजान मर्म कोउ पर्म उपासी ॥

भवनिधि तारक पोत भक्त हित जनु कामायण ।
प्रेमलता प्रभुरूप प्रगट जग युग रामायण ॥ २०९ ॥
आशा तृष्णा तर्क तजि, रटै नाम प्रति स्वास ।
सावधान मनते रहै, करि इकन्त थल बास ॥
करि इकन्त थल बास निबल इन्द्रिनि करि जीवै ।
निशि वासर लौ लाय जीह नामामृत पीवै ॥
अष्टयाम के चरित करै चिन्तन तजि आशा ।
प्रेमलता गुरु रूप ध्यान धरि जीतै आशा ॥ २१० ॥
जगते हटै न मूढ़ मन, रटै न श्री सियराम ।
कपट दम्भ पाखण्ड रत, लोलुप आठौयाम ॥
लोलुप आठौ याम फिरै स्वारथ बश धाया ।
दाम चाम सन प्रेम कबहुँ बिश्राम न पाया ॥
दियेन करते दान किये नहिं तीरथ पगते ।
प्रेमलता मैं मोर मरयो करि हट्यो न जगते ॥२११॥
मनते तजे न भोग अरु, धनते किये न धाम ।
तनसे सेये सन्त नहिं, जे सुमिरहिं सियराम ॥
जे सुमिरहिं सियराम सङ्ग नहिं तिन्हिकर कीन्हा ।

सुन्दर नर तनु पाय अधम आतम नहिं चीन्हा ।।
रटे न सीताराम कबहुँ लय लाय बचनते ।
प्रेमलता अति अग्य मोहबश भूल्यो मनते ।। २१२ ।।
परिका मन भोगन विषे, सूझै लाभ न हानि ।
पोथी पत्रा ज्ञान बहु, पढ़त न तजे कुबानि ।।
पढ़त न तजे कुबानि अरुझतौ दिन दिन जावै ।
ताको फल परिणाम भली विधि यमपुर पावै ।।
आवहिं काम न जहाँ धाम धन युवती लरिका ।
प्रेमलता पछिताय तहाँ मन भोगनि परिका ।। २१३ ।।
चाखै चाहै नामरस, रटु रसना इकतार ।
निन्दा अस्तुति जानि सम, विसरु न रहु हुसियार ।।
विसरु न रहु हुसियार चाल जनि दूजी गहिये ।
दुख सुख कर्म विभोग मानि एकै रस रहिये ।।
जेहि तेहि विधि निर्वाहि दिवस उर भर्म न राखै ।
प्रेमलता वशुयाम युगल नामामृत चाखै ।। २१४ ।।
भालहिं तिलक सु कंठि गर, मुख सियराम सुनाम ।
धनुष बाण अङ्कित भुजनि, बैष्णव चिन्ह ललाम ।।

वैष्णव चिन्ह ललाम दत्त निर्ममत अकामी।
सम दुख सुख अपमान मान भोगनि उपरामी॥
दयावन्त निष्प्रेह अगेही डरै न कालहिं।
प्रेमलता मन मुदित अटत दै तिलक सु भालहिं॥२१५॥
खटपट खटपट होत उर, चटपट सुनिये स्वामि॥
लीजै बेगि सम्हारि मोहि, कुमग परी अनुगामि॥
कुमग परी अनुगामि देहु नामहिं अवलम्बा।
श्यामल गोर दिखाय हरहु प्रभु दुखहिं कदम्बा॥
प्रेमलता उर निवसि हरो अब जग-मग अट सट।
युगल विहार बहार लखौं तजि मायिक खट पट॥२१६॥
गारी सहिये सन्त की, तजि धनिकन सतकार।
ते बोरहिं संसार में सन्त उतारहिं पार॥
सन्त उतारहिं पार मिलावहिं प्रीतम प्यारी।
सेवत सादर चरण वासना तजि संसारी॥
रटवावहिं सियराम नाम मुद मंगलकारी।
प्रेमलता सनमानि सन्त की सहिये गारी॥२१७॥
घरके नाते शोक प्रद, आदि मध्य अवसान।

सम्पति सुमतिउ में अवसि उपजावत अभिमान ॥
उपजावत अभिमान ज्ञान नहिं रहत एक रस ।
होत न विमल विवेक बोध मन साधुनि उर जस ॥
वाक्य ज्ञान अति निपुण कहहिं हम जन सियबर के ।
प्रेमलता पर दास बने मन बच क्रम घरके ॥२१८॥
घर में रहि को सुख लह्यो, कबहूँ अछत शरीर ।
एक जाय तो एक पुनि, आय चढ़े शिर भीर ॥
आय चढ़ै शिर भीर चैन मन चित्त न पावत ।
भजनउँ करत विशाल तदपि सन्तोष न आवत ॥
कथै ज्ञान वैराग्य लोभ की फाँसी गरमें ।
प्रेमलता पटु पहिरि नचत मर्कट ज्यों घरमें ॥२१९॥
घरमें रहि कहु को सकै, जन्म मरन ते छूटि ।
भजनउँ करत सु लेत सबु, नारि पापिनी लूटि ॥
नारि पापिनी लूटि विहँसि जब कंठ लगावति ।
परमारथ सुख सुकृत धर्म शुभ कर्म नशावति ॥
जूठ मूत्र मल ख्याइ बुड़ावति ममता सरमें ।
प्रेमलता केहि भाँति लहै कोउ शुभ गति घरमें ॥२२०॥

घर में रहि केहि भाँति नर, करै अखंड सुनेम।
बिच बिच आवत बिघन बहु, देत नशाय सु प्रेम॥
देत नशाय सुप्रेम छेम कहु केहि विधि दरशै।
छण छण अवसर पाय काम क्रोधादिक गरसै॥
कोउ जन्मै कोउ मरै परै कोउ दुखिया ज्वर में।
प्रेमलता तिन्हि माँहिं भजन क्यों निबहै घर में॥२२१॥
घर में रहि कल्याण निज, चाहै सो अज्ञान।
खान पान व्योहार मन, मलिन ग्रस्यो मद मान॥
मलिन ग्रस्यो मद मान बसन तनु मलिमलि धोवै।
विनु विचार भरि उदर साँझ ते सब निशि सोवै॥
भजन करत मन सुखी प्रीति नहिं प्रभु अनुचर में।
प्रेमलता खर स्वान सरिस नर जियहिं सु घर में॥२२२॥
घरते भाजि सु सन्त ढिग, जाइ लीन उपदेश।
रट्यो नाम निर्द्वन्द व्है, ताहि मिलैं सीतेश॥
ताहि मिलैं सीतेश क्लेश हरि ज्ञान प्रकाश्यो।
नाश्यो मोह अँधार परम परमारथ भास्यो॥
भयो कागते हंस बच्यो कालादिक डरते।

प्रेमलता जग पुजैं तजैं जे नाते घर ते ॥ २२३॥
गुरुकी तौ महिमा अधिक, गोबिन्द ते विख्यात।
गोविन्द के किये जीव बहु, घर घर फिरत रिरात॥
घर घर फिरत रिरात उदर भरि पावत नाँहीं।
भोगि विपति भरि जन्म अन्त मरि यमपुर जाँहीं॥
सतगुरु छण में नाशि दुसह दुख बाधा उर की।
प्रेमलता निज रूप करहिं निवछावरि गुरु की ॥२२४॥
जनते कबहुँ न चहत कछु, श्री गुरुदेव उदार।
महाघोर भवसिन्धु ते, करत सु छण में पार॥
करत सु छण में पार बार कछु लागत नाँहीं।
परम अभय करि देत सुखी दोउ लोकनि माँहीं॥
हेतु रहित हित सदा जीवके तन मन धन ते।
प्रेमलता गुरु प्रभुहिं मिलावहिं आखिर जन ते॥ २२५॥
सतगुरु सीताराम प्रभु, अदभुत करत विहार।
सज्जन लखि सुख पावहीं, मोहत मूढ़ गमार॥
मोहत मूढ़ गमार बिमुख जे फिरैं अभागे।
रटहिं न सीताराम मन्दमति भोगनि पागे॥

प्रेमलता बश मोह जीव जग जाल फसे फुर ।
मैं मैं करि सठ मरे लखै किमि लीला सतगुरु ॥२२६॥
सतगुर कृपासु अम्ब के, अङ्क परम सुख पाय ।
प्रेमलता मन मुदित अब, सीताराम सु गाय ॥
सीताराम सु गाय पाय नित सीथ प्रसादी ।
घर घर जाय बलाय सु प्रभु ढिग लहि आजादी ॥
सम सन्तोष दया विवेक गुण निवसहिं मम उर ।
मिलहिं जानकीनाथ दया दृग हेरहु सतगुर ॥२२७॥
सतगुर स्वामी द्रवहिं जो, निज दिशि लखि करुणेश ।
कृपापात्र छण में करैं, दरशावैं सीतेश ॥
दरशावैं सीतेश देश परते पर पावन ।
दम्पति विमल विहार शम्भु हनुमत मन भावन ॥
अष्ट कुंज बशुयाम जहाँ सुख सरसत नव उर ।
प्रेमलता मन रता लखै लीला श्री सतगुर ॥ २२८ ॥
राजा योगी बनिक अरु, रोगी चोर किसान ।
ये षट होयँ जो आलसी, पावैं शोक निदान ॥
पावैं शोक निदान अवसि हित होय सु हानी ।

शिर धुनि धुनि पाछतायँ समय चूके अज्ञानी ॥
सोइ पंडित सोइ चतुर बखत पर करै सु काजा ।
प्रेमलता सोइ लहै सदा सुख सुगति सु राजा ॥२२९॥
बातें करत सु ज्ञानकी, अज्ञानी का कर्म ।
सिखा सूत्र परित्यागि निज, तज्यो सनातन धर्म ॥
तज्यो सनातन धर्म भर्म का मारा धावै ।
पहिरि गेरुआ बसन द्विजनि ते पावँ पुजावै ॥
रटत न श्री सियराम ब्रह्म बनि खैहैं लातें ।
प्रेमलता यमलोक तहाँ नहिं चलिहैं बातें ॥ २३० ॥
साधन श्री सियनाम के, सीता नाम पुनीत ।
रटै कछुक दिन होय तब, सिया नाम में प्रीत ॥
सिया नाम में प्रीत जीत रामैं बश करता ।
सियानाम अति मधुर मनोहर अमर न मरता ॥
रटै सदा सिय सहित राम जो नाम अबाधन ।
प्रेमलता प्रभु रूप लखैं ते जन विन साधन ॥ २३१ ॥
रटना श्री सिय नाम की रामनाम के संग ।
द्वादश वर्ष सनेम कोउ, करै होइ भव भंग ॥

करै होइ भव भंग रंग उर अनुपम दरसै।
अनुभव ज्ञान विचार भक्ति बैराग्य सु सरसै॥
सकल शिद्धि पति होय नशै बहु योनिनि अटना।
प्रेमलता प्रभु मिलै करत सिय नाम सु रटना॥२३२॥
महली श्री सिय नाम यह, महलिनि प्राणाधार।
प्रभु श्री रामहु जपत उर, सिय सिय लखि सुखसार॥
सिय सिय लखि सुखसार रटत जो जन मन लाई।
राम नाम संयुक्त विकैं तिन्हिकर रघुराई॥
पूरण सब मन काम करैं बिनु याँचै पहली।
प्रेमलता गुण खानि जानि सियनाम सुमहली॥२३३॥
जानैं श्री सियनाम की, महिमा राम सुजान।
अकि महली सेवा रसिक परिकर मोद निधान॥
परिकर मोद निधान, जगत जीवन हित जोई।
प्रगटैं कोइ कोइ आय रटैं सियनाम सु सोई॥
देव स्वामि गोस्वामि आदि बहु भाँति बखानैं।
प्रेमलता सिय नाम महातम अज्ञ न जानैं॥ २३४॥
सीता महिजा जानकी वैदेही श्री आद।

अमित नाम अघ ओघ हर भक्तन प्रद अहलाद ॥
भक्तन प्रद अहलाद सिया सब नामनि माँहीं ।
सकल रसन की खानि प्राण प्रिय प्रभु की आँहीं ॥
रामनाम सँग रटत होइ अति बुद्धि विनीता ।
प्रेमलता सियनाम मिलावत राम स सीता ॥ २३५ ॥
सीया सीय सु सिय सिया चार प्रकार समेत ।
रटत राम सँग नाम ये सर्व सिद्धि सुख देत ॥
सर्व सिद्धि सुखदेत हरत दुख दुसह विकारा ।
अनुपम अङ्क यकार सकल मंत्रनि के सारा ॥
सियहिं सिकार मिलाय बसावत जापक हीया ।
प्रेमलता प्रभु प्राण सजीवन नाम सु सीया ॥ २३६ ॥
नारदमुनि सियसन कहेउ, देउ एक बरदान ।
श्री सिय नाम तुम्हार यह, जो मम जीवन प्रान ॥
जो मम जीवन प्रान तोर सब नामन बीचा ।
होय श्रेष्ठ सुखदाय हरन भ्रम भव भय कीचा ॥
रामनाम सँग जपत करै जापक अघ गारद ।
प्रेमलता सिय कहेउ होइ ऐसइ मुनि नारद ॥२३७॥

माला श्री सिय नाम है, सीता नाम सुमेर ।
रामनाम धागा सुभग, कोमल कठिन करेर ॥
कोमल कठिन करेर पोहि यहि भाँति बनाई ।
रसना कर सियराम नाम यह जपै सदाई ॥
गर्जन सीताराम सुमेरू कालहिं काला ।
प्रेमसुलता विशेष जपै सियराम सुमाला ॥ २३८ ॥
रटना धुनि सियराम की, गर्जन सीताराम ।
करहिं करावहिं लहहिं ते, निश्चै प्रभु पर धाम ॥
निश्चै प्रभु पर धाम विघ्न ब्यापै नहिं कोई ।
जन्म मरन दुख नशै पूज्य तिहुँ लोकनि होई ॥
अस विचारि दृढ़ नेम ठानि तजि भ्रम बुधि झटना ।
प्रेमलता सियराम नामकी करि धुनि रटना ॥ २३९ ॥
सी में निवसत शील सुख, सत्य सु शर्म शनेह ।
शोभा श्रुति सन्तोष श्री, सेवा सान्ति सदेह ।
सेवा सान्ति सदेह सुज्ञ समता सहनाई ॥
सिद्धि शक्ति सौन्दर्य सुलभता अरु सधुआई ॥
सकल गुणन की खानि जानि श्री सी निज ही में ।

प्रेमलता करु प्रेम सदा सर्वेश्वरि सी में ॥ २४० ॥
यामें तिमि बहु गुण भरे, यश ऐश्वर्य अपार।
ऐस आदि यज्ञादि फल, यतन अयन यकरार ॥
यतन अयन यकरार एकता जान सु या मा।
मंत्रनि सिधि दातार यकार सु सबगुण धामा ॥
डरपत यम जेहि जपत भेद नहिं कछु 'या' ता' में
प्रेमलता सिय संग सुगमता रटत सु-या' में ॥ २४१ ॥
सीता सीया एक हैं, दो भाखैं सो नीच।
अज्ञानी अन्धा बधिर, अबुध परे भ्रम कीच ॥
अबुध परे भ्रमकीच तजिय तिन्हि अनहित जानी।
सम सीता सिय नाम काम प्रद दोउ सुख खानी ॥
राम नाम सँग रटत सुगम समझो जेहि हीया।
प्रेमलता तेहि रटो सुजन सीता बरु सीया ॥ २४२ ॥
पक्के बनि श्री बैष्णवी, वेष सु धारहु अङ्ग।
रटहु नाम सियराम मुख, करि गुरु सन्तनि सङ्ग ॥
करि गुरु सन्तनि संग गेह बसि बरु गृह त्यागी।
मन क्रम बचन अनन्य होउ सियवर अनुरागी ॥

उभय लोक बनि जाँयँ खाउ फिरि नहिं यम धक्के ।
प्रेमलता प्रभु शरण लेउ यहि बिधि बनि पक्के ॥२४३॥
भाई वैष्णव धर्म सम, धर्म न दूसर आन ।
परम पवित्र प्रतापमय, रच्छक जेहि भगवान ॥
रच्छक जेहि भगवान पाँच रस जेहि महँ पावन ।
दास सख्य बातसल्य सान्ति शृंगार सुहावन ॥
तारक मंत्र अनूप षड़च्छर सब सुखदाई ।
प्रेमलता अस जानि करो गुरु वैष्णव भाई ॥ २४४ ॥
पाँचो रस प्रिय राम के कारण श्री श्रींगार ।
सकल रसन की खानि जो, वैष्णव कुल महँ सार ॥
वैष्णव कुल महँ सार निजातम बोध कराई ।
जीवनि देइँ मिलाइ यथा विधि प्रभु सन भाई ॥
पति पतनी सम्बन्ध यथारथ जिनको साँचो ।
प्रेमलता जेहि माँहिं विराजत प्रिय रस पाँचो ॥२४५॥
आतम रूप अनूपजो, गावत वेद पुरान ।
सो शृंगार सु रस विना, लखि न सकैं विद्वान ॥
लखि न सकैं विद्वान करैं जो सियवर दाया ।

श्री बैष्णव गुरु मिलैं हरैं तब नर मद माया ॥
आतम बोध कराय मिलावैं प्रभु परमातम ।
प्रेमलता सुख लहै परम तब रूप सु आतम ॥ २४६ ॥
नारी रूप सु आतमा, परमातम की शक्ति ।
रिझवति निज स्वामिहिं सदा, करि विधि नाना भक्ति ॥
करि विधि नाना भक्ति धारि जड़ चेतन रूपा ।
प्रभुहिं दिखावति खेल विरचि ब्रह्माण्ड अनूपा ॥
रमैं राम सँग नित्य धाम साकेत मझारी ।
प्रेमलता विख्यात आतमा रूप सु नारी ॥ २४७ ॥
नारी आतम रूप सब, सकल भाव गुण खानि ।
प्रगटत तेहि महँ समय पर, दासादिक रस आनि ॥
दासादिक रस आनि सख्य वातसल्य अनूपा ।
रौद्र सु वीर विभत्स होत कहुँ सान्त सरूपा ॥
सिय सिय पिय अनुकूल परम दोउनि कहँ प्यारी ॥
प्रेमलता प्रभु पुरुष एक सब आतम नारी ॥ २४८ ॥
झीनों आतम रूप अति, लखि न परै इन नैन ।
श्रुति पुरान अनुमान ते, पार कहै किमि बैन ॥

पार कहै किमि बैन करैं प्रभु जेहि पर दाया ।
निरखै सो निज रूप अनूपम आतम अमाया ॥
तजि नरत्व अभिमान पाइ बिज्ञान नवीनों ।
प्रेमलता सखिभाव लहै तव आतम भीनों ॥ २४९ ॥
एकै पुरुष परातपर, राम सच्चिदानन्द ।
अवतारी सर्वज्ञ सुचि, सर्वेश्वर सुखकन्द ॥
सर्वेश्वर सुखकन्द बिश्व सब सियकी माया ।
नारि वर्ग जग जीव चराचर रूप निकाया ॥
सबके पति श्रीराम भजो तिन्हि तजि नर टेकै ।
प्रेमलता श्रुति शास्त्र कहत पर पुरुष सु एकै ॥२५०॥
भक्ती प्यारी रामकी' पटरानी जग जान ।
जीवातम तेहि की सखी, सेवति पद तजि मान ॥
सेवति पद तजि मान नाम सियराम उचारी ।
सिय सियवर रुचि हेरि रचै जग लीला सारी ॥
अनुपम अमित शरीर धरन की जेहि महँ शक्ती ।
प्रेमलता पर पुरुष दीन जिन्हि प्यारी भक्ती ॥२५१॥
रामहिं प्रिय जीवातमा, निज आतमा समान ।

श्री शृंगार सुभाव जेहि, निज स्वरूप बिज्ञान ॥
निज स्वरूप विज्ञान युगल सेवा अधि कारिनि ।
सिय सिय बर रुख पाय रचै जग बहु बपु धारिनि ॥
रमे राम सँग मुदित नित्य साकेत सुधामहिं ।
प्रेमलता तिय रूप आतमा अति प्रिय रामहिं ॥२५२॥
भूषण संयुत तिलक शिर, युगल कंठिका माल ।
पञ्च छाप सखि भावना, युगल मंत्र जनपाल ॥
युगल मंत्र जनपाल नाम सियराम अधारा ।
युगल ध्यान अभिराम मुख्य रस श्री श्रींगारा ॥
सतगुरु सन नव रतन लेइँ जो ये निरदूषन ।
प्रेमलता प्रिय प्रभुहिं होइँ ते वैष्णव भूषण ॥ २५३ ॥
कारण श्री शृंगाररस, कारज सब संसार ।
सुर नर मुनि जहँलगि जिते, अवतारी अवतार ॥
अवतारी अवतार सकल शृंगार बिहीना ।
अशुभ अपुज्य अमान्य अशोभित खिन्न मलीना ॥
मङ्गल मोद निधान राम मूरति भवतारण ।
प्रेमलता शृंगार रसोत्तम सबके कारण ॥ २५४ ॥

त्यागी करिहैं ब्याह कलि, कृषी बनिज व्योहार ।
माँगि माँगि धन बिरचही, बड़े बड़े आगार ॥
बड़े बड़े आगार ग्रही ग्रह हींन दुखारे ।
अन धन विनु बहु फिरैं विचारे मारे मारे ॥
सूद्र करैं द्विज कर्म तपैं धूनी पञ्चागी ।
प्रेमलता द्विज मूर्ख भये निज द्विजता त्यागी ॥२५५॥
राजा कलि महराज नैं, सव की सब मरयाद ।
नाशि चलाई नीति निज, बर्धक बाद विबाद ॥
वर्धक बाद विवाद भलाई निज निज धर्मा ।
का विरक्त का ग्रही तजे सब बर्णा शर्मा ॥
करैं सकल बिपरीति अविधि मन माने काजा ।
प्रेमलता प्रभु विमुख किये कलि रैयत राजा ॥२५६॥
वेदनि घोखैं शूद्रगण, सन्ध्या तर्पन ध्यान ।
करहिं द्विजनि के कर्म सब, उपदेशहिं गुरुज्ञान ॥
उपदेशहिं गुरु ज्ञान विप्र शुभ धर्म नशाये ।
बनिज गुलामी आदि नीच के शीस उठाये ॥
भक्तहिं भक्ता भक्त जरैं जाती ज्वर खेदनि ।

प्रेमलता कलि मूर्ख भयेउ द्विज तजि निज वेदनि २५७

सक्कर घी आटा निमक, तेल पाप मय कीन।
नल कूपन के जलन में, भ्रष्ट मशाला दीन॥
भ्रष्ट मशाला दीन बस्त्र चरबी महँ सानें।
सकल बस्तु अघ मई भई जग लखहु सयाने॥
धर्म कर्म सबकेर नशायेउ कलियुग ठक्कर।
प्रेमलता सियराम काम प्रद भजु घी सक्कर ॥२५८॥

मैली बुधि मन चित भयेउ, खाय मलीन पदार्थ।
गाँजा भाँग तमाल मद मास लखेउ परमार्थ॥
मास लखेउ परमार्थ प्याज लहसुन जप योगा।
भजन सु परतिय भोग झूठ तप जानेउ लोगा॥
कलियुग यह करतूति भूति दशहू दिशि फैली।
प्रेमलता रटु नाम होय शुचि मन बुधि मैली ॥२५९॥

स्वामी झूठे जगत वहु, फिरैं बजावत गाल।
करतब हीन मलीन मन, फसे मोह मद जाल॥
फसे मोह मद जाल सत्य स्वामी सियरामू।
भजत न तिन्हि कहँ मूढ़ जपत शिव जिन्हिकर नामू॥

पछितैहैं शिर पीटि अन्त प्रभु विमुखी बामी।
प्रेमलता अज्ञान बनैं जे झूठे स्वामी ॥ २६० ॥
स्वामी श्री सियराम के, सेवक बनि सुख लेउ।
रटहु नाम सब काम प्रद, मनमुखता तजि देउ ॥
मनमुखता तजि देउ स्वामिता प्रभु की साँची।
जानहु जिनकी कीर्ति अखिल ब्रह्माण्डनि माँची ॥
पायक जेहि हनुमान महा बीरन में नामी।
प्रेमलता भजु तिन्हें कपट तजि लखि जगस्वामी ॥ २६१ ॥
काशी श्री सियराम की, नाम रूप गुण खानि।
स्वामी रामानन्द अरु, तुलसिदास सुखदानि ॥
तुलसिदास सुखदानि आदि आचारज भारी।
प्रगटे बैष्णव धर्म प्रचारक जहँ अवतारी ॥
संकटमोचन आदि देवता जेहि के बासी।
प्रेमलता रटि नाम सदा शिव सेवत काशी ॥ २६१ ॥
गंगा श्री भागीरथी, पूरब पुरी समीप।
बहति सदा उत्तर मुखी, सेवत सुरअवनीप ॥
सेवत सुरअवनीप मनोहर घाट सुहावन।

मज्जहिं जहँ नर नारि मुदित जल पीवहिं पावन ॥
दर्शनीयँ शुचि सकल नहीं कोउ भूखा नंगा ।
प्रेमलता सियराम जपहिं शिव काशी गंगा ॥ २६३ ॥
निन्दा जगमें अति बुरी, सज्जन करो न कोय ।
सुयश सुकृत नाशै सकल, उभय लोक दुख होय ॥
उभय लोक दुख होय सहस सूकर तन धरई ।
चमगादर सौ बार होय पुनि नर्कनि परई ॥
मुर्दा सम पतिहरै निन्दकिहिं लखै न जिन्दा ।
प्रेमलता सियराम रटै तजि जगकी निन्दा ॥ २६४ ॥
हिन्दू हिन्दुस्तान के, तजि निज निज सुभ कर्म ।
द्रव्य प्रतिष्टा हेत सब, होत जात बेधर्म ॥
होत जात बेधर्म रीति पुरिखनि की त्यागी ।
पहिरि कोट पतलून बने बाबू बड़ भागी ॥
भगवत भक्ति बिहीन अन्तमरि होइ हैं जिन्दू ।
प्रेमलता विनु रटे नाम सियराम सु हिन्दू ॥ २६५ ॥
हिन्दू धर्म सनातनी, कंठी तिलक सु छाप ।
पूजा पाठ सु मंत्र जप, राम भक्ति निष्पाप ॥

राम भक्ति निष्पाप त्यागि तेहि बातें थोथीं ।
वकत बृथा हठ ठानि नास्तिकीं पढ़ि बहु पोथीं ।
हृदय विचारहु पूर्व कीर्ति निज निर्मल इन्दू ।
प्रेमलता तेहि असन ग्रहण अब होउ न हिन्दू ।।२६६।।
ज्ञानी जानैं ज्ञान मत, कर्मी कर्महि जान ।
योगी जानैं योग जप, पंडित अर्थ पुरान ।।
पंडित अर्थ पुरान नाम सियरामैं कोई ।
जानत गुरु प्रभु कृपा रटत सर्वस तजि सोई ।।
दृढ़ ब्रत असल अनन्य तिनहुँ महँ कोउ कोउ प्रानी ।
प्रेमलाता रत नाम उपासक आतम ज्ञानी ।। २६७ ।।
जितना श्रम करि पढ़हिं जन, विद्या विविध प्रकार ।
अहंकार की मूल जो, नर्क स्वर्ग दातार ।।
नर्क स्वर्ग दातार बनावै पर आधीना ।
गुण औगुन की खानि रचै परपञ्च नवीना ।।
भजन करत सुख मिलै देइ नहिं विद्या तितना ।।
प्रेमलता पढ़ि लेइ कछुक निज कारज जितना ।। २६८ ।।
कादरता अज्ञानता अरुकुसङ्ग रसभोग ।

मन मुखताई ढीलता, ये षट भारी रोग ।।
ये षट भारी रोग बसैं जिनके उर बीचा ।
ते सियबर से दूर परे भव सागर कीचा ।।
सुरपति सुत इव विकल फिरैं कहुँ लहहिं न आदर ।
प्रेमलाता प्रभु विमुख सहहिं दुख दारुण कादर ।।२६९।।
अब अब करते भजन हित, प्रभु पद वैष्णव होइ ।
षट रुज होन न देत सोइ भगत न बूझत कोइ ।।
भगत न बूझत कोइ गर्भ कर कौल भुलाने ।
युवती धन सुत आदि मोह मद पी बौराने ।।
सुर दुर्लभ नर देह मिलैगी फिर यह कब कब ।
प्रेमलता नहिं सोच भजन हित करते अब अब ।।२७०।।
पूजा गुरु की कीजिये, तन मन धन सब देइ ।
सब देवन के देव लखि, तरो भवहिं पद सेइ ।।
तरो भवहिं पद सेइ जानि गुरु राम सरूपा ।
जिन्हि श्री वैष्णव बेष मंत्रमणि दीन्ह अनूपा ।।
श्री सियराम रटाय हरेउ सब भ्रम भय रूजा ।
प्रेमलता अस समुझि करो नित गुरु की पूजा ।।२७१।।

पूजा दूसरि बर्ष प्रति, गुरुपूनम को होइ।
अपने अपने गुरुनि की, करैं शिष्य सब कोइ॥
करैं शिष्य सब कोइ धूमते गाइ बजाई।
असन बसन धन अर्पि आरती करैं सोहाई॥
कहैं सुनैं गुरु चरित काज तजि तेहि दिन दूजा।
प्रेमलता मिलि सकल करैं सतगुरु की पूजा॥ २७१॥
पूनोदिन गुरुदेवकी, पूजा अति हरखाइ।
सोरह विधि सनमानि के, करैं शिष्य सब आइ॥
करैं शिष्य सब आइ पदारथ विपुल बनाई।
गुरुइ पवाइ प्रसाद वहुरि पावैं सब भाई॥
ग्रही विरक्त सप्रेम परस्पर भाव न ऊनो।
प्रेमलता सब कहैं धन्य यह दिन गुरु पूनो॥२७२॥
मूरति श्री गुरुदेव की, पूजैं नित करि नेम।
साक्षात बा चित्रपट, शिष्यन दोउ पद क्षेम॥
शिष्यन दोउ पद क्षेम नाम सियराम उचारैं।
पाँचो छाप समेत तिलक कंठी दृढ़ धारैं॥
गुरु पद मंत्रनि जपैं भक्ति की इतनी सूरति।

प्रेमलता घटि काम तजै पूजै गुरु मूरति ॥ २७३ ॥
संकर श्री काशी बसैं, भूत सुरनि के संग।
भूत अवैष्णव अशुचि तन, सुर वैष्णव शुचि अंग॥
सुर वैष्णव शुचि अंग रटैं सियराम सु नामा।
राम कथा श्रुति सुनैं कहैं नित प्रद विश्रामा॥
भूत बजावैं गाल करैं वम्वंम्म भयङ्कर।
प्रेमलता लखि हँसैं चरित तिनके श्री सङ्कर ॥ २७४ ॥
तुलसीदासी पंडिता, श्री सिय स्वामिनि केरि।
श्री साकेत निवासिनी, सकल गुणनि की ढेरि॥
सकल गुणनि की ढेरि रटैं सियराम सु नामू।
सोइ सिय आयसु पाय जगत प्रगटी तजि धामू।
रामायण जिन रची कथा भवतारण पुलसी॥
प्रेमलता बिख्यात नाम सोइ दास सु तुलसी ॥२७५॥
मिथिला परिकर्मा ललित, अस न होइ कहुँ अन्त।
जय सियराम सु नाम धुनि, करैं ग्रही अरु सन्त॥
करैं ग्रही अरु सन्त रँगे सब एकै रङ्ग।
जल थल अन अनुकूल चलै प्रभु डोला सङ्ग॥

आधे फागुन उठे हेरि अघ नाशे निथिला ।
प्रेमलता भरि पाख होत परिकर्मा मिथिला ॥ २७६ ॥
कोटिनि योनिनि जनम लै, धारे विपुल शरीर ।
दुख सुख सहे अनेक विधि, बिनु सुमिरे रघुबीर ॥
विनु सुमिरे रघुबीर चेति अबहूँ अन्याई ।
सुर दुर्लभ सुख खानि देह मानुष की पाई ॥
रटि सियराम सु नाम त्यागि चतुराई खोटिनि ।
प्रेमलता जेहि मिटै भरमना योनिनि कोटिनि ॥२७७॥
मिथिला उत्तम धाम में, उभय कूप सरनाम ।
विद्या ज्ञान अनूप ये, दायक सब मन काम ॥
दायक सब मन काम नाम सियराम जो कोऊ ।
रटे खूब तहँ बैठि मिलैं तेहि सिय पिय दोऊ ॥
दरश परस असनान करै सब पापनि सिथिला ।
प्रेसलता सिधि लही सेइ तिनि धाम सु मिथिला ॥२७८॥
गुरुता उर वैराग्य बुधि, ज्ञान विवेक विचार ।
पंडित भाविक भजन दृढ़, भगवत भक्त उदार ॥
भगवत भक्त उदार नाम सियराम सु जापी ।

द्विज शरीर निर्द्वन्द अगेही अभय प्रतापी ॥
अस गुरु वैष्णव पाइ करैं शिषि त्यागि चतुरता ।
प्रेमलता दुख हरै सकल सोइ गुरु सह गुरुता ॥२७९॥
ज्ञानी गुरुआ मनमुखी, बँधे मोह के जाल ।
पढ़ि पढ़ाय पोथी कछुक, अधिक बजावत गाल ॥
अधिक बजावत गाल करैं करनी अति खोटी ।
ग्रही बनें कहुँ सन्त पहिरि भगवाँ तजि चोटी ।
इनते लै उपदेश परैं नर्कनि में प्रानी ॥
प्रेमलता अस जानि तजिय खल गुरुआ ज्ञानी ॥२८०॥
योगी यंगम सेवरा, सन्याशीरु कबीर ।
नानकसाही निर्मला, दादू अपर फकीर ॥
दादू अपर फकीर आश्रमी बर्णी जेते ।
सुपच समाजी यमन जगत मतवादी तेते ॥
रामनाम रटि सकल लहहिं गति मति सु निरोगी ।
प्रेमलता सब ग्रंथ बखानत यंगम योगी ॥ २८१ ॥
वक्ता वाँचैं पोथियाँ, करि करि नाना अर्थ ।
आपु न धारण करत कछु, रटत न नाम समर्थ ॥

रटत न नाम समर्थ सार सब पोथिनि केरे ।
नाशत जन्म सु बादि बृथा बकि बाद अनेरे ॥
श्री सियराम बिहाइ बने भव विषया सक्ता ।
प्रेमलता कलियुगी स्वारथी साधक बक्ता ॥ २८२ ॥
आशा करि संसार की, घर घर मागत भीख ।
सञ्चैं धन बिरचैं सदन, सुनत न उत्तम सीख ॥
सुनत न उत्तम सीख साज साधुन की साजैं ।
भजत न श्री सियराम करत परपञ्च न लाजैं ॥
प्रभु सन्तन की मूढ़ करावत जग उपहासा ।
प्रेमलता तिहुँ काल सहै ते दुख करि आशा ॥२८२॥
मंगन बाढ़े विपुल जग, तजि गृह आश्रम काम ।
रचि रचि नाना ढंग नित, फिरैं बटोरत दाम ॥
फिरैं बटोरत दाम मिलै अन धन केहि भाँती ।
यही बिचारत रहैं अही का यती जमाती ॥
भजन भाव रुजिगार यही इक दूसर रंग न ।
प्रेमलता पर द्रब्य हरैं बनि बनि के मंगन ॥ २८३ ॥
आरज मतबादी विपुल, जानत हिन्दू धर्म ।

ओंकार अरु श्रुतिनि के, भेदी भल गत भर्म ॥
भेदी भल गत भर्म शुद्धि सबकहँ करि लेहीं ।
गायत्री उपवीत यमनि जड़ सुपचनि देहीं ॥
बड़े बड़े ऋषिराज किये नहिं जो जो कारज ।
प्रेमलता सो काम करत सतजतिआ आरज ॥२८४॥
जरिया श्री सियराम जो, सब सारन के सार ।
प्रतिमा पूजा वेष बर, श्री वैष्णवी उदार ॥
श्री वैष्णवी उदार तजेउ आरज मतवादी ।
ऋषि सत शास्त्र पुराण धर्म परिहरेउ अनादी ॥
नये नये सिद्धान्त प्रगट बहु जगबिच करिया ।
प्रेमलता तजि तिन्है भजो सियराम सु जरिया ॥२८५॥
बादी पंडित पंथ मत, ग्रन्थ नये कलिकाल ।
राम भक्ति विमुखी विपुल, प्रगटेउ जग जंजाल ॥
प्रगटेउ जग जंजाल सनातन वैष्णव धर्मू ।
तजि तेहि भाग विहीन निरूपहिं अनरथ पर्मू ॥
विना भजे सियराम काढ़िहैं यमगन लादी ।
प्रेमलता श्रुति शास्त्र कहैं सब पंडित बादी ॥२८६॥

डङ्का बाजै कालकर, शिर ऊपर सब केर ।
हँसे फूले फिरत हौ, मृत्यू आई नेर ॥
मृत्यू आई नेर प्राण घातक दुख दाई ।
करिहैं कोउ न साहि मारि तुम कहँ लैजाई ॥
बचन चहौ तौ रटौ नाम सियराम अशङ्का ।
प्रेमलता प्रभु वेष वैष्णवी लै दै डङ्का ॥ २८७ ॥
गाँधी प्रगट्यो जगत में, खद्दर करन प्रचार ।
जीवन के कल्याण हित, चरखा कीन तयार ॥
चरखा कीन तयार रूपैया मागि घनेरे ।
तन मन धन दै लोग सहै बहु दुखहु करेरे ॥
विना कृपा सियराम बँधी मरयाद न वाँधी ।
प्रेमलता परिणाम हारि बैठेउ घर गाँधी ॥ २८८ ॥
धन के लोभी लालची, निजतन पोषन हार ।
मनके मोदक खाइ जग, चाहत निज विस्तार ॥
चाहत निज विस्तार भजे विनु सिय रघुराई ।
बलकरि पाथर नाव सिन्धु बिच चहत चलाई ॥
परमारथ लगि द्रव्य बटोरैं हित हरि जन के ।

प्रेमलता गढ़गप्प करैं निज लोभी धनके ॥ २८९ ॥
रचि रचि ढोंक ढकोसला, यहि विधि कलियुग लोग ।
नानारूप सु धारि धन ठगि ठगि करिहैं भोग ॥
ठगि ठगि करिहैं भोग बचन परमारथ रूपा ।
कहहिं बनाइ बनाइ भाँति बहु बिपुल अनूपा ॥
प्रभु पद कमल विहाइ मरैं माया हित पचि पचि ।
प्रेमलता दिनराति जीव बहु ढोंग सु रचि रचि ॥ २९० ॥
याँचे विनु धन जो मिलै, सन्त विरक्तन आइ ।
पहिले तौ लेते नहीं, लेइँ तो देइँ उड़ाइ ॥
लेइँ तो देइँ उड़ाइ सञ्चि गथ कबहुँ न धरहीं ।
बीछी व्याल कराल काल सम लखि तेहि डरहीं ॥
माँगि माँगि जो जमा करहिं सो साधक काँचे ।
प्रेमलता प्रभु कृपा लहहिं जन धन विनु याँचे ॥ २९१ ॥
दादू नानक बौध अरु, राधा स्वामि कबीर ।
गोरख पल्टू जैन पुनि, ईशा जग बनि पीर ॥
ईशा जग बनि पीर कलपि निज पन्थ चलाये ।
प्रभु कर वैष्णव धर्म त्यागि तेहि अपनिहिं गाये ॥

दयानन्द कलि रूप देह धरि मिथ्याबादू ।
प्रेमलता प्रगटाय हटायेउ नानक दादू ॥ २६२ ॥
तपिहैं कछुदिन सकल मत, रावण कंश समान ।
खपिहैं एकै बार सब, जिमि निशि ऊगे भान ॥
जिमि निशि ऊगे भान धर्म सब न्यारे न्यारे ।
खिलिहैं कमल अनूप भक्त भ्रम गुंजहिं प्यारे ॥
बढ़िहहिं वैष्णव विपुल सन्त सियराम सु जपि हैं ।
प्रेमलता कलिकाल कछुकदिन नास्तिक तपिहैं ॥२६३॥
बजिहैं डङ्का नामके, आदि मध्य अरु अन्त ।
सजिहैं वैष्णव वेष सब, रक्षक जेहि भगवन्त ॥
रक्षक जेहि भगवन्त मनमुखी मते फतङ्गा ।
भजिहैं भगति बयार लगे सब काम कुसङ्गा ॥
करिहैं वैष्णव सन्त रामधुनि सुनि खल लजिहैं ।
प्रेमलता दिशि दशनि नामके डङ्का बजिहैं ॥ २६४ ॥
फैले जग में आलसी मनमुख गुरुआ भूत ।
निरगुनियाँ प्रभु पद विमुख बकबादी मजबूत ॥
बकबादी मजबूत सनातन धर्म विरोधी ।

कल्पित रचि वहु ग्रन्थ पन्थ प्रगटायेउ सोधी ॥
अन्तरंग बहिरंग आचरण भ्रष्ट कुचैले ।
प्रेमलता कलि रूप कलंकी गुरुआ फैले ॥ २६५ ॥
अन्धे बधिर समान सब, मनमुखियनि के पंथ ।
चढ़त जाँयँ चारिउ बरन, पढ़ि पढ़ि नास्तिक ग्रंथ ॥
पढ़ि पढ़ि नास्तिक ग्रंथ सनातन धर्म विहाई ।
धन हित बेचि सुकर्म बने आरज ईसाई ॥
पुरिखनि के सिद्धान्त सुद्ध तिन्हि करि खल गन्धे ।
प्रेमलता मन मुखी निरूपहिं मारग अन्धे ॥ २६६ ॥
डङ्का श्री हनुमान जब, करिहैं कठिन कराल ।
लङ्का सम रिपु मंडलहिं, फूकेंगे ततकाल ॥
फूँकेगें ततकाल कालकर करि एक फङ्का ।
बाजेंगे तिहुँलोक वैष्णवी निर्भय डङ्का ॥
झंका झंकी करत फिरहिं जहँ तहँ खल कंका ।
प्रेमलता सियराम नामकै सुनि सुनि हंका ॥ २६७ ॥
बाबा आलाराम अरु श्री ज्वालापरसाद ।
विध्वंसक दोऊ प्रबल दयानन्द मतबाद ॥

दयानन्द मतबाद ग्रन्थ[1] षट जिनि निर्मायेउ ।
खेमराज श्री कृष्णदास निज प्रेस छपायेउ ॥
अवलोकहु मगवाय सनातन धर्मी भावा ।
प्रेमलता का लिखेउ उभय पंडित अरु बाबा ॥२९८॥
गुरुआ गर्दभ ग्राम ग्रह, घूमत फिरैं अबोध ।
लोभी लम्पट लालची, निरत काम मद क्रोध ॥
निरत काम मद क्रोध निपुन बातनि में भारी ।
तिन्हिते दिक्षा लेइ गिरें नर्कनि नर नारी ॥
अस विचारि गुरु करो समुझि भव बन्धन तुरुवा ।
प्रेमलता प्रभु भक्त विरत तजि गर्दभ गुरुवा ॥२९९॥
दिक्षा लेइ सु वैष्णवी, राम मंत्र तिलकादि ।
जिन्हिकी महिमा अकथ अति बरणत वेद अनादि ॥
बरणत वेद अनादि त्यागि शिख गुरुअनि केरी ।
सुनत सीख पुनि मूढ़ मन्द मति जन अघ ढेरी ॥

---

१ दयानन्दमत तिमिरि भास्कर २ दयानन्द कपट छल दर्पण ३ दयानन्द मत परिक्षा ४ दयानन्द मिथ्यार्थप्रकाश ५ दयानन्द मत अन्तरगत भगवत उपासना ६ दयानन्द के जीवन चरित्र की समालोचना ।

राम भक्ति विमुखाँय विमुख गुरु करि सुनि शिच्छा ।
प्रेमलता दुख सहहिं वैष्णवी परिहरि दिच्छा ॥३००॥
भरमी गुरुआ भाँड़वत, जग भग धन के दास ।
बनें बके वकवाद वहु, सहत मोह वश त्राश ॥
सहत मोहवश त्राश सीख सुचि सुखद न मानें ।
पापी प्रभु पद विमुख विषय रत फिरें भुलानें ॥
तिन्हि ते बचि गुरु करो सुद्ध वैष्णव मत मरमी ।
प्रेमलता भव तरो त्यागि खल गुरुआ भरमी ॥३०१॥
पापिनि की पहिचान यह, वैष्णव वेष निहारि ।
भूँसे लागत स्वान इव, मूरख छाती फारि ॥
मूरख छाती फारि तिलक तिन्हि भासत काला ।
छाप मनहुँ यम जाल फाँसि सम कंठी माला ॥
प्रभु भक्तनि सुख देखि नाम धुनि सुनि त्रय तापिनि ।
प्रेमलता जरि मरैं भगति भावत नहिं पापिनि ॥३०२॥
पढ़ि पढ़ि उर्दू पारसी, इँगलिस विविध प्रकार ।
नाशेउ हिन्दू धर्म सब, बनि वकील मुख्तार ॥
बनि वकील मुख्तार बिलायत काबुल केरे ।

सीखि लीन आचरन हिंसकी असुचि घनेरे ॥
प्रगट किये प्रभु विमुख पन्थ बहु बाते गढ़ि गढ़ि ।
प्रेमलता मन मुखिनि बिजाती विद्या पढ़ि पढ़ि॥२०३॥
कपटी चेला तस गुरू, राम मिलायेउ मेल ।
बकबादी विमुखी अधम, उभय फसे जगज़ेल ॥
उभय फसे जगजेल सुद्ध सन्तनि ते झगरा ।
करैं मूढ़ हठ ठानि छली बनि पंडित अगरा ॥
चिन्तामणि प्रभु भक्ति त्यागि मति माया लपटी ।
प्रेमलता अघ खानि जानि गुरु चेला कपटी ॥ २०४॥
मनकी कंठी झूठ जिमि, चित्र केर सुर रूख ।
वह न देइ गति वह नहीं, हरत जननि की भूख ॥
हरत जननि की भूख उभय निज धर्म विहीना ।
अस विचारि गुरुमुखी लेत कंठी सु प्रवीना ॥
तिलक छाप दृढ़ धारि करैं, गति मानुष तनकी ।
प्रेमलता रटि नाम त्यागि हठ झूठी मनकी ॥२०५॥
कच्चे प्रानी कहत यह, जिन्हें बिषय की आश ।
मनकी कंठी बाँधि हम, बने भगत प्रभु दास॥

बने भगत प्रभु दास उजागर करि का करना।
मनके मोदक खाय पेट सो चाहैं भरना॥
द्रवत न श्री सियराम भये विनु गुरुमुख सच्चे।
प्रेमलता यह लीक सनातन लखत न कच्चे। ॥३०६॥
कच्चे मनके विपुल जग, खात पियत मद मास।
भगतनि में मिलिजात कहुँ, बनत भगत तहँ खास॥
बनत भगत तहँ खास निरर्थक करि बहु बातें।
सत्य सार सिद्धान्त करत तेहि पर सठ घातें॥
दाम काम के दास बने मन वच क्रम सच्चे।
प्रेमलता सपनेउँ न लहहिं सुख मनके कच्चे ॥३०७॥
पंडा प्रोहित बंश के, दान कुदान जुलेत।
कसर करै जिजमान तौ, कोपि सराफैं देत॥
कोपि सराफैं देत अधर्मी स्वारथ साधक।
ब्रह्म सुकर्म विहीन राम भक्ती के बाधक॥
तिन्हिते लै उपदेश खात जन यम के डंडा।
अस विचारि गुरु करिय भूलि जनि प्रोहित पंडा ३०८
प्रोहित पंडा याचकी, दान मान तिन्हि देउ।

दिक्षा वैष्णव सन्त ते, प्रभु सम्वन्धी लेउ ॥
प्रभु सम्वन्धी लेउ तरौ भव सरिता भारी।
कंठी तिलक सु धारि नाम सियराम उचारी ॥
उभय लोक सुख सुयस सकल विधि चाहहु जोहित।
प्रेमलता तौ करिय भूलि जनि गुरु कुलप्रोहित ॥३०९॥
बकरी भेड़ी की तरह, ग्रही न करत विचार।
गुरुआनि के कर सौंपि शिर, बूड़त भव मझ धार ॥
बूड़त भव मझधार विमुख सियबर सन होई।
मूरख मारे जात सहायक होत न कोई ॥
राम भक्त गुरु विना उबारै को कर पकरी।
प्रेमलता अस जानि बनो जनि भेड़ी बकरी ॥३१०॥
कीना चौपट चार सब, हिन्दू धर्म ललाम।
पढ़ि अँगरेजी पारसी, लगे बटोरन दाम ॥
लगे बटोरन दाम राम सिय कहत लजावैं।
गुड़मौंनीं आदाब नमस्ते सुतनि सिखावैं ॥
खान पान आचरन भयेउ मन बचन मलीना।
प्रेमलता निज धर्म सनातन चौपट कीना ॥ ३११ ॥

मानें को निज धर्म सुर, ब्रह्म बनें सब कोय।
साहब स्वामी बाजते, दास भक्त को होय॥
दास भक्त को होय करैं मूरति को खन्डन।
विमुख आसुरी धर्म निरूपहिं तेहि करि मन्डन॥
जहँ देखौं तहँ गुरू भरे हठ आपन ठानें।
प्रेमलता निज धर्म देवता सुर को मानें ॥३१२॥
चुटिया केवल शीसपर, रहिगइ हिन्दूधर्म।
पढ़ि पढ़ि इँगलिस पारसी, त्यागेउ सब निज कर्म॥
त्यागेउ सब निज कर्म मूँड़ अपने कर फोरैं।
सुद्ध सनातन धर्म, लगावहिं तेहि महँ खोरैं॥
हिन्दू के सन्तान बनें कृश्चन घट फुटिया।
प्रेमलता धन लागि बेचि खाई सो चुटिया॥ ३१३॥
चुटिया धारें शीस यक हिन्दुस्तानी लोग।
काम काज विल्लायती करैं काबुली भोग॥
करैं काबुली भोग योग जप तप व्रत ध्याना।
सैव शाक्त बैष्णवी धर्म निज तजेउ पुराना॥
करहिं पाप दिन राति उदर लगि मिलै न छुटिया।

प्रेमलता केहु भाँति शीसयक धारैं चुटिया ॥३१४॥
पापी पोसैं देह निज, भक्षन करि मद मास।
माँजैं साबुन तेल ते, धर्म कीन्ह सब नाश॥
धर्म कीन्ह सब नाश बाबरी शीस रखाई।
पहिरि कोट पतलून सिखा कुल कानि गमाई॥
राम भक्ति रस हीन भ्रष्ट आचरन प्रलापी।
प्रेमलता मति मलिन देह निज पोसैं पापी॥ ३१५ ॥
पापी बहु प्रगटेउ जगत, राम भगति गुरु हीन।
मनमुख छाँटैं ज्ञान अति, करनी महा मलीन॥
करनी महा मलीन हिंसकी माँस अहारी।
चुरट तमाकू भंग पियें मद अंडा तारी॥
त्यागेउ हिन्दू धर्म सनातन परम प्रतापी।
प्रेमलता प्रद नर्क पन्थ प्रगटेउ बहु पापी॥ ३१६ ॥
झूठे ज्ञानी कलियुगी, कथैं मनमुखी ज्ञान।
सन्त सीख मानैं नहीं, फँसे मोह मद मान॥
फँसे मोह मद मान ध्यान धन धनियँनि केरा।
पापिनि के उर बसत सदा परपञ्च घनेरा॥

बाहिर कहैं बनाय ब्रह्म हमहैं सु अनूठे।
प्रेमलता हठ ठानि कलियुगी ज्ञानी झूठे॥ ३१७॥
दाता जग में धन्य हैं, भगवत भक्त अमान।
सेवत प्रभु गुरु सन्त पद, तन मन धन दै दान॥
तन मन धन दै दान लोक सुख सुयश बड़ाई।
पाय लहहिं परिणाम धाम पर श्री रघुराई॥
सूँम जोरि धन मरैं अन्त अन्तक पुर जाता।
प्रेमलता पछितात तहाँ हम बनैं न दाता॥ ३१८॥
जल्दी चैतो धनिक सब, वैष्णव वेष सुधारि।
रटौ राम सियराम मुख, धन अभिमान बिसारि॥
धन अभिमान बिसारि सन्त गुरु प्रभुहिं रिझाई।
तरहु घोर भवसिन्धु सिघ्र यह नर तनु पाई॥
रगड़ैंगे नतु अन्त कठिन यम गन जिमि हल्दी।
प्रेमलता अस जानि धनिक सब चेतौ जल्दी॥३१९॥
बाना वैष्णव धर्म कर, बरणत श्रुति श्रिंगार।
तेहि बिनु लगत असोभित, नृप ज्यों सभा उघार॥
नृप ज्यों सभा उघार चीन्हि पावै नहिं कोई।

धर्म विपुल संसार खरे खोटे विधि दोई ॥
बेषहि ते पहिचान होइ यह जन भगवाना ।
प्रेमलता अस जानि धारिये वैष्णव बाना ॥ ३२० ॥
नकली असली भगत की, बेषहि ते पहिचान ।
होत बखानत सन्त श्रुति, मानत नहिं अज्ञान ॥
मानत नहिं अज्ञान बेष बिनु प्रभु कहँ ध्यावैं ।
मन मुखिया तेहि लागि परम सुख सान्ति न पावैं ॥
भूँसतही सठ मरैं स्वान इव नर कम अकली ।
प्रेमलता येहि भाँति परखिये असली नकली ॥३२१॥
दारा सुत परिवार धन, तन सुख साज सुगेह ।
नाशमान लखि राम जन, करत न इन्हि सन नेह ॥
करत न इन्हि सन नेह काज निज साधन हेतू ।
मिले रहैं बहिरंग भावते हृदय सचेतू ॥
वैष्णव वेष सुधारि नाम मुख प्रभु को सारा ।
प्रेमलता रटि तरैं घोर भव भक्त उदारा ॥३२२॥
नेही नाते जगत के, भक्तनि अति दुख रूप ।
तिन्हिके प्रेम प्रपञ्च में, नाशत भजन अनूप ॥

नाशत भजन अनूप संग सो जाँयँ न आवैं।
वीचहि मिलि पुनि तजैं ढंग वहु भाँति बनावैं ॥
स्वारथ साधक सकल जरावत निशि दिन देही।
प्रेमलता रटि नाम त्यागि जग नाते नेही ॥ ३२३ ॥
जितना फैलत जगत में, माया मोह पसार।
उतनाही दुख जानि जिय, करत न बहु विस्तार।
करत न बहु विस्तार भक्त जो आतम ज्ञानी।
भजत प्रभुहिं सविचार सीख सतगुरु की मानी ॥
ब्यापत दुख नहिं तिन्हें दुखावै कोउ किन कितना।
प्रेमलता जिन्हि तजेउ जगत फैलावा जितना ॥३२४॥
कारण श्री श्रींगार ते, कारज भे श्रीराम।
तिनते प्रगटेउ अमित रस, मायिक जग गुण ग्राम।
मायिक जग गुण ग्राम लोक त्रय जहँ लगि जोई।
सबके कारण राम मर्म जानैं यह कोई ॥
शृजि पालहिं संहरहिं सोइ करि सियबल धारण।
प्रेमलता श्रृंगार कार्य कारण के कारण ॥ ३२५ ॥
श्रींगारइ के बश सदा, रहत राम सिय दोय।

तेहि रस विनु न उपासना, यह मत जानत कोय ॥
यह मत जानत कोय आन रस बश प्रभु नाहीं ।
नर चरित्र जब करहिं सकल रस तब प्रगटाहीं ॥
रसिकनि को सिद्धान्त मुख्य यह पर्म सु सारइ ।
प्रेमलता सियराम मिलतनहिं विनु श्रींगारइ ॥ ३२६॥

शृङ्गारी प्रभु प्रिय सदा, ज्यों पुरुषहिं बर बाम ।
जुगवत रुख निशि दिन रहत, रसिकनि को सियराम ॥
रसिकनि को सियराम अखिल लोकनि के नायक ।
रहहिं संग बशुयाम करन रच्छा सुखदायक ॥
दास्य सख्य बात्सल्य सान्ति रस अमल बिचारी ।
प्रेमलता प्रिय प्रभुहिं अधिक पै प्रिय शृङ्गारी ॥३२७॥

हठको यहाँ न काम कछु, पच्छपात नहिं टेक ।
कहहिं मुख्य शृङ्गार रस, देखिय ग्रन्थ अनेक ॥
देखिय ग्रन्थ अनेक विमल मन चित करि गुनिये ।
अरु आनन्द सु आदि उभय रामायण सुनिये ॥
पैहौ तब रस भेद खेद सब नशिहै घटको ।
प्रेमलता अति दूरि ज्ञान यह काम न हठ को ॥३२८॥

सीताराम उपासक, जापक नाम उदार ।
रसिक शृङ्गारी सन्त सुचि, अति दुर्लभ संसार ॥
अति दुर्लभ संसार बेषधारी बहुतेरे ।
निज पर रूप न बोध क्रोध मय बकहिं अनेरे ॥
करियन तिन्हि कर संग रंग नाशक प्रद भीता ।
प्रेमलता मन मुदित भजिय नित रघुवर सीता ॥३२९॥
शृङ्गारिनि के उर बसत, निशि दिन श्री सियराम ।
तेहि कारण प्रमुदित रहत, रसिक सन्त बशुयाम ॥
रसिक सन्त बसुयाम नामरस रंग रँगीले ।
हाव भाव गुण भरे खरे आशक नोकीले ॥
सबते अतिप्रिय प्रभुहिं कह्यो मोहि युगल विहारिणि ।
प्रेमलता बश किये उभय जनु जन शृङ्गारिणि ॥३३०॥
रसिकनि की का होड़ कोउ, करिहैं मूढ़ गमार ।
जिनके उर निशि दिन बसत श्री सियराम उदार ॥
श्री सियराम उदार नेति नित जेहि श्रुति गावहिं ।
माया मन गुण पार रसिक तेहि लाड़ लड़ावहिं ॥
प्रेम बिबस प्रभु सदा रहत सन्तनि मन बसिकनि ।

प्रेमलता किमि लखैं अज्ञ यह रस विनु रसिकनि ।।३३१।।
रसकी बातें रसिक जन जानैं कै सियराम।
बिमुखनि कहँ अतिसय अगम उल्लुहिं जिमि रविघाम।।
उल्लुहिं जिमि रविघाम रैनि अँधियारी प्यारी।
लखहिं न नयन विहीन प्रगट नभ यदपि तमारी।।
त्यों रसिकनि गति गूढ़ मूढ़ की मति लखि घसकी।
प्रेमलता अज्ञान बात का जानैं रसकी।। ३३२ ।।
सम्पति रसिकनि की परम, दम्पति श्री सियराम।
लोभी धन ज्यों जुगवहीं, मन बच क्रम बशुयाम।।
मन बच क्रम बशुयाम भोगिता ततसुख केरे।
सदा अपन पौ खोय रहैं पिय प्यारी नेरे।।
निरखहिं युगल विहार बखानत जेहि मति कम्पति।
प्रेमलता अति अगम ठगनि कहँ रसिकनि सम्पति।।३३३।।
सम्बन्धी सियराम कर, रसिक रँगीले सन्त।
दम्पति पद सेवहिं सदा, रटहिं नाम छविवन्त।।
रटहिं नाम छविवन्त अन्त कहुँ चित न डुलावैं।
जो कोउ आवै निकट ताहि सोइ ज्ञान सिखावैं।।

तिनके सम किमि होयँ कबहुँ मूरख बहु धंधी।
प्रेमलता जग पुज्य रसिक जन प्रभु सम्बन्धी ॥३३४॥
पोथी पढ़ि पंडित वने, वाँचत कथा पुरान।
स्वारथरत मति मलिन किमि, लहैं सु रसिकनि ज्ञान॥
लहैं सु रसिकनि ज्ञान शास्त्र चिन्तक बाचाला।
बंचक भक्त कहाय पहिरि गल कंठी माला॥
रसिकनि सङ्ग बिबाद करैं बहु बातें थोथी।
प्रेमलता अति अज्ञ भजन पथ पढ़्यो कुपोथी ॥३३५॥
बाणी विधि शिव शेष श्रुति गणपति सुकबि दिनेश।
रशिकनि के गुण गण विमल बरणहिं सहित रमेश॥
बरणहिं सहित रमेश लेश पै पार न पावहिं।
पंडित पढ़ि ब्याकर्ण तिन्हैं बहु ज्ञान सिखावहिं॥
जिन्हिके बश प्रभु राम धरे धनु सायक पानी।
प्रेमलता सुर सिद्ध भजैं जेहि मन क्रम बानी ॥३३६॥
सङ्गति करिये सुचि सदा, रसिकनि की सुखदाय।
प्रगटै वोध सु विमल उर, द्वैत बुद्धि भ्रम जाय॥
द्वैत बुद्धि भ्रम जाय सहज निज रूप सु पावै।

अनुपम युगल विहार देखि तेहि माँहि समावे ॥
सब रस फीके लगैं चढ़ै नित नूतन रंगति ।
प्रेमलता पर अगम रसिक सन्तन की सङ्गति ॥ ३३७ ॥
रूखे ज्ञानिनि कों अगम, रसिकनि को सतसंग ।
कूटहिं भुस जो अन्नहित, बकबादी वेढंग ॥
बकबादी वेढंग सिखावन सुनैं न पावन ।
वोलहिं बचन सतर्क अर्क इव तेज भयावन ।
प्रेम प्रीति नहिं लेश निलज भोगनि के भूखे ।
प्रेमलता प्रभु विमुख कहावत ज्ञानी रूखे ॥ ३३८ ॥
चेरे माया मोह के, करैं घनेरे बाद ।
घेरे काल स्वभाव गुण, डोलहिं भरे विषाद ॥
डोलहिं भरे विषाद कहहिं हम पढ़े पुराना ।
सुन्यो न देख्यो कहूँ पुरुष कहँ लिख्यो जनाना ॥
तर्क करहिं बहु भाँति रसिक सन्तनि के नेरे ।
प्रेमलता मन मुखी मूढ़ माया के चेरे ॥ ३३९ ॥
साधू रसिक सु सेइये, तजि विमुखनि कर साथ ।
नित नव नेह बढ़ाइ उर, सुमिरिय सियरघुनाथ ॥

सुमिरिय सिय रघुनाथ गुरुनिकी टहल सु कीजै ।
लीजे सुभ सम्बन्ध महल सेवा मन दीजै ॥
ज्ञान ध्यान मत मार्ग विविधि कलि जानि सबाधू ।
प्रेमलता रटु नाम सेउ नित रसिक सु साधू ॥३४० ॥
धनि धनि श्री श्रीङ्गार रस, सकल रसनि सिरताज ।
धनि धनि सीताराम प्रभु, धनि धनि रसिक समाज ॥
धनि धनि रसिक समाज उपासक युगल विलासी ।
धनि धनि मुद्रा वेष मंत्र युग भाव सु दासी ॥
थकित होत ब्रह्मादि वेद रसिकँनि गुण भनि भनि ।
प्रेमलता प्रभु प्रिय सु सन्त श्रीङ्गारी धनि धनि ॥३४१॥

## अथ श्री सरयू षोडसी

सरयू तारण तरण लखि, बरदायक बर दानि ।
सरयू सीकर सम नहीं, तीरथ सकल सु जानि ॥
तीरथ सकल सु जानि खानि मुद मङ्गल केरी ।
रटै नाम बसि तीर बनत नहिं लागै देरी ॥
प्रेमलता सोइ लहै विकै जोइ सतगुरु करजू ।
बैठि सुसीतल छाँह मुदित मन निरखै सरयू ॥३४२॥

सरयू तट रचि सदन बर, करिये सतत निवास।
श्रीसतगुरु पद सेइये, परमानन्द प्रकाश॥
परमानन्द प्रकाश जपिय जिय सिय रघुबीरहिं।
परम कृपाल दयाल नशावैं तन मन पीरहिं॥
प्रेमलता अनयास दरश देहहिं दिल भरजू।
प्रणतपाल महराज बसत पावन तट सरयू॥३४३॥
सरजू तट निवसत सदा, नित नव बढ़त उछाह।
सज्जन जन सुख पावहीं, मिटै मोह मद दाह॥
मिटै मोह मद दाह लहत सद गति बड़ भागी।
सदगुरु सीता राम चरण के जे अनुरागी॥
प्रेमलता सहुलास जपै नित सीता बरजू।
ज्ञान ध्यान दृढ़ होय बसत पावन तट सरजू॥३४४॥
सरयू तट बट बिटप बर, तेहि ढिग सिय वर कुञ्ज।
अकथ अनूप विचित्र अति, शोभा पावन पुञ्ज॥
शोभा पावन पुञ्ज गुञ्जते मधुप सुनाना।
सन्त सङ्ग उत्साह नवल नित कौतुक गाना॥
प्रेमलता मन बचन कर्म कारण ते पर जू।

रटै नाम तजि काम लखै सो बसि तट सरयू ।।३४५।।
सरयू दरशन कीन्ह जो, गई दीनता दूरि ।
भयो पीन पावन परम, लही बड़ाई भूरि ॥
लही बढ़ाई भूरि तीर वर करत निवासा ।
पीवत निर्मल नीर जगत् की त्यागि दुराशा ॥
प्रेमलता सुचि नाम रटत कलिमल अघ हरजू ।
विहरहिं अवध बजार करहिं नित मज्जन सरयू ।।३४६।।
सरजू पूजन जो करत, पूजनीयँ जग होय ।
लोक सुयश परलोक सुख, पावै दुविधा खोय ॥
पावै दुबिधा खोय होय मुद मंगल रासी ।
मन वाँछित फल लहै त्रिविधि भव चिन्ता नाशी ॥
प्रेमलता जेहि सेइ होत नर अभरण भरजू ।
सन्त संग सियराम सुमिरि करु पूजन सरजू ।। ३४७ ।।
सरजू मज्जन कीजिये, पीजे सरजू नीर ।
सरजू नाम उचारिये, बसि श्री सरयू तीर ॥
बसि श्री सरयू तीर संग सन्तन कर कीजे ।
दुर्लभ नर तनु पाय लाभ ताकर कछु लीजे ॥

प्रेमलता मन चेति मूढ़ चित अस हठ धरजू ।
रटि सिय राम सुनाम मज्जि पावन जल सरजू ॥३४८॥
सरजू तट अटिबो भलो, रटिवो श्री सियराम ।
सटिवो सन्त सुसंग सुचि, यहि विधि कटिवो याम ॥
यहि विधि कटिवो याम जगत सों फटिवो नीको ।
दही दूध घृत खीर मलाई चटिवो फीको ॥
प्रेमलता अति प्रबल काल कलि तपत अडर जू ।
रटि रसना बशुयाम नाम वर बसि तट सरजू ॥३४९॥
सरजू पावनि सरित वर, ब्रह्म सुनीराकार ।
बीचि सुसक्ति स्वरूप लखि, शब्द सदन सुख सार ॥
शब्द सदन सुख सार हिलोरें सखी सुजाना ।
भ्रमर तरंग उमंग रहस के साज सुनाना ॥
निरखत विमल सुनयन सन्त मन आनन्द भरजू ।
प्रेमलता तजि जगत सेउ सादर तट सरजू ॥ ३५० ॥
सरजू तीर सु मन हरन, विहरहिं सिय रघुबीर ।
सम सीतल निर्मल मधुर, सुखद नीर गम्भीर ॥
सुखद नीर गम्भीर कमल बहुरङ्ग विकाशे ।

विविध बाटिका वाग घाट मणि जटित विलासे ॥
प्रेमलता अलि सङ्ग पिया प्यारी रघुवरजू ।
करत सुभोग विलास खास प्रमुदित तट सरजू ॥३५१॥
सरजू तट इक कदम तरु, सुन्दर सुखद विशाल ।
खटरितु रहत सु एक रस, तहाँ हिडोल सु घाल ॥
तहाँ हिडोल सुघाल लाल सँग झूलहिं प्यारी ।
साज समाज अनूप युगल छवि की बलिहारी ॥
प्रेमलता सु मलार अली गावहिं मनहरजू ।
दम्पति विमल विहार विलोकहिं प्रमुदित सरजू ३५२
सरजू तट झटपट बिरचि, पर्ण कुटी रटिनाम ।
तजि खटपट नागर नटहिं, भजु सुखेन वसुयाम ॥
भजु सुखेन वशुयाम कामपूरण रघुराई ।
गर्जत कठिन कराल काल भट सीस सदाई ॥
प्रेमलता चट चेत परम दुर्लभ तनु धरजू ।
सट सियराम स्वरूप अनूपम बसु तट सरजू ॥३५३॥
सरजू अम्ब बिलम्ब तजि, देउ सु यह वरदान ।
रटौं नाम तब तीर बसि, सेइ सु गुरुपद त्रान ॥

सेइ सु गुरुपद त्रान लहौं जीवन फल नीके।
निरखौं रहस विलाश परम पावन सिय पीके॥
भटकत बीते विपुल, दिवस सुख हित घर घरजू।
प्रेमलतहि अपनाउ बेगि अब मातु सु सरजू ॥३५४॥
सरयू महिमा कपिन प्रति, निज मुख बरणीराम।
दरश परस मज्जन करत, जीव लहहिं मम धाम॥
जीव लहहिं ममधाम नाम नहिं काय कलेशू।
मानस नन्दिनि नीर पिवहिं बसि जो यह देशू॥
बड़भागीस्वर सकल प्रजनते मम अनुचर जू।
प्रेमलता अस जानि ठानि प्रण बसु तट सरजू ॥३५५॥
सरजू सेवन कीजिये, तजि जीवनि की आश॥
जन्म सुफल करि लीजिये, ह्वै सन्तनि कर दास॥
ह्व सन्तनि कर दास त्रास काहे को सहिये।
रहिये सदा प्रसन्न नाम सियराम सुकहिये॥
लहिये परमानन्द धाम बसि परते पर जू।
प्रेमलता तजि लाज काज बहु बसि तट सरजू ॥३५६॥
सरजू जल पीजे विमल, तजि घृत खोवा खीर।

गुरु पद पङ्कज सेइये, भजिये सिय रघुवीर ॥
भजिये सिय रघुवीर लाभ नर तनु कर लीजै ।
सन्त सीथ सुचि पाय गरीबी चाल गहीजै ॥
कीजैबास स्वतन्त्र मंत्रमणि नाम सु ररजू ।
प्रेमलतानतु बहुरि भूलि परिहौ भवसर जू ॥३५७॥
सरजू खोड़स कुंडली पढ़ै सुनै करि नेम ।
ते सज्जन पावहिं परम मोद सु मंगल छेम ॥
मोद सु मंगल छेम छमा मम चूकहिं करिहैं ।
लखि कलिकाल कराल नाम सियराम सु ररिहैं ॥
तरिहैं विनु श्रम सकल घोर भवनिधि दुस्तर जू ।
प्रेमलता भल मिल्यो आय अनुपम अवसर जू ॥३५८॥
प्यारी सुन्दरि गूदरी, नृप विराग की रानि ।
छत्र सु टोपा शीस पर, रक्षक दोउ सुखदानि ॥
रक्षक दोउ सुखदानि किला सन्तनि कर संगा ।
राज चतुर्दश भुवन कोष रट नाम अभङ्गा ॥
भाव सुवन गुण सैन सुभट चतुरङ्ग अपारी ।
प्रेमअमल तहसील मधुकरी विरति सु प्यारी ॥३५९॥

बाबा बनि मागत फिरैं, सन्तनि के हित धान।
निज तनु पोषैं लाय घर, तिन्हैं बतावैं ज्ञान॥
तिन्हैं बतावैं ज्ञान सन्त जी किरपा कीजै।
चलि फिरि देखो अन्त फेरि कहुँ दर्शन दीजै॥
विविधि भोग सुख करै सदा आपन मन भावा।
प्रेमलता अति अज्ञ विषयरत बञ्चक बाबा॥ ३६० ॥
गादी पर बैठो रहै, बनि महन्थ अज्ञान।
दया धर्म नहिं रञ्च उर, मूढ़ भरो अभिमान॥
मूढ़ भरो अभिमान गाल दुनियाँ सों मारैं।
सन्त दण्डवत करैं तिन्हैं नहि नयन निहारैं॥
भूलेउ गुरु उपदेश रूप निज है बकवादी।
प्रेमलता परलोक लोक तजि बैठ्यो गादी॥ ३६१ ॥
बिरता बाँधी सन्त हित, भोगहिं केवल आप।
आवहिं साधु विरक्त चलि, लखि उपजै परिताप॥
लखि उपजै परिताप मलिन मन कीन रसोई।
जेहि तेहि भाँति पवाय एकदिन वा दिन दोई॥
तीजे दिन कर जोरि आइ गोड़नि पर गिरता।

प्रेमलता नहिं यथा यहाँ है थोरी बिरता ॥ ३६२ ॥
विरता पाय न करहिं जे, सन्तनि कों सनमान ।
ते पापी यमलोक महँ, सहिहैं दुख अज्ञान ॥
सहिहैं दुख अज्ञान महा इन्द्रिनि के पीछे ।
मरिहैं मुसरनि मार तमाचे यम गन तीछे ॥
चलिहैं तहाँ न गाल कबहुँ मन पाव कि थिरता ।
प्रेमलता दुखरूप जहाँ लखु हुइहै विरता ॥ ३६३ ॥
बिरता लहि सेवत नहीं, साधु सन्त हरषाय ।
निज तनु पोषै मोह बश, दया धर्म विसराय ॥
दया धर्म बिसराय कुटुम ते नेह लगावैं ।
साधु सु आवहिं द्वार यतन करि तिन्हैं भगावैं ॥
दाम चामके हेत विकल अति घर घर फिरता ।
प्रेमलता सब भाँति उठायो उदयम बिरता ॥ ३६४ ॥
आवत देखै सन्त कहँ, तन मन होय मलीन ।
जेन केन विधि एक दिन; जस तस भोजन दीन ॥
जस तस भोजन दीन कहावत जग महँ साधू ।
ज्ञान विचार न लेश क्लेश के उदधि अगाधू ॥

भजन भावना हींन पशू सम बयस बितावत।
प्रेमलता सतसंग निकट कहुँ भूलि न आवत ॥३६५॥
चेला गुरु ते आगरे, निज मतलब हुसियार।
बानों बाँधे उदर हित, नहिं कछु धर्म बिचार॥
नहिं कछु धर्म विचार देह जेहि तेहि बिधिपोषै।
गुरु सन करै विरोध दीन दुखियन पर रोषै॥
भक्ति विराग विहीन पाप भरि जन्म सकेला।
प्रेमलता लै गिरै गुरुहिं अस मूरख चेला॥ ३६६॥
चेला अति उत्साह ते, कीन गुरु दै ज्ञान।
भेद भाव बूझे बिना, सौंपि दीन अस्थान॥
सौंपि दीन अस्थान मोह बस गुरु भुलाना।
लग्यो करन उत्पात शिष्य सो मूरख नाना॥
मनमुख सुनै न सीख अधिक विषयनि सँगहेला।
प्रेमलता भरि जन्म जरावत उर सोइ चेला॥ ३६७॥
निज मन मानी करहिं सठ, चेला गुरु प्रतिकूल।
ठानहिं हठ अति दहहिं उर, स्वारथ रत दुख मूल॥
स्वारथरत दुख मूल कपट के मनहुँ कलेवर।

अभिमानी उन्मत्त उदर लगि बागहिं दर दर ।।
गुरु सन बादहिं अज्ञ मोह बश गनहिं न सुर द्विज ।
प्रेमलता निर्लज्ज कहावहिं सियबर जन निज ।।३६८।।
लोगनि ठगि ठगि खावहीं, दूध मलाई खीर ।
विरचि सु वेष पुजायँ तनु, भजहिं न सिय रघुवीर ।।
भजहिं न सिय रघुबीर कबहुँ लय लाय अभागी ।
सन्त संग गुरु विमुख दुखद मति भोगनि पागी ।।
कहि कहि बागहिं सुकृत कीन जो कहुँ संयोगनि ।
प्रेमलता न सुवोध तत्व उन साधू लोगनि ।। ३६९ ।।
छुट्टी मिली न कामते, रटन नाम सियराम ।
कुट्टी करिहैं जगत में, यम किंकर परिनाम ।।
यमकिंकर परिनाम भजे विनु सिय रघुराई ।
करिहैं कोउ न सहायँ मरो जिन्हि हेत कमाई ।।
माया के सब सगे प्रीति तिनके सँग जुट्टी ।
प्रेमलता वर बयस नशी सब मिली न छुट्टी ।।३७०।।
छुट्टी लीजै रटन हित, श्री सियराम सुनाम ।
फुट्टी कौड़ी सरिस यह, जग सुख लखि दुख धाम ।।

जग सुख लखि दुख धाम त्यागि तेहि नर तन केरी ।
लेउ लाभ चित चेति भगति करि करौ न देरी ॥
नतरु अन्त यम लोक होयगी कुट्टा कुट्टी ।
प्रेमलता अस जानि शिघ्र अब लीजै छुट्टी ॥ ३७१॥
खैंनी पीनी सूँघनी, तम्माकू जे लोग ।
ग्रहन करहिं तिन्हि के सकल, व्यर्थ होयँ जप योग ॥
ब्यर्थ होयँ जप योग भ्रष्टतामय तन होई ।
अघ औगुन की खानि हृदय सुभ रहहिं न कोई ॥
बसैं जहाँ तेहि जगहि बनावें नर्क निसैंनो ।
प्रेमलता गोमाँस रूप कलि पीनी खैंनी ॥ ३७२ ॥
देखौ सुगति कपास की, बनत बनत बनि जाय ।
जामादिक बहु रूप धरि, अंग सङ्ग लिपटाय ॥
अंग सङ्ग लिपटाय खष्ट गुरु करि येहि बिधि भल ।
यक तोरै यक ओटि धुनैं यक काति बुने कल ॥
काटि एक पुनि एक सियें यह दृष्टान्त सु लेखौ ।
प्रेमलता निज प्रभुहिं मिलै तिमि जीव सु देखौ ॥३७३॥
जानहु खट गुरु जीव तिमि, करि उतरे भव पार ।

पावै श्री सियराम निज, इष्ट सु देव उदार ॥
इष्ट सुदेव उदार प्रथम गुरु माय बाप पुनि ।
सिच्छक पुनि प्रोहित सु पढ़ावै गुरू ताहि गुनि ॥
राम मंत्र सह भाव देइ सतगुरु तेहि मानहु ।
प्रेमलता प्रभु रूप खष्टमा गुरु जिय जानहु ॥ ३७४ ॥
खष्टम् भक्त बिरक्त गुरु, राम मंत्र प्रद हींन ।
हरत न आवा गमन दुख, पाँचौ गुरू प्रवींन ॥
पाँचौ गुरू प्रवींन बँधे ममता मद जारा ।
स्वारथ साधक सकल करै ते किमि भव पारा ॥
अस विचारि चित चेति करहु जनि आयू नष्टम् ।
प्रेमलता तजि विलम करहु सुचि सतगुरु खष्टम् ॥३७५॥
साधू बनि गृह जाय जो, जन्म भूमि के ग्राम ।
तन सम्वन्धिनि ते करै, प्रेम नेम परणाम ॥
प्रेम नेम परणाम सजाती लखि सिवकाई ।
करै करावै कछुक होय ते स्वान सदाई ॥
सियबर पद विमुखाय गिरै मरि नर्क अगाधू ।
प्रेमलता अस जानि गेह तजि भजि हरि साधू ॥३७६॥

योगी बनि भोगी बनैं, रागी बनि बितराग।
बनि बिरक्त राते रहैं, बिषयनि में हत भाग॥
बिषयनि में हत भाग भजन प्रभु केर बिसारा।
तन सम्वन्धिनिबीच करत अति प्रेम गमारा॥
तेहि कारन मरि मूढ़ होयँ जग कुत्ता रोगी।
प्रेमलता दुख सहहिं भजन विनु भोगी योगी॥३७७॥
जिस्के लायक जो रची, बस्तु विपुल तेहि संग।
होत सबहिं सुखदाय सो, पोषै सब के अंग॥
पोषै सबके अंग निमक जो तस्मइ माँहीं।
छोड़ौ तौ नशि जाय लिख्यो परमानहुँ नाँहीं॥
सक्कर सागनि माँहिं काम आवै कहु किस्के।
प्रेमलता प्रभु भजौ सुझाये सूझै जिस्के॥ ३७८॥
हितकी रचना रचेउ प्रभु, भली बुरी जग बीच।
उत्तम निज निज ठौर सब समुझत नहिं जन नीच॥
समुझत नहिं जन नीच मीच का पालन करता।
विनु बूझे अज्ञान ग्रहन अनुचित करि मरता॥
भूले आतमरूप बात ते किमि प्रभु चितकी।

प्रेमलता गुरु बिमुख लखें निज अनहित हितकी ॥३७९॥
नामी सतगुरु मिलैं जो, प्रभु गति जाननहार।
तिन्हि सों बूझै जगत की रचना सारा सार॥
रचना सारा सार रचेउ प्रभु का केहि हेतू।
अन्तरंग बहिरंग लखहु तेहि होय सचेतू॥
मनमुख गहि गुण दोष भेद बिनु जानें बामी।
प्रेमलता जनि बनों करहु कोउ सतगुरु नामी ॥३८०॥
नारी संगम अति बुरो, नाशै तन कौ सार।
जिमि घुन सूखे काठही, खाय करै बेकार॥
खाय करै बेकार तथा मति विषइनि केरी।
देखतही के पुष्ट अवलता हृदय घनेरी॥
परमारथ पथ हींन सहत नित नाना ख्वारी।
प्रेमलता मति मन्द होत करि संगम नारी ॥३८१॥
नारी बल बुधि वीर्य अरु, ज्ञान विवेक विचार।
शील सत्य गंभीरता, जारि करै सब छार॥
जारि करै सब छार मोह रजु बाँधि नचावै।
भगवत से करि विमुख अन्त यमपुर पहुँचावै॥

अस विचारि तिय त्यागि रटहु सिय राम पुकारी।
प्रेमलता भव सिन्धु तरो बनि पुरुष अनारी ॥३८२॥
लाजहिं लेत सुवेष जन, कंठी तिलकरु छाप।
प्रभु सम्बन्धी सुखद अति, हरन घोर त्रय ताप ॥
हरन घोर त्रय ताप भगति की परम निसानी।
जेहि बिनु भगतनि बीच बैठि नहिं पावत प्रानी ॥
सन्त सभा सनमान लहहिं सजि वैष्णव साजहिं।
प्रेमलता मतिमन्द लेत तेहि वेषहि लाजहिं ॥ ३८३ ॥
रामहिं लागै लाज नहिं, करत जननि के काम।
नाना रूप बनाय प्रभु, हरत शोक सुखधाम ॥
हरत शोक सुखधाम उपाधी सहि दुख टारैं।
कच्छ मच्छ नरशिंह स्वान सूकर तन धारैं ॥
भक्तनि कर हित करैं कृपानिधि तजि निज धामहिं।
प्रेमलता महिभार उतारहिं श्री सियरामहिं ॥ ३८४ ॥
तिन्हिके हित मति मन्द जन, सुन्दर भक्त सरूप।
साजत नहिं अज्ञान जो, सब बिधि सुखद अनूप ॥
सब विधि सुखद अनूप तिलक शिर छाप सुहावन।

कंठी युगल सुकंठ माल तुलसीकी पावन ॥
संसकार शुचि पाँच भगति गति दायक जिन्हिके ।
प्रेमलता हठ ठानि बनें जन विमुखी तिन्हि के ॥३८५॥
जन की करत सम्हार जो, सब विधि प्रभु सुखदाय ।
निज मरियादा त्यागि सब, प्रगटत महि में आय ॥
प्रगटत महिमें आय बिबिधि तन धरि महराजा ।
तिन्हि कर धारत वेष लगत जीवनि कहँलाजा ॥
तेहि लगि भोगत बिपति ठानि हठ झूठी मनकी ।
प्रेमलता सुचि सीख सुनत नहिं श्रुति हरिजन की ॥३८६॥
ऐसे प्रभु कर वेष बर, धारि न ध्यावत ताहि ।
धरि धरि नाना रूप जो, करत जननि की साहि ॥
करत जननि की साहि चहूँ श्रुति शास्त्र पुराना ।
गावत जेहि कर सुयश धरत शिव विधि मुनि ध्याना ॥
तेहि की भगति विहीन तरौगे भव निधि कैसे ।
प्रेमलता हठ छाँड़ि भाँड़पन भजु प्रभु ऐसे ॥ ३८७ ॥
तर्कँ बाद विबाद मय, शंका शंकी भर्म ।
मनमुख हठ परमान बहु सुदिन कुदिन जग सर्म ॥

सुदिन कुदिन जग सर्म विलम तजि वैष्णव वेषा।
लेइ भजो सियराम मिटै जेहि कर्म कुरेषा॥
बैठो भगतनि पाँति सजाती बनि क्यों फर्कैं।
प्रेमलता! जड़ जीव फिरौ करि मनमुख तर्कैं॥ ३८८॥
तर्कीं तर्का करत ही, आयू गई नशाय।
बिना भक्ति सियराम के, परे नर्क महँ जाय॥
परे नर्क महँ जाय बहुरि चौराशी लक्षा।
योनि जन्मि दुख सहहिं करै को प्रभु विनु रक्षा॥
अस विचारि प्रभु भजन रंग रँगि गर्का गर्कीं।
प्रेमलता भवतरो करो जिनि तर्का तर्कीं॥ ३८९॥
जिन्हिकी है यह अतमा, देह सु साज समेत।
पाली पोषी भाँति बहु, सियबर कृपा निकेत॥
सियबर कृपा निकेत जियत जेहि केर जिवाये।
तिन्हिकी लेउ सु शरण फिरौ क्यों जग बौराये॥
प्रभुके भजत न भई बातवहु सुगति सु किन्हि की।
प्रेमलता सुप्रत्यक्ष विराजति कीरति जिन्हिकी॥३९०॥
वेषहि ते वैष्णव बने, सजि अँग वैष्णव साज।

मिलि तब सन्त समाज सँग, सेवै सिय रघुराज ॥
सेवै सिय रघुराज भाव सतगुरु ते पाई ।
नित नव नेह बढ़ाय नाम सियराम सु गाई ॥
यहि बिधि विनु प्रभु दूरि लखौ भगतनि के लेखहि ।
प्रेमलता हठ त्यागि लेउ श्री वैष्णव बेषहि ॥३६१॥
नारी जिमि पातीब्रता, पतिहित अँग शृँगार ।
धारैं रहै अखंड नित सिन्दूरादि लिलार ॥
सिन्दूरादि लिलार चिन्ह सधवनि के जानी ।
विधवनि सो सुख दूरि तथा समुझहु जिय प्रानी ॥
सधवा सम प्रभु भक्त वेष के ते अधिकारी ।
प्रेमलता प्रभु विमुख राँड़ सम जीव अनारी ॥३६२॥
सरमत वैष्णव वेष सुचि, धारन करत गमार ।
डोलत विधवनि सम लिये, सूनों अशुभ लिलार ॥
सूनों अशुभ लिलार एक प्रभु तजि बहु भर्ता ।
किये रिझावत सबहिं दिवस निशि करि अनुचर्ता ॥
सियबर भक्ति विहीन बहुरि चौराशी भरमत ।
प्रेमलता वैष्णवी वेष जो धारत शरमत ॥ ३६३ ॥

जानत सब प्रभु कहहु तुम, उर बाहिर की बात ।
बहिरँग वेष बनाय का, होत अधिक कुशिलता ॥
होत अधिक कुशिलात कथहु जो मन मुख ज्ञाना ।
छिपि छिपि तौ केहि लागि करहु अघ प्रभु ते नाना ॥
शुभ कृत करहु दिखाय बहुरि केहि लागि बखानत ।
प्रेमलता एक वेष लागि कह सब प्रभु जानत ॥३६४॥
पापनि करहिं छिपाय क्यों, शुभ क्यों करहिं बखान ।
गुप्त प्रगट सब लखहिं जो, जग व्यापी भगवान ॥
जग व्यापी भगवान सदा सबकी गति जानैं ।
तेहि सन करैं दुराय पाप लखि अज्ञ अयानैं ।
जानहु जो सर्वज्ञ प्रभुहिं तौ करनी आपनि ।
प्रेमलता केहि लागि दुरावहु प्रगटौ पापनि ॥ ३६५ ॥
छापा तिलक सु कंठि गर, धारन हित कहैं अज्ञ ।
अन्तरंग की लखहिं सब, भगति सु प्रभु सरवज्ञ ॥
भगति सु प्रभु सरवज्ञ बचन यह विमुखनि केरे ।
पाप करत छिपि मूढ़ होय इन्द्रिनि के चेरे ॥
तब न कथत यह ज्ञान तपत केहि लगि त्रय तापा ।

प्रेमलता मरि नर्क जात विनु तिलक सु छापा ॥३६६॥
पालक जो परमातमा, जगतपती जेहि नाम ।
जिन्हिके भजन सुबेष बिनु, जीव जाँयँ यम धाम ॥
जीव जाँयँ यम धाम भजो तिन्हि लखि हितकारी ।
नतरु भोगिहौ विपति कुदेवनि की बनि नारी ॥
प्रभु विनु कोउ न समर्थ विचारहु उर कुल घालक ।
प्रेमलता सियराम रटौ तजि हठ जन पालक ॥३६७॥
पढ़ि २ के तुमका कियो, लखे न सारासार ।
गढ़ि गढ़ि बातें मनमुखी, भजेउ न राम उदार ॥
भजेउ न राम उदार साज वैष्णव की साजी ।
सुर दुर्लभ तनु पाय हाय सठ हारेउ बाजी ॥
पुनि पुनि नीचे गिरौ ऊँच योनिनि महँ चढ़ि चढ़ि ।
प्रेमलता हठ ठानि सहहु दुख पोथिनि पढ़ि पढ़ि ३६८
सीता रघुपति कहँ भजौ, वैष्णव गुरु करि कोय ।
भजनानन्द बिरक्त सुचि, उत्तम वरणी जोय ॥
उत्तम बरनी जोय होय शिषि सेवा कीजै ॥
तन मन धन सरबस्व अरपि तिन्हि के कर दीजै ।

आज्ञा शिर धरि करौ त्यागि निज हठ बिपरीता।
प्रेमलता भवतरौ सहज भजि रघुबर सीता ॥ ३९९ ॥
सीतामढ़ी अनूप अति, श्री सिय जन्म स्थान।
निवसि जहाँ पावहिं सुजन, भक्ति मुक्ति कल्यान ॥
भक्ति मुक्ति कल्यान लछिमना गंग सु बहहीं।
दरश परस जेहि करत अमंगल कोटिनि दहहीं ॥
भयेउ एक परशिद्ध सिद्ध जहँ इन्द्री जीता।
प्रेमलता सुख खानि सकल विधि मढ़ी सुसीता ॥ ४०० ॥
सीतामढ़ी सु धामते, मिथिला द्वादश कोश।
राजत पूरब हरन अघ, दायक सुख संतोष ॥
दायक सुख संतोष भयेउ जहँ राम विवाहू।
घर घर मंगल मोद नवल आनन्द उछाहू ॥
श्री सिय जन्म सु भूमि तथा मिथिला सु पुनीता।
प्रेमलता दोउ सेउ जनकपुर मढ़ी सुसीता ॥ ४०१ ॥
सीता इष्ट उपासना, सीता ज्ञान विचार।
सीता भक्ति सु भावना, सीतापद सुख सार ॥
सीतापद सुख सार परम हित सीता मेरी।

शरणपाल सर्वज्ञ शक्ति सब शक्तिनि केरी ॥
लायक परम कृपाल दुखनि ते करै अभीता ।
प्रेमलता गुण खानि जानि श्री स्वामिनि सीता ॥४०२॥
सीता जप तप योग ब्रत, सीता तीरथ त्याग ।
सीता धर्म सु कर्म सिय, दान ध्यान वैराग ॥
दान ध्यान वैराग परमसुख लाभ सुहाई ।
सम्पति घर पितु मातु सुजन प्रिय परिजन भाई ॥
जाति पाँति परिवार सहायक सुहृद पुनीता ।
प्रेमलतहि अवलम्ब सकल विधि स्वामिनि सीता ॥४०३॥
सीता पूजा पाठ मम, सम दम शरधा धाम ।
सीता श्रवण सु मनन सिय, समाधान विश्राम ॥
समाधान विश्राम धारणा अचल समाधी ।
अहंकार उपराम तितिक्षा बुद्धि अबाधी ॥
भजन विवेक विचार लोक परलोक प्रतीता ।
प्रेमलता बल भाग एक श्री स्वामिनि सीता ॥ ४०४ ॥
सीता क्षमा सुशील शुचि सीता धीरज प्रेम ।
सीता प्रीति प्रतीति गति सीता सुमति सुक्षेम ॥

सीता सुमति सु क्षेम मोद मङ्गल थल सोई।
सीता सर्ब उपास्य देवता अस नहिं कोई॥
विद्या विनय विलाश नम्रता मुद मन चीता।
प्रेमलता नव निद्धि ऋद्धिसिधि विधि सबु सीता॥४०५॥
सीता नेम उछाह ध्रुव, भुक्ति मुक्ति गुरु भूप।
सीता परमानन्द पर, नाम धाम गुण रूप॥
नाम धाम गुण रूप सुकीरति सरल सुहावन।
सर्व सुकृत फल फूल मूल सीता पद पावन॥
सीता नाम अनूप अमीरस सज्जन पीता।
प्रेमलता निशि दिवश रटै मुख नाम सु सीता॥४०६॥
सीता प्राण अधार धन, आश बास विश्वास।
सीता यजन सुतोष प्रण, सीता हर्ष हुलाश॥
सीता हर्ष हुलाश जहाँ लगि सुखद सु जेते।
रहस राग रस रंग संग शुभ सिय जू तेते॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिय अनुभव के मीता।
प्रेमलता सब मोर एक श्री स्वामिनि सीता॥४०७॥
सीता वेद पुराण मत, सीता यामल भाष।

सीता ज्योतिष संहिता, रामायण इतिहास ।।
रामायण इतिहास मनू जो स्मृति बखानी ।
अस्तव नाटक रहस कांड त्रय सिय जिय जानी ।।
सारस्वत व्याकर्ण कौमुदी भगवत गीता ।
प्रेमलता षट शास्त्र न्याय बेदान्त सु सीता ।।४०८।।
सीता रामहिं प्राण प्रिय, सीता राम अधार ।
सीता बिनु तिष्ठे नहीं, राम न नाम उदार ।।
राम न नाम उदार उभय सीता अनुगामी ।
यह मत परम सु गूढ़ लखैं कोउ सन्त अकामी ।।
सिय सेवत बस होत राम भगवान अजीता ।
प्रेमलता अस जानि जपहिं जन नाम सुसीता ।।४०९।।
कञ्चन बन रञ्च न रहै, घोर घाम भव ताप ।
निरबन्धन निबहत जहाँ, सीताराम सु जाप ।।
सीताराम सु जाप उपाधी एकौ नाँही ।
निर्मल सरि सर बाग दिब्य श्री मिथिलामाँहीं ।।
सब विधि सुख की खानि सकल कलिकाल निध्वंसन ।
सियजू जन्म सु भूमि परम पावन बन कञ्चन ।।४१०

पावन को पावन करैं, श्री मिथिला पुर धाम ।
विहरत सीताराम जहँ, प्रण करि आठो याम ॥
प्रण करि आठो याम जपत सिय प्यारी प्यारी ।
परिकर भाइनि सहित रमे प्रीतम ससुरारी ॥
कबहुँक आवहिं अवध जाइ गुरु सैंन सुधावन ।
तुरतहिं लावहिं वोलि दिब्यमिथिला पुर पावन ॥४११॥
मिथिला बासी दिब्य तर, सिय जू के प्रियप्राण ।
रामरूप ताते कहे, विष्णू आदि पुराण ॥
विष्णू आदि पुराण राम सिय प्राण बखानी ।
दोउनि के मन हरें धन्य मिथिला महरानी ॥
सरिता सर बन बाग बिपुल निरखत मन जितिला ।
सब नाते परित्यागि बसें पिय प्यारी मिथिला ॥४१२॥
मिथिला नाम सुधाम के, नाते श्री सियराम ।
अपनैहैं विश्वास दृढ़, मम उर आठो याम ॥
मम उर आठो याम छमहिं अघ औगुन मेरे ।
गुरु प्रद लखि सम्बन्ध राखिहैं प्रभु निज नेरे ॥
दीनबन्धु नतपाल पालिहैं करि दुख शिथिला ।

प्रेमलता यह जानि नामरटि सेइय मिथिला ॥ ४१३ ॥
मिथिला की सरवर नहीं, सप्तपुरी चहुँधाम ।
प्रगट भई जहँ आय सिय, अखिल लोक विश्राम ॥
अखिल लोक विश्राम रामकी प्राण सजीवनि ।
जेहि विनु व्याकुल होत पाय जेहि होत परमधनि ॥
मन बानी गुण पार राम अति अजित सु जितिला ।
प्रेमलता सोइ सीय कीन्ह निज बश श्री मिथिला ॥४१४
मिथिला बसि जग आश तजि, रटु सियराम सु नाम ।
श्री गुरु मूरति राखिउर, मन परि पूरण काम ॥
मन परि पूरण काम राम करुणा सुख सागर ।
मिलिहैं विनहिं प्रयास सीय नाते मति नागर ॥
बीते अमित सु जन्म करत बहु साधन निथिला ।
प्रेमलता चित चेति निवसि अब सियपुर मिथिला ॥४१५॥
सीता जन्म सु भूमि अरु, रघुनन्दन ससुरारि ।
उभय भाँति आनन्द प्रद, मिथिला पुरी विचारि ॥
मिथिला पुरी विचारि युगल उर अतिशय प्यारी ।
परम रम्य मन हरन सुखद महि न्यारी न्यारी ॥

सरिता सर आराम विपुल सब परम पुनीता।
प्रेमलता शुचि सन्त बसहिं बहु सुमिरि सुसीता ।।४१६।।
सीतारामहिं यदपि प्रिय, मिथिला अवध सु धाम।
तदपि मिथिला अधिक प्रिय, दम्पति मन अभिराम ।।
दम्पति मन अभिराम अलौकिक रचना पावन।
मंगलमय सब भाँति भरी ऐश्वर्य सुहावन ।।
कलिमल संशय शोक हरणि प्रद प्रेम प्रतीता।
प्रेमलता अस जानि निवसि नित ध्याउ सुसीता ४१७
सीता रामहिं मिलन जो, चाहै बिनु श्रम कोय।
सो बसि मिथिला मारि मन, रटै नाम दृढ़ होय ।।
रटै नाम दृढ़ होय तजै कुल कानि बड़ाई।
नाना व्रत व्योहार शुभा शुभ गुण चतुराई ।।
गुरु मूरति हिय धारि सदा रस एक अमीता।
प्रेमलता तजि आश सेउ मिथिला रटि सीता ।।४१८।।
कमलादिक शुचि सरित बहु, हरणि घोर त्रय ताप।
सीता सर आदिक अमित, सर सागर निष्पाप।
सरसागर निष्पाप बाटिका बाग सुहावन।

बसहिं लोग धर्मज्ञ जपहिं सियराम सु पावन ॥
ज्ञान विचार विवेक भक्ति उर फुरहिं सु अमला ।
प्रेमलता बसि मुदित सुमिरि सिय मज्जि सु कमला ४१९
जगमें तीरथ धाम जे, अवध समान न एक ।
मिथिला सरिस न अवधसो, जानहिं बिमल बिबेक ॥
जानहिं बिमल विवेक यहाँ नहिं हठ को कामा ।
परब्रह्म श्रीराम भये लखि चकित सुधामा ॥
सिय बिभूति ऐश्वर्य्य अकथ गुण महिमा अगमें ।
प्रेमलता यह रहस गुप्त अति प्रगट न जग में ॥४२०॥
मिथिला तू बड़ भागिनी, कवन पुन्य तप कीन ।
जगत जननि सिय प्रगटि जहँ, विपुल बड़ाई दीन ॥
विपुल बड़ाई दीन कहहिं सुर नर मुनि धनि धनि ।
सकल तीर्थ शुचि धाम पुरिनि की भई शिरोमनि ॥
देश भयो महितिलक निरखि रामहुँ भये सिथिला ।
प्रेमलता त्रैलोक्य पुज्य पावनि तू मिथिला ॥४२१॥
साधू सतयुग ऋषि रहे, त्रेता वानर भालु ।
द्वापर गोपी ग्वाल सोइ, कलि वैष्णव जन पालु ॥

कलि वैष्णव जन पालु भये सियबर अनुरागी ।
तिलक छाप गर माल धारि जग आशा त्यागी ॥
कोउ तापस कोउ रसिक भगत कोउ ग्यान अगाधू ।
प्रेमलता सु अनादि नाम सियराम सु साधू ॥ ४२२ ॥
मिथिला रज जेहि दिन चढ़ै, गगन पवन सँग धाय ।
तेहि दिन हरषहिं अमरपति, अतिहिं निशान बजाय ॥
अतिहिं निशान बजाय परसि धनिभाग बखानहिं ।
पूजहिं मारुत पाँयँ परम धनि तिन्हि कहँ मानहिं ॥
परमानँद उर भयो मनहुँ त्रिपुरासुर जितिला ।
प्रेमलता जय जयति सु रज यह जय श्री मिथिला ॥४२३॥
सियजूव्याह सु पंचमी, अगहन सुक्ल सु पच्छ ।
उत्सव अद्भुत जनकपुर, होत विलोकिय अच्छ ॥
होत विलोकिय अच्छ यच्छ किन्नर नर मुनि सुर ।
शिद्ध नाग गंधर्व बधुनिसह लखहिं आइ फुर ॥
फागुन शुदि भरिपाख होय तिमि आनँद हिय जू ।
प्रेमलता परिक्रमा करहिं सब भजि पिय सिय जू ॥४२४॥
झूलन राम सु नौमि अरु, श्री सिय जन्म उछाह ।

होतसु कहुँ कहुँ ललित अति, लखत नशै उर दाह ।।
लखत नशै उर दाह भूमि मंगल मय पावनि ।
परम रम्य चहुँ ओर सुखद मुनिबर मन भावनि ।।
कुञ्जहिं कोकिल कीर पुञ्ज सर सरति सु कूलन ।
प्रेमलता सुर छकहिं निरखि मिथिला महि भूलन ।।४२५।।
निद्रा पापिनि भजन में, करै विघन बड़ आय ।
बरियाईं चढ़ि जात शिर, धरि कच देति नवाय ।।
धरि कच देति नवाय नयन इंद्रिनि शिथिलावै ।
टोरै सकल शरीर ज्ञान बल बुद्धि नशावै ।।
सब बिधि करि निज वश्य दुरावै आपन छिद्रा ।
प्रेमलता बरजोर घोर अति पापिनि निद्रा ।। ४२६ ।।
सङ्गी आलश झूठ मद, क्रोध दम्भ छल पाप ।
उच्चाटन उन्माद भ्रम, काल कपट कलि ताप ।।
काल कपट कलि ताप अविद्या अभय दलिद्रा ।
चिन्ता क्षुधा अवोध अशुचितामय लखि निद्रा ।।
जीतहिं सन्त सुजान नाम रटि कोउ कोउ जङ्गी ।
प्रेमलता ते लहहिं भजन सुख होइ असङ्गी ।। ४२७ ।।

पापिनि निद्रा करति जब, तनमें आइ प्रवेश।
ज्ञान ध्यान जप योग व्रत, हरि अति देति कलेश॥
हरि अति देति कलेश गिरावति ठौर कुठौरहि।
टपकै मुखते लार दशा करि डारति औरहि॥
व्यापै अँग अँग अमल डसै जिमि कारी साँपिनि।
प्रेमलता प्रभु विमुख करावति निद्रा पापिनि॥४२८॥
टूटै तन ऐंड़ाय अरु, घूमैं झुकि झुकि जाय।
खुलैं केश पट भूषण, खसत विचार नशाय॥
खसत विचार नशाय लाज सब काज विसारै।
जियतहि डारै मारि नींद जब नयन पधारै॥
अनायास विनु यतन शुभाशुभ बन्धन छूटै।
प्रेमलता मैं मोर तोर तैं झगरा टूटै॥४२९॥
भावै कछुइ न पुनि पुनि, बावै मुख वेढंग।
आवै निद्रा नयन जब, होत औरही रंग॥
होत औरही रंग बारुणी पी जिमि विषई।
गिरत फिरत जहँ तहाँ सीख शुचि सुनत न सिखई॥
बकै बाय बरराय देह की दशा भुलावै।

प्रेमलता सनमान गान गुन कछुइ न भावै ॥ ४३० ॥
जीतै निद्रहि शूर सोइ, पहलवान सोइ सन्त ।
रटै नाम सियराम मुख, बैठि असंग इकन्त ॥
बैठि असँग इकन्त दन्त नतु वृथा बजावै ।
भजन करत औंघाय स्वाद सपनेउँ नहिं पावै ॥
सावधानता सहित भजै जो रघुवर सीतै ।
प्रेमलता सोइ तरै घोर भव निद्रहि जीतै ॥ ४३१ ॥
सङ्कटमोचन जनन के, महाबीर बलवान ।
कृपा दृष्टि करि हेरिये, हे प्रभु पूरण काम ॥
हे प्रभु पूरण काम नाम निज नाथ सु दीजै ।
रटवाइय करि छोह छमा अघ अमितनि कीजै ॥
नाशिय नींद बलाय खाय बर भजनहिं वङ्कट ।
प्रेमलता तुम बिना अपर को मोचन सङ्कट ॥ ४३२ ॥
कीजै साहि असाहि लखि, कृपाशिन्धु सियराम ।
सुमिरत नाम तुम्हार प्रभु, घेरत निद्रा बाम ॥
घेरत निद्रा बाम काम कामना बढ़ावै ।
चलै न मम कछु जोर युक्ति नहिं एकौ आवै ॥

तेहि लगि करौं पुकार द्वार परि दादि सु दीजै।
प्रेमलता निज जानि कानि करि साहि सु कीजै ॥४३३॥
राखहुलाज स्वनामकी श्रीसियराम उदार।
रटत न व्यापै बिघन कोउ, यह विनती सुखसार ॥
यह विनती सुखसार पार भवनिधि ते कीजै।
प्रभु आपनि दिशि हेरि फेरि मम शिर कर दीजै ॥
आवै निकट न नींद भजन विच अस मुख भाखौ।
प्रेमलता की विनय वार बहु सुनि उर राखौ ॥४३४॥
मायिक सकल पदारथ, जड़ चेतन संसार।
नालायक साँचे समुझि, अरुझि मरत अविचार ॥
अरुझि मरत अविचार मूढ़ कहि मेरे मेरे।
सहत शोक दोउ लोक मोह बश जीव घनेरे ॥
रटत न श्री सियराम नाम जो सब सुख दायिक।
प्रेमलता चित चेति पदारथ परिहरि मायिक ॥ ४३५ ॥
आया सङ्ग न जाय कछु, यह मायिक परिवार।
बिछुरन मिलन सु बीचही, होत लखत संसार ॥
होत लखत संसार दुखद दोउ मिलन वियोगा।

तदपि न चेतत जीव चहत नित नये नये भोगा ॥
गुरु बिनु भयेउ अचेत आत्म निज रूप भुलाया ।
प्रेमलता हम हमर करै कछु संग न आया ॥ ४३६ ॥
काया आई सङ्ग इक, अतिप्रिय प्राण अधार ।
जेहि के पीछे भयेउ सब, प्रिय गृह धन परिवार ॥
प्रिय गृह धन परिवार साथ तन जाय न सोई ।
तब रोवै केहि लागि यहाँ नहिं तेरा कोई ॥
मानि सु सतगुरु सीख नाम रटु तजि मदमाया ।
प्रेमलता करु चेत पाय सुर दुर्लभ काया ॥ ४३७ ॥
बोलहिं सन्तन खलनि सन, हार होय बरु जीत ।
तिन्हिके संग बिवाद किय, घटै प्रभू ते प्रीति ॥
घटै प्रभू ते प्रीति नीति श्रुति शास्त्र बखानी ।
तजि बिमुखिनि कर सङ्ग रङ्ग लखि निज हितहानी ॥
मुख बाये मतिमन्द स्वान इव वहु जग डोलहिं ।
प्रेमलता पहिचानि खलनि सन सन्त न बोलहिं ॥४३८॥
परखहिं सन्त सु खलनि कहँ, लखियह लक्षण येक ।
सुगुन ब्रह्मकी भगति तजि, छाँटहिं ज्ञान अनेक ॥

छाँटहिं ज्ञान अनेक बाल जिमि फागुन माँही ।
बकैं झकैं मतिमन्द ब्रह्मबनि करनी नाँही ।।
प्रभु भक्तनि पर कष्ट हेरि उर दुर्जन हरषहिं ।
प्रेमलता येहि भांतिखलनि कहँ सन्तसु परखहिं ।।४३९।।
फाटति छाती खलनि की, प्रभु भक्तनि लखि नयन ।
कूकुर इव घुररायँ सठ, सन्तनि पर अघ अयन ।।
सन्तनि पर अघ अयन जरैं उर तीनिहुँ तापा ।
वैष्णव बेष निहारि कंठिका तिलक सु छापा ।।
थर थर काँपत मूढ़ भगति तेहि मानहु काटति ।
प्रेमलता सुनि नाम खलनि की छाती फाटति ।।४४०।।
मुद्दा के सँग कहत सब, सत्य राम को नाम ।
धारन करत न जीव निज, निरत मोह मद काम ।।
निरत मोह मद काम दाम अरु चाम शनेही ।
बने कहत जेहि सत्य भजत नहिं मूरख तेही ।।
दिन २ अरुझत अधिक होत नहिं जग ते जुद्दा ।
प्रेमलता परिणाम अवसि तजिहैं बनि मुद्दा ।।४४१।।
काँधे चढ़ि के चारि के, ठठरी सूति मसान

चलिहौ तब करिहौ कहा, भजन भाव जप दान ॥
भजन भाव जप दान जियत जी जो नहिं करिहौ ।
तौ निश्चै परिणाम घोर नरकनि विच परिहौ ॥
लख चौराशी योनि कर्म रजु फिरिहौ बाँधे ।
प्रेमलता अस जानि भार बहु धरौ न काँधे ॥४४२॥
जितना बोझा शीस पर, धरिहौ उतना क्लेश ।
सहि २ मरिहौ मौति बिनु, रहिहौ भ्रमत हमेश ॥
रहिहौ भ्रमत हमेश राति दिन चैन न पइहौ ।
श्री सियराम सु नाम कामना प्रद कब गइहौ ॥
जिन्हिके बिनु दोउ लोक शोक हर समुझौ हितना ।
प्रेमलता तिन्हि भजौ तजौ लखि दुखसुख जितना ॥४४३॥
जगमें धोखा देत जो, काहुइ कोउ अज्ञान ।
तिन्हि की माटी किरकिरी, होत सहित अपमान ॥
होत सहित अपमान गर्भ विच भजन करारा ।
करि प्रभु सन यह जीव उदर ते निकरि विसारा ॥
ईशहि धोखा दीन कीन जो हित वसि लग में ।
प्रेमलता गति कवन होयगी तिन्हिकी जगमें ॥ ४४४ ॥

इति श्रीसारसिद्धान्त प्रकाश श्री १०८ परम हंस श्रीसियालाल शरणजी
महराज उपनाम 'श्रीप्रेमलताजू' कृत समाप्त ।

बादा बादी करत बहु, सत्य पदार्थनि माँहिं।
क्रोधादिक बश भयेउ सब, शुद्ध बुद्धि उर नाँहिं॥
शुद्ध बुद्धि उर नाँहिं यहै महिमा कलि केरी।
सारासार न बोध पढ़े विद्या बहुतेरी॥
करनी जिमि खद्योत अहं रबि सम शिर लादा।
प्रेमलता गत भजन करैं नित बादी बादा॥ ४४५॥
तरकी जन जग भयेउ बहु, घर की गती भुलान।
परकी मति भोगनि विषैं, छायेउ उर अज्ञान॥
छायेउ उर अज्ञान सत्य कहँ झूठ बखानैं।
को माया प्रभु जीव भेद तेहिकर नहिं जानैं॥
ऐसिनि कर तजि संग भगति कीजै सियबर की।
प्रेमलता दुख रूप जानि जिय जग जन तरकी॥४४६॥
रहिये सज्जन सन्त सब, तरकिनि ते हुसियार।
गहिये श्री सियराम यह, नाम सकल सुख सार॥
नाम सकल सुख सार भाव लै दासी दासा।
रँगिये सियबर भगति त्यागि जड़ जगकी आशा॥
झंझटियनिते बाद ठानि निजउर जनि दहिये।
प्रेमलता मन बचन कर्म प्रभु के होइ रहिये॥ ४४७॥

पक्की पूरी बात यह, जीवातम तिय रूप ।
तेहि कहँ पुरुष बखानहीं, बड़ आश्चर्य अनूप ॥
बड़ आश्चर्य अनूप मुख्य रस श्री शृङ्गारा ।
सियबर मूरति खाश गौंण तेहि कहत गमारा ॥
बिमल विचार बिहीन बुद्धि भोगनि रस छक्की ।
प्रेमलता ते लखहिं जीव किमि बात सु पक्की ॥४४८॥
निन्दा असलिनि की करैं, नकली कलिके लोग ।
पढ़ि सुनि पोथीं मनमुखी, करन लगे जप योग ॥
करन लगे जप योग रसनि के भेद निगूढ़ा ।
रशिक सुगुरु बिनु कबहुँ लखत नहिं जीव विमूढ़ा ॥
रस बिनु मृतक समान जगत रस ज्ञाता जिन्दा ।
प्रेमलता प्रभु भगत करहिं खल तिन्हि की निन्दा ॥४४९॥
सज्जन सन्त विचारि उर, पञ्च रसनि के भेद ।
शृङ्गारादि सु धारि दृढ़ भजहिं प्रभुहिं तजि खेद ॥
भजहिं प्रभुहिं तजि खेद वेद नित जेहि कहँ गावत ।
रस निधान जेहि नाम भक्त रटि तेहि सुख पावत ॥
सियबर भक्ति प्रबाह करहिं नित प्रमुदित मज्जन ।
प्रेमलता तजि दुखद लोक की निन्दा सज्जन ॥४५०॥

जगमें बगरे निन्दकी, तिन्हि ते बचिये भाय ।
आप गये ते आनहीं, घालहिं ज्ञान लगाय ॥
घालहिं ज्ञान लगाय अबुध देहा अभिमानी ।
बकबादी वेढंग बुद्धि भवभोगनि सानी ॥
कामादिक छल कपट भरे जिन्हिके रग रग में ।
प्रेमलता दुख रूप निन्दकी बगरे जग में ॥ ४५१ ॥

दासीरूप सु आतमा, स्वामी श्री सियराम ।
रस शृङ्गार प्रधान शुचि, वैष्णव धर्म ललाम ॥
वैष्णव धर्म ललाम सुदृढ़ सिद्धान्त सु चारो ।
उभयलोक सब भाँति मोद प्रद गुरु सन धारो ॥
निन्दा विघ्न बराय पाइहौ तब गति खासी ।
प्रेमलता अजमाय बात यह कह प्रभु दासी ॥ ४५२ ॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम
नाम प्रचारक श्री वैष्णवधर्म्मावलम्बी
परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरण
जी महाराज उपनाम 'श्रीप्रेमलताजू'
कृत सारसिद्धान्तप्रकाश कुंडलिया
समाप्त शुभम्

# विशेष सूचना

परात्पर प्रभु श्री सीताराम जी महाराज के अनुरागी वड़भागी उपासकनि भाईयों को धोखे बाजों की कपोल कल्पित विघ्नरूप विविधि बारताओं से सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। प्रभु में निष्ठा बड़ी कठिनाई से होती है। उसे नष्ट करने वास्ते आज काल कलिजुगी भाई नाना प्रकारके लेख जथार्थ प्रेम आसय न बूझकर प्रभु भक्ति, भाव, विरोधी रुच्छ ग्यान, अकवार तथा नवीन नवीन नाम धरि धरि चंद्रोदय, सूर्योदय, ताराउदय, आधुनिक किताबों में लिखि लिखि फैलाय रहे हैं। जिन्हि के पढ़ने सुनने से आप लोगों को अवस्य भ्रम होजायगा। अपने इष्ट से, तथा भाव से गिरि जायँगे। जहाँ तहाँ के वे लोग प्रमाण भी दे दिया करते हैं। इस वास्ते खूब सावधान रहो। प्रभु में प्रेम करो, मनुष्य जन्म का लाभ लेउ, प्रभु में

शनेह दास भाव सख्य वात्सल्यादि से पूर्वाचार्य्य करते आये हैं। प्रथम साधन अवस्था में, अन्त में इन्ह सर्वभावों को प्रधान श्री शृङ्गार रसराज में मिलाय पत्नी भाव जथार्थ समेत प्रभु को स्वात्मा समर्पण करि, अंतर रहित महली तथा सर्व प्रकार की सेवा के अधिकारी हो, श्री सीतारामजी के अनुकूल अंगसंगी होते हैं। जीवात्मा का स्वरूप तो सक्ती का प्रसिद्ध ही है। इसको भूलजाने पर ही नानात्व भाव आत्मा में, स्थूल प्रवेस होने से, अग्यानता के चक्र में परि प्रभू से विमुख हो चौरासी लाख जोंनि के कष्ट सहती फिरती है। जाति. विद्या, महत्वादि जड़ नरतादि अभिमानों के वसी भूत होकर। शृङ्गार मूर्ति परम पुरुष एक श्रीरामजी ही हैं। अपर सर्व शृष्टि जीवात्मा श्री अहलादिनी, आदया सक्ती, श्री जानकी जी की विभूति भोगपदार्थ स्त्री रूप हैं। श्रीरामजी इसके भोग्ता पुरुष प्रसिद्ध हैं। यह ग्यान न होने काही नाम अग्यानहै। भूली हुई आत्मा पूर्वोक्त भावों में ही अटकि, उन्हीं का प्रतिपादन करि,

प्रधान ठहराने लग जाती है। पुरुषोहं २ करने लगती है। इसी कारन से प्रभु दासादि, पुरुष भाव वाली भूली आत्मा का पानी ग्रहण नहीं करते। जब आत्मा दुलहिनि बनैगी, तबहीं आत्मनिवेदन, अर्थात् पानी ग्रहन प्रभु साथ होगा। अन्यथा नहीं। संपूर्ण अगस्तादि आचार्य्यों का येही सार सिद्धांत है। विस्वास करने के लिये आर्य ग्रंथपढ़ौ सुनों-एक अपूर्व ग्रंथ श्री सुन्दर मणि संदर्भ-जो कि (श्रीस्वामी मधुरा चार्य जी ने निर्मान किया रहा, उसीको ) श्री १०८ श्री स्वामी श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज ने,सर्ववेद सास्त्र पुरानादिकासारसमुझिप्रकासकिया है। देखने योग्यहै कोसीश करने से बिना मूल्य मिलैगा। पता श्रीसतगु सदन स्थान गोलाघाट श्री अयोध्याजी, श्रीअगस संहिता, लोमस संहिता, कोसलखंड, महारामाय आदिरामायणादि धार्मिक ग्रन्थ बिना प आधुनिक पुस्तकें पत्तापत्त की पढ़नें से अ बोध होना मुशकिल है। उपरोक्त ग्रंथ, लाल लक्ष्मीचंद बुकसेलर, अयोध्याजी, इसपते

मिलैगें। तथा उपासना के संपूर्ण ग्रंथ, अनन्य श्री
ीतारामजी के उपासकों की सेवा सतसंग करि
प्रास होयँगे। उपरोक्त श्रीसुन्दरमणि संदर्भादि संपूर्ण
उपासना के ग्रन्थों के सिद्धांत करि, पूर्ण सुलभ, दोहा,
चौपाइयों, में पदों में, कुण्डलियों में, निर्माण किये ये
न्थ देखौ। व्रहद् उपासना रहस्य, प्रेमलता पदावली,
ह सिद्धांतसार प्रकास, इन्ह ग्रन्थों से अच्छे प्रकार
वात्मादि इष्ट उपासना, श्री शृंगारादि पंच रस भक्ति
ावनादि सर्व का बोध हो जायगा। हे भाई स्थूल
रीरों का नाशमान अग्यानता त्यागि स्वस्वरूप का
ज करि बोध करो। जो तुमने समुझा है, सो तुम
हीं हो। आत्मा का स्वरूप शरीरों से भिन्न है।

दोहा

क रूप है आतमा, तेहिकर पति श्रीराम।
न्ह बिनु कहुँ पावत नहीं, नर बनि सो विश्राम ॥१॥
हिनि बनि मिलि पीव सन, तजि नरता अग्यान।
शृङ्गार उपासना, गावत वेद पुरान ॥ २ ॥

॥ इति ॥ शुभम्

जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम
जय सियाराम जय जय सियाराम

16667/